नालंदा विश्वविद्यालय

वार्षिक प्रतिवेदन 2021–2022

ज्ञान के पारिस्थितिकी-तंत्र का सृजन

"राष्ट्रीय महत्ता का अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय"
राजगीर, जिला-नालंदा, बिहार-803116, भारत

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

(Aa no bhadrah kratavo yantu vishwatah)

(Rig_Veda 1.89.1)

(May Auspicious thoughts come to us from all directions of the world)

रामानुज कांस्य मूर्तिकला, 12वीं शताब्दी, तंजावुर, तमिलनाडू

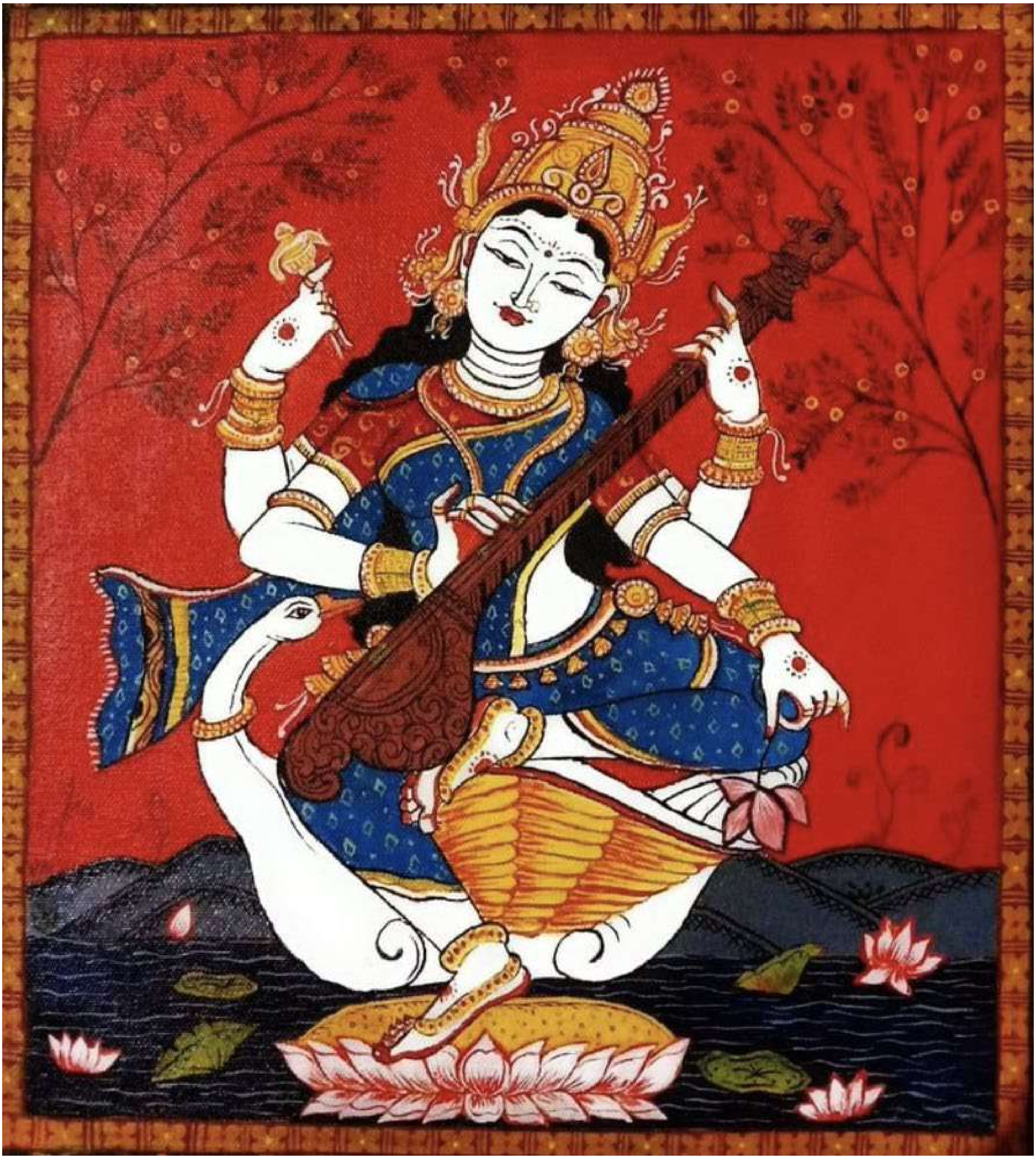

सरस्वती, जिनमें प्रचुर जल, वाणी, ज्ञान विद्‌यमान है, वह “स्वयं” को दैदीप्यमान करने वाला होता है, पत्तचित्र, उड़ीसा

शाक्यमुनि बुद्ध, बोधगया, बिहार

स्वर्ण रंग में चमकता थाई मंदिर, बोधगया

बौद्ध एवं नालंदा के सात महान पंडित। थंगका: महान दलाईलामा का कर्मस्थल

देवपालदेव के ताम्र पट्ट पर प्रसिद्ध नालंदा छाप का उत्कीर्ण, नालंदा, बिहार, 860 ई.पू.

अनुक्रमणिका

क्रमांक		पृष्ठ सं
1.	नालंदा : परिसर का सूक्ष्म-जगत	1
2.	कुलपति महोदया की कलम से	11
3.	अंतर्राष्ट्रीय प्रोफ़ाइल और अधिदेश	14
4.	शासकीय संरचना	17
5.	प्रमुख पहल	20
6.	शैक्षणिक लेआउट	25
7.	विशिष्ट/आगंतुक फैकल्टी	27
8.	शैक्षणिक पाठ्यक्रम	30
9.	बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र एवं तुलनात्मक धर्म विद्यालय	35
10.	पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण अध्ययन विद्यालय	52
11.	इतिहास अध्ययन विद्यालय	71
12.	भाषा और साहित्य / मानविकी विद्यालय	78
13.	प्रबंधन अध्ययन विद्यालय	85
14.	अल्पकालिक अवधि कार्यक्रम	96
15.	वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम	100
16.	सिखने का केंद्र / एआईएनयू	102

17.	**समझौता ज्ञापन / सहयोग**	109
18.	**शोध और प्रकाशन**	110
19.	**छात्र शोध - निबंध और थीसिस**	112
20.	**प्रदान किए गए डिग्री/प्रमाणपत्र/डिप्लोमा**	117
21.	**सम्मेलन और सेमिनार**	131
22.	**अंतर्राष्ट्रीय छात्र**	132
23.	**लिंगानुकूल परिसर**	138
24.	**पुस्तकालय**	139
25.	**सुविधाएँ**	146
26.	**नेट जीरो परिसर निर्माण और अद्धतन**	153
27.	**पुरस्कार, सम्मान और पहचान**	165
28.	**वार्षिक लेखा**	170
29.	**प्रगति पथ पर अग्रसर नालंदा: मीडिया कवरेज**	174

Nālandā
UNIVERSITY

नालंदा : परिसर का सूक्ष्म जगत

प्रशासनिक खंड - विंग-1

एन० यू० परिसर में जल निकाय

परिसर वीथिका

परिसर मार्ग

कमल सागर के निकट विद्यार्थी

भुटान के छात्र 2020 -2022 बैच के साथ कुलपति महोदया

एन० यू० परिसर में कक्षा

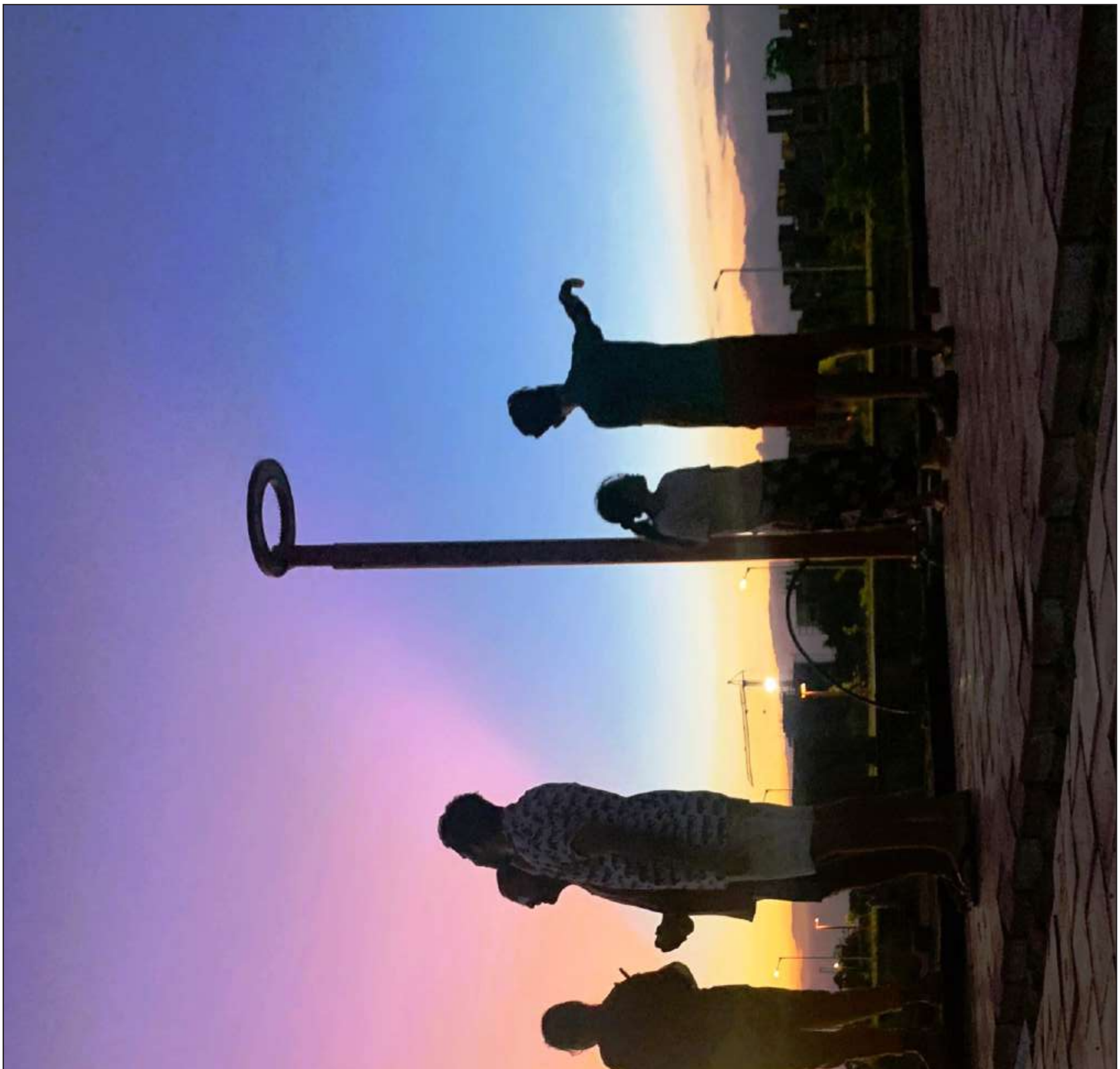

परिसर में छात्र - सायंकालीन दृश्य

एन० यू० परिसर में योग दिवस का आयोजन

कुलपति महोदया की कलम से

हमें सीखने ,आगे बढ़ते रहने और फिर से सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए

"नालंदा विश्वविद्यालय के अधिदेशों में से एक अधिदेश शताब्दी पूर्व की सभ्यतागत ज्ञान प्रणालियों के भंडार की पुन:प्राप्ति करना तथा ज्ञान साधकों की एक नई पीढ़ी का निर्माण करना है, वर्तमान में विश्वविद्यालय ने पार-विषयी तथा अंतर्विषयी पाठ्यक्रमों का सृजन किया है जिससे महत्वपूर्ण समीक्षा प्रचारित होती है जो भविष्य में सांस्कृतिक उत्कृष्टता पर उभरते संवाद को आकार प्रदान करती है। बौद्धिक संसाधनों के संवर्धन से आवश्यक रूप से विश्वबंधुत्व का मार्ग प्रशस्त होगा और एक नए ज्ञान मार्ग के सृजन से एक बेहतर समझ विकसित होगी जो इस संकेत का द्योतक होगी कि किस प्रकार विचार विभिन्न संस्कृतियों के मध्य विचरित करते हैं। "

मुझे इस वर्तमान वार्षिक रिपोर्ट को प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है जिसमें पिछले वर्षों के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। यह 2017 के अपने संस्थानिक उत्थानकाल, जब से मुझे इस संस्थान के नेतृत्व का सौभाग्य प्राप्त हुआ, के एक लघु लेकिन उपयोगी चित्रण की प्रस्तुतिकरण से लेकर एशिया और उसके बाहर फैले अकादमिक नेटवर्क के केंद्र में अपनी अद्वितीय स्थिति को दर्शाता है सत्यनिष्ठा, कल्पना और नवीनता उस नवीनीकरण के प्रमुख उत्प्रेरक रहे हैं जिसका अनुप्रयोग नए नालंदा विश्वविद्यालय के संचालन में किया जा रहा है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य नालंदा की विशिष्ट यात्रा की इन प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना है क्योंकि यह स्वयं को पुन: उद्देशित करता है।

एक विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की एक प्रतिष्ठित परियोजना रही है जो ज्ञान के भंडार की पुन:प्राप्ति के साथ-साथ प्राचीन नालंदा की गौरवशाली ज्ञान परंपराओं को पुनर्जीवित करने के कार्य में संलग्न है। नालंदा के पुनरुत्थान का विचार सबसे पहले भारत के पूर्व माननीय राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा प्रस्तुत किया गया था । इसके कुछ समय बाद पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के सदस्य देश इस ऐतिहासिक विचार को बिना शर्त समर्थन देने के लिए एक साथ आए। बाद में भारत के साथ एक अंतर-सरकारी ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए और विदेश मंत्रालय के तत्वाधान में नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण किया गया। अपने दूसरे अवतार में नालंदा विश्वविद्यालय को संसद के 2010 अधिनियम के द्वारा “राष्ट्रीय महत्व” के एक *अग्रणी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय का* दर्जा दिया गया ।

विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार के संबंध में मेरा दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से हमारे महान पूर्वजों, विश्वगुरु की समृद्ध विरासत पर फोकस करना है । इसकी प्रमुख प्राथमिकता यह भी है कि यह अपने संस्थापना दृष्टि एवं अधिदेश "क्षेत्रीय शांति और दृष्टि के समर्थन" की दिशा में निरंतर अग्रसर रहे (नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010) । इसके अलावा, विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए समान रूप से प्रतिबद्ध है क्योंकि यह सीखने के परिदृश्य में परिवर्तन लाने में एक नए दृष्टिकोण के रूप में अपनी भूमिका निभाता है तथा यह छात्रवृत्ति के नए मॉडल स्थापित करता है। नालंदा इन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा निरंतर प्रयासरत है। इसके साथ ही 21वीं सदी की आवश्यकताओं और चुनौतियों को पूरा करने के लिए भारत को एशिया, पूर्वी एशियाई, बंगाल की खाड़ी और आसियान देशों के साथ न केवल ऐतिहासिक संबंधों के माध्यम से बल्कि उभरते ज्ञान मार्गों के माध्यम से फिर से जोड़ने की एक विशेष आवश्यकता है।

अत: मैंने अपने प्रयासों को कई स्तरों पर निर्देशित किया है यथा- शासन-विधि, अध्यापन-कला और अनुसंधान को एक नया आकार प्रदान करना; एक कैफेटेरिया मॉडल में अनुदेश में अंतर्विषयी दृष्टिकोण को शुरू करना; छह विद्यालयों की स्थापना और 20 से अधिक विश्व स्तर पर प्रासंगिक शैक्षणिक कार्यक्रमों (जिनकी संख्या वर्ष 2017 में मात्र 03 थी) को आगे बढ़ाते हुए विश्व साहित्य तथा हिंदू अध्ययन (सनातन) में परास्नातक पाठ्यक्रम को जोड़ना; चार वर्षीय ग्लोबल पीएचडी, संधारणीय विकास तथा प्रबंधन में एमबीए प्रोग्राम (डिप्लोमा के लिए एक वर्ष के बाद बाहर निकलने का विकल्प) और अनेक अल्पकालिक पाठ्यक्रम शुरू करना; इसके अतिरक्त छात्रों के अतिरिक्त क्रेडिट के लिए क्रेडिट बैंक शुरू करना; पुस्तकालय में ई-संसाधनों को कई गुणा बढ़ाना; राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विद्वानों की एक टीम द्वारा पाठ्यक्रमों का शैक्षणिक ऑडिट; विदेशी शैक्षणिक सहयोग; एक मजबूत अवसंरचना का विकास करना जिसके निर्माण का 95% कार्य पूरा हो चुका है; अपने प्राकृतिक पर्यावरण एवं जलवायु परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बनाते हुए एक पुरस्कार विजेता हरित परिसर के अभियान को तेज करना और वैश्विक स्तर पर सुलभ बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र; संघर्ष समाधान केंद्र; शांति अध्ययन केंद्र और सार्वजनिक अभिलेखीय संसाधन केंद्र के उदघाटन के साथ एक सुलभ अवसंरचना का विकास करना; एक महत्वपूर्ण आउटरीच पहल के अंतर्गत नालंदा विश्वविद्यालय ने अपने शैक्षिक साझेदार इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से नवंबर 2021 में 'कोविड-काल के पश्चात धर्म - धम्म परंपराओं का निर्माण' विषय पर छठे धर्म -धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन एवं मेजबानी की। भारत के उपराष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। मुझे यह बताते हुए भी खुशी हो रही है कि अपनी पहल से हम आसियान और बिम्सटेक छात्रवृत्ति बढ़ा सकते हैं।

यह उल्लेख करना एक उत्कृष्टता का विषय है कि अकादमिक पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने के लिए पिछले वर्ष स्थापित की गई प्रक्रियाओं के अंतर्गत कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों, महत्वपूर्ण प्रायोगिक शिक्षा, केंद्रों, नए संकाय और संशोधित प्रशासनिक प्रणालियों ने प्रतिफल पैदा किया है। इनमें विशेषरूप से महत्वपूर्ण पहलों के अंतर्गत 455 एकड़ के विशाल परिसर में फैले प्राचीन नालंदा महाविहार के योजना सिद्धांतों के साथ संधारणीयता, न्यूनतम अपशिष्ट, कम कार्बन फुटप्रिन्ट और अत्याधुनिक नेट जीरो प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। "नालंदा पथ" मनुष्य का मनुष्य के साथ सद्भाव, मनुष्य का प्रकृति के साथ सद्भाव तथा प्रकृति के एक भाग के

रूप रूप में रहने वाला मनुष्य की संकल्पना को पोषित करता है, यह विश्वविद्यालय 30 से अधिक देशों के विभिन्न समुदाय के विद्यार्थियों तथा अधेयत्ताओं के लिए ज्ञान, बुद्धिमत्ता (प्रज्ञा) तथा सत्य की खोज में 'विद्या-दान' के मार्ग का अनुसरण करता है।

मैं कृतज्ञतापूर्वक उन सभी हितधारकों के समर्थन को स्वीकार करती हूं जिसके बिना नालंदा के पुनर्निर्माण का कार्य पूरा नहीं होता। मैं विश्वविद्यालय को अथक समर्थन देने के लिए भारत सरकार का धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। मैं बिहार के माननीय मुख्यमंत्री, माननीय विदेश मंत्री, विदेश सचिव और संसदीय समिति को भी धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मेरा समर्थन किया और नालंदा के पुनर्निर्माण की चुनौतियों को कम करने में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान किया।

जय हिन्द

प्रो .सुनैना सिंह

अंतर्राष्ट्रीय प्रोफ़ाइल और अधिदेश

विश्वविद्यालय के उद्देश्य

- सदस्य देशों की क्षमता निर्माण की दिशा में प्राचीन विज्ञान (विशेषरूप से नालंदा में कई सदी पहले प्रचलित) दर्शन, भाषा, इतिहास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण उच्च शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करना और अनुसंधान को सक्षम बनाना।
- ईस्ट एशिया के भावी नेतृत्वकर्ताओं को एक साथ लाते हुए क्षेत्रीय शांति और दूरदर्शिता के प्रसार में योगदान प्रदान करना, ताकि वे अपने प्राचीन इतिहास से सम्बद्ध होते हुए एक दूसरे के परिप्रेक्ष्य को समझ सके तथा उस समझ को वैश्विक स्तर पर साझा कर सके;
- शिक्षण, शोध एवं पाठ्यक्रम में शैक्षिक मानकों तथा प्रमाणन मानदंडों को सुसंगत बनाना जो सभी सदस्य राष्ट्र को स्वीकार्य हो;
- शोधार्थियों और सदस्य राष्ट्र के इच्छुक व्यक्तियों के बीच एक विशेष साझेदारी का निर्माण करना;
- समसामयिक प्रसंग में विश्व के किसी अन्य भाग से किसी सोच अथवा व्यवहार को निष्काषित किए बिना बुद्ध के विचार को समझना;
- एशियाई देशों, खासकर पूर्वी एशिया के बीच सशक्त ऐतिहासिक समानताओं द्वारा आबद्ध क्षेत्रों जैसे- व्यापार, विज्ञान, अंकगणित, खगोल-विद्या, धर्म, दर्शन तथा पार-सांस्कृतिक विचारधारा में परस्पर व्यापक सम्पर्क के लिए शोध को संवर्धित करना;
- विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों में सामंजस्य का स्वभाव, समझ विकसित करना तथा इस प्रकार उन्हें लोकतांत्रिक समाज के उत्कृष्ट नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना;
- कुछ शताब्दी पूर्व नालंदा की शिक्षण-व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सदस्य राष्ट्रों की शैक्षिक प्रणाली में संशोधन हेतु योगदान देना;
- सदस्य राष्ट्रों की विभिन्न कला, शिल्प तथा कौशल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रदान करना तथा जनता के लिए उनकी गुणवत्ता में सुधार तथा उपलब्धता को उन्नत बनाना;

विश्वविद्यालय का अधिदेश

नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 (सं 39,2010) को सितम्बर 21,को राष्ट्रपति की स्वीकृति 2010 प्राप्त हुई। यह अधिनियम इस विश्वविद्यालय को न केवल एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित करता है अपितु इसे एक *'राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान'* के रूप में भी अधिकृत करता है, जिसका मुख्य फोकस शांति, सौहार्द तथा संधारणीय विकास का संवर्धन करना है।

नालंदा के पुनरुद्धार की यात्रा की शुरुवात भारत के माननीय पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम के उस उद्घोष से शुरू हुई जिसे उन्होंने वर्ष 2006 में बिहार विधान सभा में प्रस्तुत किया था, उन्होंने कहा था कि एक विश्वगुरु के रूप में नालंदा को इसकी ऐतिहासिक महत्ता को प्रदान करने के लिए इसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। ईस्ट एशिया समिट के सदस्य राष्ट्रों ने भी सामानांतर रूप से एक स्वर में नालंदा की पुनः स्थापना के लिए अभिलाषा व्यक्त कीः

दूसरे ईस्ट एशिया समिट का आयोजन जनवरी 2007 को सेबू शहर फिलीपिंस गणराज्य में हुई 15, इस समिट में शिक्षा तथा क्षेत्रीय समझ को बेहतर बनाने एवं एक दूसरे की विरासत एवं इतिहास की प्रशंसा हेतु बिहार राज्य में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार के लिए ईस्ट एशिया क्षेत्रों के उत्कृष्टता केन्द्रों के उपयोग द्वारा क्षेत्रीय शैक्षिक सहयोग को सुदृढ़ करने की सहमति बनी।

चौथे ईस्ट एशिया समिट का आयोजन 25 अक्टूबर 2009 में हुआ हिन, थाईलैंड में किया गया, जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना को समर्थन प्रदान किया गया तथा ईस्ट एशिया में वर्तमान उत्कृष्टता केंद्र तथा प्रस्तावित नालंदा विश्वविद्यालय के बीच क्षेत्रीय नेटवर्किंग (सम्पर्क) तथा सहयोग हेतु प्रोत्साहित किया गया

ताकि ज्ञान के एक ऐसे समुदाय का निर्माण किया जा सके जहां विद्यार्थी, अध्येत्ता, शोधार्थी , शिक्षाविद एक साथ कार्य कर सकें तथा उस अध्यात्म के प्रतीक को प्रस्तुत करें जो पूरी मानवता में एकता को प्रदर्शित करे। (नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 की प्रस्तावना)

भारत सरकार ने भारतीय संसद के एक अधिनियम के द्वारा विदेश मंत्रालय भारत सरकार के अधीन नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की उसे एक अंतर्राष्ट्रीय अधिदेश प्रदान किया: ईस्ट एशिया समिट के प्रतिभागी राष्ट्र जिन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के समर्थन में अंतर-शासकीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए का विवरण इस प्रकार है:

भारत आस्ट्रेलिया बांग्लादेश भूटान ब्रुनई दारुस्सलाम कम्बोडिया चीन इन्डोनेशिया लाओस-पीडीआर मॉरीशस म्यांमार न्यूजीलैंड दक्षिण कोरिया थाईलैंड पुर्तगाल वियतनाम सिंगापुर

शासकीय संरचना

कुलाधिपति
डॉ. विजय भाटकर

कुलाध्यक्ष
माननीय राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

कुलपति
प्रो. सुनैना सिंह

विश्वविद्यालय के सांविधिक निकाय

- शासी मण्डल
- कार्यकारी समिति
- वित्त समिति
- शैक्षिक परिषद

प्रबंध मंडल

कुलाधिपति	अध्यक्ष: पदेन
कुलपति	सदस्य: पदेन
सदस्य देशों के पांच सदस्य	सदस्य
केंद्र सरकार द्वारा नामित एक सदस्य जो विदेश मंत्रालय में सचिव के पद से अधीनस्थ न हो	सदस्य सचिव
बिहार सरकार द्वारा नामित बिहार सरकार के दो प्रतिनिधि	सदस्य
केंद्र सरकार द्वारा नामित एक सदस्य जो एमएचआरडी में अपर सचिव के रैंक से अधीनस्थ न हो	सदस्य
केंद्र सरकार द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षाविद अथवा विद्वतजन के बीच से नामित तीन सदस्य	सदस्य

प्रबंध मंडल की कार्यकारी समिति*

कुलाधिपति	अध्यक्ष: पदेन
कुलपति	सदस्य: पदेन
सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य: पदेन
प्रबंध मंडल के सदस्यों में से नामित तीन सदस्य	सदस्य

**प्रबंध मंडल का पुनर्गठन प्रगति पर*

वित्त समिति

कुलपति	अध्यक्ष: पदेन
कुलाधिपति के दो नामित सदस्य	सदस्य
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार का एक नामित सदस्य	सदस्य
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार का एक नामित सदस्य	सदस्य
कुलाधिपति द्वारा नामित रोटेशन (बदलते क्रम के आधार पर) द्वारा विद्यालयों के डीन	सदस्य
वित्त अधिकारी	सदस्य सचिव

शैक्षिक परिषद

कुलपति	अध्यक्ष
कुलपति की संस्तुति पर शैक्षिक परिषद् सात विशेषज्ञ (जो विश्वविद्यालय अथवा इसके द्वारा मान्यता प्राप्त कोई संस्थान का कार्मिक न हो) सदस्य बनाए जाते हैं	विशेषज्ञ सदस्य
कुलाधिपति द्वारा नामित विद्यालयों/संकायों के डीन	सदस्य
पुस्तकालय अध्यक्ष	सदस्य
निदेशक (दाखिला) अथवा कुलाधिपति द्वारा नामित सदस्य	विशिष्ट अतिथि
रजिस्ट्रार	सदस्य सचिव

प्रमुख पहल

नालंदा विश्वविद्यालय ने पिछले पांच वर्षों के दौरान अभूतपूर्व प्रगति दर्ज की है। शैक्षणिक वर्ष 2021-22 उस निरंतर विकास का एक भाग था, और यह कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के कुशल नेतृत्व में शुरू की गई नई पहलों और गतिविधियों की संख्या और पैमाने में उल्लेखनीय प्रगति दर्शाने के लिए महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित रिपोर्ट (अगस्त 2021से जुलाई 2022 तक) नालंदा विश्वविद्यालय की दृष्टि और यात्रा, विशिष्ट उपलब्धि और भविष्य की प्रमुख योजनाओं पर प्रकाश डालती है। यह प्राचीन काल के इस वृहद बौद्धिक स्थल के एक वर्ष के विशिष्ट उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है।

क. नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम-2010 के अनुसार वैधानिक नीति दस्तावेजों का निर्माण और अधिसूचना

1. **विधान:** विधि एवं न्याय मंत्रालय तथा विदेश मंत्रालय, भारत सरकार की सहमति, सांविधिक अनुमोदन के साथ तथा अधिनियम के अनुपालन में अनेक विधानों की पहल की गई है, जिसे भारत के माननीय राष्ट्रपति के सम्मुख सत्यापन हेतु प्रस्तुत किया गया है। इन विधानों के अंतर्गत अनेक महत्वपूर्ण उन अवयवों को शामिल किया गया है जो 2015 के विधानों शामिल नहीं थे अथवा जिनमें संशोधन की आवश्यकता थी। यह साझा करते हर्ष की अनुभूति हो रही है कि पीपीई प्रभाग एमईए के सक्रिय सहयोग से भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा हमारे आगंतुक के रूप में इन विधानों को सत्यापित किया जा चुका है।

2. **शैक्षिक अध्यादेश:** अंतर्राष्ट्रीय संरचना के अनुरूप एक विस्तृत अध्यादेश तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत विद्यालय एवं केंद्र; मूल्यांकन; क्रेडिट/ग्रेड; दाखिला प्रक्रिया; अहर्ता; कैफेटेरिया मॉडल; शिक्षण कैलेंडर; छात्रवृत्ति; ग्लोबल पीएचडी तथा पोस्ट डॉक्टरल छात्रवृत्ति इत्यादि इत्यादि समेत शैक्षिक संरचना के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। शैक्षिक अध्यादेश वर्ष 2018 में संवैधानिक अनुमोदन तथा विदेश मामले मंत्रालय तथा विधि एवं न्याय मंत्रालय भारत सरकार की सहमति के साथ तैयार किया गया था। शैक्षिक अध्यादेश को 2021 में एक राजपत्र अधिसूचना द्वारा प्रकाशित किया गया।

ब. ज्ञान के नए मार्गों का निर्माण

नए पाठ्यक्रम (2021-2022)

1. विश्व साहित्य में स्नातकोत्तर
2. हिंदू अध्ययन (सनातन) में स्नातकोत्तर
3. अल्पकालिक कार्यक्रम:

   भाषाएँ - अंग्रेजी, संस्कृत, तिब्बती, पाली, कोरियाई, नालंदा विरासत, बंगाल की खाड़ी: एक परिचय, नवाचार और नेतृत्व, चैतन्यता अध्ययन।

 अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में नए अंतर्विषयी/बहुआयामी पाठ्यक्रम शुरू किए गए।

 प्रबंध अध्ययन विद्यालय में संधारणीय विकास एवं प्रबंधन में एमबीए के पहले बैच (2020-22 का बैच) के छात्रों ने भारत और विदेशों के संगठन/संस्थानों में 100% प्लेसमेंट प्राप्त किया। संधारणीय विकास एवं प्रबंधन में एमबीए पाठ्यक्रम सत्र 2020-22 (कोविड-19 महामारी के बड़े पैमाने पर फैलने के दौरान) से शुरू किया था।

 पुस्तकालय में ई-संसाधनों का संवर्धन

 अंतरराष्ट्रीय फेलोशिप/स्कॉलरशिप के निर्माण के लिए कुलपति की पहल के कारण निम्नांकित प्रगति हुई :

- विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा परास्नातक एवं वैश्विक पीएच.डी के लिए आसियान फेलोशिप (आसियान सदस्य देशों के छात्रों के लिए) 2021-22 में 20 से बढ़ाकर 50 की गई।
- विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा परास्नातक एवं वैश्विक पीएचडी के लिए बिम्सटेक छात्रवृत्ति (बिम्सटेक देशों के छात्रों के लिए) 2021-22 में 12 से बढ़ाकर 25 की गई।
- संयुक्त गणराज्य तंजानिया के मानद राजदूत द्वारा 2021-22 में स्थापित प्रो. सुनैना सिंह मेरिट छात्रवृत्ति (ट्यूशन शुल्क छूट)।

 विश्वविद्यालय में फील्ड ट्रिप और प्रायोगिक अनुभव पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। मानविकी, भाषा, कंप्यूटर, जीआईएस और पर्यावरण आदि प्रयोगशालाओं में कई उन्नत उपकरण स्थापित किए गए। विद्यार्थियों द्वारा किए गए क्षेत्र-भ्रमण में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई।

 शैक्षिक परिषद, और भारत तथा विदेशों के अन्य प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से शैक्षिक ऑडिट का निष्पादन किया गया। विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय अधिदेश के अनुरूप पाठ्यक्रमों की समीक्षा की गई और नए पाठ्यक्रम जोड़े गए ।

 संयुक्त कार्यक्रम, संकाय आदान-प्रदान और सहयोगपरक अनुसंधान आदि के आरम्भ हेतु अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्पर्क के अन्वेषण और सहयोग स्थापित करने का कार्य किया गया।

हाल ही के अंतर-संस्थागत समझौता ज्ञापन :

- सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क, ब्रोंक्स कम्युनिटी कॉलेज, यूएसए
- लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय (एलबीयू), नेपाल
- ओटानी विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान

- बौद्धिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए कोयम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है। प्रस्तावित समझौता ज्ञापन का उद्देश्य छात्र विनिमय, संकाय विनिमय तथा संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम इत्यादि के समर्थन एवं सहयोग को विकसित करना है।

- बौद्धिक और वैज्ञानिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए पोर्टो विश्वविद्यालय, पुर्तगाल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है। प्रस्तावित एमओयू का उद्देश्य संयुक्त सम्मेलनों/संगोष्ठियों, छात्र विनिमय, संकाय विनिमय; संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम, सांस्कृतिक अन्वेषण आदि के समर्थन एवं सहयोग को विकसित करना है।

- संकाय सदस्यों के आदान-प्रदान, छात्रों और अनुसंधान अध्येताओं के आदान-प्रदान; संयुक्त सम्मेलन, संगोष्ठी और प्रकाशन आदि के समर्थन एवं सहयोग को विकसित करने के लिए स्पेन में सलामांका विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है।

 विदेश मंत्रालय द्वारा दिनांक 16.12 2021 को नई दिल्ली में नालंदा विश्वविद्यालय के सदस्य-राष्ट्रों के मिशन प्रमुखों के लिए एक विशेष संवाद सत्र का आयोजन किया गया; सदस्य राष्ट्रों के मिशन प्रमुखों ने विश्वविद्यालय में हुई प्रगति के लिए कुलपति की सराहना की।

 2021-22 के दौरान, नालंदा विश्वविद्यालय ने एक नई अंतरराष्ट्रीय पहचान के साथ प्रतिष्ठा प्राप्त की यह सम्मान कुलपति प्रो. सुनैना सिंह को उनके नेतृत्व के लिए प्रदान किया गया । उन्हें एशिया और प्रशांत क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के एसोसिएशन, 2021 के शोध एवं नवाचार विंग के सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया; उन्हें यूरोपियन सोसाइटी फॉर क्वालिटी रिसर्च, 2021 द्वारा अनुसंधान और शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित गुणवत्ता उपलब्धि पुरस्कार 2021 भी प्राप्त हुआ।

 यूनिवर्सल पीस फेडरेशन ऑफ इंडिया (UPFI) द्वारा सुनैना सिंह, कुलपति, नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय को शांति के लिए राजदूत का पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार पुनर्निर्मित ऐतिहासिक नालंदा विश्वविद्यालय में लोगों के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की दिशा में आध्यात्मिक लोकाचार, शांति और सद्भाव, ज्ञान के भंडार के निर्माण में प्रो. सिंह के उल्लेखनीय योगदान के सम्मान में प्रदान किया गया है । प्रो. सिंह को उनकी विद्वता, सत्यनिष्ठा, बौद्धिक क्षमता और न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी उच्च शिक्षा शैक्षणिक और शासन प्रणालियों के पुनर्गठन और पुनर्रचना के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

स. अवसंरचनात्मक विकास

 नालंदा टीम के सामूहिक प्रयासों से अगस्त 2022 (लगभग 1000 वर्षों के पश्चात) में छात्रों को इसके नए परिसर में रहने के लिए लाया गया। यह अमृत महोत्सव के दौरान की एक सबसे बड़ी उपलब्धि है क्योंकि नालंदा का पुनर्निर्माण इसके नए अवतार और 'विश्व गुरु' के रूप में किया गया है, जो सही अर्थों में प्राचीन काल में अपने नाम के अनुरूप है।

 2021-22 में शैक्षणिक परिषद, वित्त समिति और भवन एवं निर्माण समिति का पुनर्गठन।

 एक आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली की स्थापना और एक आंतरिक लेखा परीक्षक की नियुक्ति के लिए शून्य भ्रष्टाचार के उद्देश्य से पारदर्शिता और जवाबदेही लाने के लिए एक आंतरिक लेखा परीक्षा नियमावली का निर्माण किया गया है। यह इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिक ऑडिटर्स ऑफ़ इंडिया (बिहार चैप्टर) की मदद से तैयार किया गया आंतरिक ऑडिट मैनुअल है जो 2021-22 से विश्वविद्यालय में लागू है।

D. नेट-जीरो परिसर

<u>**हरित संधारणीय परिसर की ओर: कुलपति प्रो सुनैना सिंह की पहल**</u>

एक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में इसे पूर्ववर्ती विश्वगुरु के रूप में पुन: स्थापित करने के लिए कुलपति महोदया ने इसके अवसंरचनात्मक विकास कार्यों को युद्ध स्तर पर पूरा करने का बीड़ा उठाया है। विश्वस्तरीय संधारणीय हरित अवसंरचना अपने माप एवं आकार में नए मानक स्थापित कर रही है।

विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण और भवन के बुनियादी ढांचे को तेजी से पूरा करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

 विश्वविद्यालय के भवनों का निर्माण, जिसमें परिसर की सुविधाएं, उपयोगिता संरचनाएं और साइट विकास कार्यों के साथ-साथ शैक्षणिक और प्रशासनिक भवन शामिल हैं, की पहल कुलपति प्रो सुनैना सिंह द्वारा मई 2017 (पूर्णता दर 0.28%) में की गई थी जो 2021-22 तक 90% हो चुका है।

 अत्याधुनिक नए परिसर के अंतर्गत 200 भवन/संरचना से अधिक की एक विशाल अवसंरचना विकास सम्मिलित है जिसका निर्माण क्षेत्र लगभग 14 लाख वर्ग मीटर तक फैला हुआ है जिसमें 300 एकड़ का भूदृश्य/बागवानी विकास कार्य; 12.05 किमी का आंतरिक सड़क नेटवर्क; 40 हेक्टेयर का जल निकाय, सभी आधुनिक सेवाएँ, उपयोगिता, भवनों का आंतरिक साज-सज्जा भी शामिल है।

 लगभग 40 हेक्टेयर जलाशयों का विकास किया जा रहा है, जिनमें से 95% कार्य 2021-22 में पूरा कर लिया गया है। निर्माण के लिए अपेक्षित जल की आपूर्ति परिसर के जल निकायों में संचयित वर्षा जल द्वारा की जा रही है।

 पुरस्कार प्राप्त 'एकीकृत जल प्रबंधन योजना' परिसर के भीतर वर्षा जल और सतही अपवाह के संग्रहण, अतिरिक्त पानी की बर्बादी पर नियंत्रण तथा मांग-प्रबंधन सिद्धांतों के अनुपालन को सुनिश्चित करती है। यह माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सरकार के जल जीवन हरियाली अभियान को प्रतिबिम्बित करती है। बिहार सरकार के जल जीवन हरियाली अभियान के एक भाग के रूप में वर्ष 2021-22 में विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में एक वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

य) पहुंच/दृश्यता

 नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा नवंबर 2021 में इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से अपने मुख्य परिसर में **'कोविडकाल के पश्चात के विश्व क्रम में धर्म-धम्म परंपराओं का निर्माण'** विषय **पर छठें धर्म- धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन** का आयोजन किया गया। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा श्रीमती मीनाक्षी लेखी, माननीय विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री, भारत सरकार ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से 200 से अधिक विद्वानों और प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए और सम्मेलन में मुख्य/सत्र भाषण प्रस्तुत किए। माननीय कुलपति प्रो. सिंह की पहल पर नालंदा विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय में लगातार चौथे, पांचवें और छठे धर्म- धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

 अक्टूबर 2021 में माननीय एमओएस, डॉ राज कुमार रंजन सिंह और एमईए अधिकारियों के एक मेजबान समूह ने नालंदा परिसर का दौरा किया। विकास कार्यों को देखते हुए माननीय एमओएस ने शैक्षणिक विकास, बुनियादी ढांचे, शासन, पारदर्शिता और जवाबदेही सहित सभी मोर्चों पर प्रगति के लिए कुलपति और उनकी टीम की सराहना की।

 नालंदा विश्वविद्यालय की वेबसाइट को वर्ष 2020-21 में पुन:निर्मित एवं अभिकल्पित किया गया है, इस पहल में सर्वप्रथम नियमों, विनियमों, विधियों, अध्यादेशों, विद्यालयों, विद्यार्थियों, पाठ्यक्रमों, संकाय, अनुशासन/आचरण मानदंडों सहित जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए सभी विवरणों को अपलोड किया गया है।

 ऑस्ट्रेलियाई सरकार से अनुदान: कुलपति की पहल पर संधारणीय कृषि के लिए जलभृत भंडारण एवं पुनर्प्राप्ति पर एक शोध परियोजना पारिस्थतिकी एवं पर्यावरण अध्ययन केंद्र को अवॉर्ड किया गया जिसे ऑस्ट्रेलियन सेंटर फॉर इंटरनेशनल एग्रीकल्चरल रिसर्च द्वारा समर्थन प्रदान किया जा रहा है। इसका उद्देश्य स्वदेशी रूप से विकसित जलभृत पुनर्भरण गड्ढों के अनुसंधान को बढ़ावा देना था, इसे दक्षिण बिहार क्षेत्र की सिंचाई संबंधी जरूरतों के समाधान के रूप में देखा जा रहा है।इस परियोजना को वर्ष 2021-22 में सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है।

 एक उत्तरदायी और संधारणीय अंतरराष्ट्रीय संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय ने 01 जून 2022 से 05 जून, 2022 तक पर्यावरण सप्ताह मनाया। पूरे नालंदा समुदाय ने विभिन्न अधिसूचित गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया और एक संधारणीय पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण में योगदान दिया।

 आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय ने नालंदा विश्वविद्यालय स्पीक मैके चैप्टर की स्थापना की। इस पहल के एक भाग के रूप में अप्रैल 2022 में सुषमा स्वराज सभागार, मुख्य परिसर में अपनी तरह का एक पहला, पद्मा भूषण और ग्रैमी अवार्ड विजेता पं. विश्व मोहन भट्ट (मोहन वीणा) ने शास्त्रीय संगीत गायन प्रस्तुति किया।

शैक्षणिक ले-आउट

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्त्ये, में आस्था रखने वाली माननीय कुलपति महोदया प्रो. सुनैना सिंह शिक्षा पर भारतीय प्राचीन ज्ञान परम्परा के दृष्टिकोण से देखती हैं, जिसके अंतर्गत मानव विकास का व्यापक विस्तार तथा बौद्धिक समाज को सृजित करने के लिए ज्ञान की एक अखंड परम्परा निहित है। ज्ञान के इस प्राचीन स्थल के नवीनीकरण की प्रक्रिया में उनकी गतिविधियां निरंतर रूप से नालंदा के समृद्ध इतिहास से प्रेरित है, और इस प्रक्रिया में वह उस चीज को सृजित करने के लिए प्रयासरत हैं, जिसका सृजन इससे पूर्व कभी नहीं हुआ। उनके उत्कृष्ट नेतृत्व-कौशल में वर्तमान में विश्वविद्यालय का यह मत है कि मूलभूत प्रश्नों, उभरती चुनौतियों का सामना करने तथा विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए हमारे प्राचीन ज्ञान और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। ऐसे वातावरण को प्रभावी बनाने के लिए वे नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षण, शोध एवं अध्ययन के लिए सफलतापूर्वक अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप उपलब्ध कराने के अपने प्रयास में सफल रहीं, जिसे बड़े उदारपूर्वक भारत सरकार तथा अन्य प्रतिभागी सदस्य देश एवं संस्थानों द्वारा समर्थन प्रदान किया गया है।

नालंदा विश्वविद्यालय एक नया विश्वविद्यालय के बावजूद विविध समुदायों के विद्यार्थियों एवं अध्येताओं का घर है, इसका प्रयास पूरी दुनिया से उत्कृष्ट एवं तेजस्वी व्यक्तित्वों को आकर्षित करना है, वर्तमान में विश्वविद्यालय में 30 से अधिक राष्ट्रीयता है जो परिसर को अपने विविधताओं एवं बहुववाद से समृद्ध कर रहे हैं, जबकि विश्व अभी भी कोविड-19 महामारी के प्रभावों से जूझ रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित एक **नई शैक्षिक अवसंरचना** को वर्ष 2017 के अंत में उद्घाटित किया गया था। **ज्ञान के नए क्षेत्र** में अत्याधुनिक शोध पर आधारित **अंतर्विषयी** नवाचारी पाठ्यक्रम को भी उद्घाटित किया गया। यह सुनिश्चित किया जाता है कि हर वर्ष **पाठ्यक्रमों का ऑडिट किया जाए।** परास्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों को परास्नातक स्तर पर शोध निबंध के साथ आधार, सेतु, उन्नत और विशिष्ट पाठ्यक्रमों के रूप में पुनर्गठित किया जाता है।

सभी पाठ्यक्रम कैफेटेरिया मॉडल में हैं, जहां **विकल्प सूची में स्वैच्छिक विषयों की संख्या** का उल्लेख है जिनकी प्रकृति अंतर्विषयी है। पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण अध्ययन का एक विद्यार्थी बौद्ध अध्ययन तथा अध्यात्मवाद पर दर्शन शास्त्र एवं तुलनात्मक धर्म से एक पाठ्यक्रम का चयन कर सकता है, इसी प्रकार बौद्ध अध्ययन का विद्यार्थी संधारणीय विकास एवं प्रबंधन में एमबीए से एक पाठयक्रम का चयन कर सकता है।

वर्तमान व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि विद्यालयों में नए पाठ्यक्रम जैसा कि अधिनियम एवं विधान में निर्धारित किया गया है, के अनुरूप लागू हों तथा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हों। यदि 2017 में नालंदा

विश्वविद्यालय में 03 पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते थे तो 2021-22 तक 23 पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं, **जिनमें विश्लेषणात्मक चिंतन, योग और ध्यान में अल्पकालिक पाठ्यक्रम भी शामिल हैं यथा- अंग्रेजी, संस्कृत, पालि, कोरियाई; बंगाल की खाड़ी अध्ययन।** विद्यालयों की संख्या भी 2017 में 03 से बढ़कर 2021 में 06 हो गई। विश्वविद्यालय ने एक क्रेडिट बैंक भी शुरू किया, जहां छात्र अतिरिक्त पाठ्यक्रमों से अतिरिक्त क्रेडिट 'जमा' कर सकते हैं। जबकि कुछ अंतरराष्ट्रीय संकाय पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं, वहां कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अतिथि संकाय हैं, साथ ही उद्योग विशेषज्ञ छात्रों को पढ़ाते /संबोधित करते हैं। **चार वर्षीय वैश्विक** पीएच.डी. 2019 में नियमित और अंशकालिक दोनों शोधकर्ताओं के लिए 130 क्रेडिट के साथ शुरू किया गया था। कोविड -19 महामारी के बावजूद विश्वविद्यालय ने **संधारणीय विकास एवं प्रबंधन में एमबीए कार्यक्रम शुरू किया। 2021-22 में भी दो नए परास्नातक कार्यक्रम यथा- विश्व साहित्य में एमए और हिंदू अध्ययन (सनातन) में एमए शुरू किए गए ।**

अध्ययन विद्यालय: अध्ययन के सभी छह विद्यालयों में नए पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए:-

1. बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यालय
2. पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय
3. ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय
4. प्रबंधन अध्ययन विद्यालय
5. भाषा और साहित्य / मानविकी विद्यालय
6. अंतरराष्ट्रीय संबंधों विद्यालय

लघु अवधि के पाठ्यक्रम : मौजूदा पाठ्यक्रमों को नया रूप दिया गया और नए पाठ्यक्रम इस प्रकार जोड़े गए हैं: -

7. भाषाएँ: अंग्रेजी, संस्कृत, पालि, तिब्बती, कोरियाई
8. विश्लेषणात्मक चिंतन
9. डिजिटल मानविकी
10. योग और ध्यान
11. बंगाल की खाड़ी अध्ययन

अनुसंधान केंद्र: विद्यालयों और अल्पकालिक कार्यक्रमों के अलावा, विश्वविद्यालय ने अपने विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए तीन अनुसंधान केंद्र भी शुरू किए हैं: -

1. बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र
2. सामान्य अभिलेखीय संसाधन केंद्र
3. संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र
4. नालंदा विश्वविद्यालय केंद्र, नीमराना

विशिष्ट/आगंतुक फैकल्टी

पूर्वी एशिया एवं उसके इतर ज्ञान मार्ग के निर्माण की दूरदर्शिता के साथ विश्वविद्यालय ने विभिन्न व्याख्यान सीरीज प्रोग्राम स्थापित किया है, जो एक नियमित आधार पर व्याख्यान तथा विद्यार्थियों एवं संकाय के बीच परस्पर संवाद प्रस्तुत करने के लिए भारतीय नौतिक मूल्यों को समझाने,प्रतिष्ठित छात्रवृत्ति तथा पहचान के साथ सिद्ध विशेषज्ञता वाले आमंत्रित वक्ताओं द्वारा विशेष ज्ञान को विकसित करने के द्वारा एक महत्वपूर्ण कदम को चिन्हित करता है।

अगस्त 2021 से अगस्त 2022 के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किए गए व्याख्यानों का विवरण निम्नानुसार है:

क्रमांक	शीर्षक		विवरण
1.	**डॉ. विनय सहस्रबुद्धे, अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद; मानव संसाधन विकास पर संसदीय स्थायी समिति, भारत सरकार के अध्यक्ष**, *21वीं सदी में सांस्कृतिक और सभ्यता संबंधी संबंधों का महत्व।*		अपने संबोधन में डॉ. सहस्रबुद्धे ने नालंदा विश्वविद्यालय को एक अद्वितीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने में कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने वैश्विक सांस्कृतिक संबंधों और भारत के विचार पर बल देते हुए नेटवर्क और संपर्क बनाने में आईसीसीआर की भूमिका का उल्लेख किया। नालंदा में एक सर्वदेशीय बहुसांस्कृतिक वातावरण है। उन्होंने कहा कि हम एनयू में ज्ञान और संस्कृति के सभ्यतागत लोकाचार की विशिष्ट इमारत को और मजबूत बना रहे हैं।
2.	**प्रोफ़ेसर गोदावरीशा मिश्रा, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग , मद्रास विश्वविद्यालय; पूर्व सदस्य-सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली:** *दर्शनशास्त्र के रूप में दर्शन : भारतीय पूर्व-परिकल्पना ।*		इस व्याख्यान में यह चर्चा की गई कि संस्कृत शब्द के साथ-साथ "*दर्शन*" की अवधारणा आत्म-विश्लेषण की उसी परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसका इतिहास तीन हजार वर्षों से अधिक पुराना है और जो हमारे समय तक विभिन्न धाराओं में सार्थक तरीके से पहुंचा है। अब विश्व स्तर पर बातचीत के माध्यम से इस परंपरा के अपने चरम पर पहुंचने के साथ, इन दो शर्तों पर विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि दर्शन के अनुसरण में किस हद तक उचित दर्शन किया जा सकता है और इसके विपरीत शासक *हेगेलियन* की

			पूर्वधारणाओं को पार किया जा सकता है।
3.	**प्रोफेसर *(डॉ.)* क्लॉडाइन बॉटज़े पिक्रॉन, सेंटर नेशनल डे ला रिसर्च साइंटिफिक (सीएनआरएस*)*,पेरिस और पूर्व प्रोफेसर, कला इतिहास और पुरातत्व विभाग, दर्शनशास्त्र और पत्र, युनिवर्सिटी लिब्रे डी ब्रुक्सेलस*: पूर्वी भारत और दक्षिणपूर्व एशिया में शक्ति और सुरक्षा की बौद्ध छवियां***		इस व्याख्यान में यह चर्चा की गई कि महाकाल, हेरुका/हेवज्र और अवलोकितेश्वर जैसे बौद्ध पात्रों ने दक्षिण पूर्व एशिया और चीन के विभिन्न देशों में राज्य के संरक्षक के रूप में एक प्रमुख स्थान धारण किया। भारत के बाहर उनकी भूमिका और बंगाल और बिहार में छवियों के भौगोलिक और कालानुक्रमिक मानदंडों को ध्यान में रखते हुए, हम उनके होने के कारण को बेहतर ढंग से समझने का सुझाव दे सकते हैं ।
4.	**प्रोफेसर आर राज राव, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, अंग्रेजी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, भारत: *प्रांत में महानगर: नई दुनिया का अन्वेषण***		इस व्याख्यान में, वक्ता ने इस प्रश्न को संबोधित किया कि क्या पश्चिमी दृष्टिकोण से नई दुनिया केवल प्रांतीय है या इसमें महानगरीय और क्या इनमें महानगरीय तत्व मौजूद हैं? इस व्याख्यान में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भारत और विकासशील दुनिया पर करीब से नज़र डाली गई। उनका तर्क है कि जबकि नई दुनिया तकनीकी दृष्टि से आधुनिक लग सकती है, लेकिन यह धर्म, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद, कट्टरवाद, पितृसत्ता, पर्यावरण और वैश्विक आतंक और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों के प्रति अपने दृष्टिकोण में पूर्व-आधुनिक है । साहित्य में, इस विडंबना को लेखक ने अपने काम के माध्यम से उजागर किया है।
5.	**प्रोफ़ेसर सुधा राज , प्रोफेसर, पोषण और खाद्य अध्ययन विभाग, फाल्क कॉलेज ऑफ स्पोर्ट एंड ह्यूमन डायनेमिक्स, सिरैक्यूज़ यूनिवर्सिटी, सिरैक्यूज़ एनवाई *13244: पारंपरिक खाद्य प्रणालियों का पुनरुद्धार: सतत पोषण के लिए उपयोगी***		सन 2000 के दशक के मध्य से पारंपरिक खाद्य प्रणालियों की अंतर्निहित शक्ति और इन प्रणालियों और उनके समुदायों में पोषण संक्रमण के परिणामों के दस्तावेजीकरण पर ध्यान केंद्रित करने वाली बहुत सी अंतरराष्ट्रीय शोध गतिविधियां हुई हैं। पारंपरिक व्यंजनों के प्रलेखन की कमी के बारे में रुचि और चिंता है जो न केवल उनके लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि खाद्य संस्कृतियों की विरासत के लिए भी महत्वपूर्ण हैं जो शीघ्र ही ठोस कदम न उठाने पर गायब हो सकते हैं। इस व्याख्यान में निम्नांकित तथ्यों पर विचार-विमर्श किया गया, यथा-वैश्विक स्तर पर आहार के तरीके और उनमें होने वाले परिवर्तनों

			के प्रति दृष्टिकोण; ऐसे परिवर्तनों के परिणाम और मनुष्यों और पर्यावरण के लिए स्थिरता से संबंधित प्रश्न; क्षेत्रीय खाद्य संस्कृति का लाभ उठाने पर ध्यान देने के साथ आहार समानता सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियां इत्यादि।
6.	**डॉ यामिनी शाह, अतिथि संकाय, मुंबई विश्वविद्यालय और संपादक, पेपरवॉल मीडिया एवं प्रकाशन; कवि/ लेखक: सारांश मौखिकवाद,** ***हाशिए पर भौगोलिक चेतना: 'सारांश मौखिकवाद' के माध्यम से कच्छ को सिद्धांत में ढालना।***		इस व्याख्यान में तर्क दिया गया कि कई बार सत्ता में बैठे लोगों के लिए अभाव की अभिव्यक्ति एक चुनौती बन जाती है। यहीं पर ज्ञान-मीमांसा, बहुभाषावाद और अंग्रेजी भाषा के रूप में कविता प्रधानता प्राप्त करती है, और के रूप इकोपोएटिक्स कार्य करती है। कच्छ के मामले में महिलाओं और पानी के तरल रूपकों, संघर्षों, और शोध कविता संग्रह, 'एब्सट्रैक्ट ओरलिज्म' के माध्यम से लचीलेपन की कहानियां अमूर्त वास्तविकताएं और किंवदंतियों के रूप में एक आवश्यकता बनी हुई है।
7.	**प्रो . शोभा रानी दास, प्रोफेसर, बौद्ध विभाग अध्ययन, ओटानिया विश्वविद्यालय, क्योटो (जापान):** ***सम्पर्क निर्माण: सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक संबंधों के बीच भारत और जापान***		इस व्याख्यान में भारत और जापान के बीच सांस्कृतिक और दार्शनिक संबंधों को रेखांकित किया गया। वार्ता में भारत पर जापान के विभिन्न संस्थानों के दीर्घकालिक फोकस पर जोर दिया गया, विशेष रूप से बौद्ध अनुसंधान के क्षेत्र में, जिसमें भारत-विद्या और बौद्धविद्या शामिल है। इस व्याख्यान में एक केस स्टडी के रूप में जापान के ओटानी विश्वविद्यालय में चल रहे शोध को संक्षेप में कवर किया।
8.	***श्री क्रिश्चियन एस्कोबार, प्रसिद्ध कलाकार ग्वाटेमाला और आईसीसीआर में विशिष्ट आगंतुक : कला की कोई सीमा नहीं होती***		क्रिश्चियन एस्कोबार ग्वाटेमाला, मध्य अमेरिका में स्थित एक स्व-प्रशिक्षित कलाकार हैं। उन्हें अतियथार्थवाद और यथार्थवाद के विशेषज्ञ के तौर पर जाना जाता है, जो मानव आकृति से प्रेरित है और शहरी संस्कृतियों की विशेषताओं और प्रकृति और विज्ञान के साथ उनके संबंधों को लागू करता है। वे प्रकाश और अंधेरे के द्वैत के साथ खेलते हुए, अपने विषयों में एक सही नाटकीयता उत्पन्न करने के लिए एक उपकरण के रूप में काइरोस्कोरो (प्रकाश छाया चित्रण) का उपयोग करते हैं।

शैक्षिक पाठ्यक्रम

विद्यालय तथा शैक्षिक पाठ्यक्रम

एसबीएस

बौद्ध अध्ययन विद्यालय

एमए, ग्लोबल पीएचडी

बौद्ध परंपराओं, तुलनात्मक धर्म तथा दर्शनशास्त्र का अध्ययन

एसईईएस

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय

एमएससी, ग्लोबल पीएचडी

पर्यावरण तथा प्राकृतिक-सामाजिक विज्ञान के अंतर-संबंध पर फोकस

एसएमएस

प्रबंध अध्ययन विद्यालय

एमए, ग्लोबल पीएचडी

संधारणीय विकास तथा नवाचारी समस्या समाधान

एसएचएस

इतिहास अध्ययन विद्यालय

एमए, ग्लोबल पीएचडी

दक्षिण पूर्व एशियाई, विश्व तथा तुलनात्मक सांस्कृतिक इतिहास पर फोकस

एसएलएलएच

भाषा तथा साहित्य/मानविकी विद्यालय

डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट

मानविकी तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक अन्वेषण

एसएलएलएच

अतिरिक्त-क्रेडिट पाठ्यक्रम

अंतर्विषयी तथा विश्लेषणात्मक चिंतन, डिजिटल मानविकी

पाठ्यक्रम

नालंदा विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एमए, एमएससी और एमबीए), एक वैश्विक पीएच.डी. तथा अनेक अल्पकालिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। समग्र रूप से, प्रवेश प्रक्रिया शैक्षिक रिकॉर्ड, प्रवेश के आशय और संस्तुति पत्रों पर आधारित होते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम फोकस का उद्देश्य एक ऐसे ठोस शैक्षिक अवसंरचना का निर्माण करना है जो विश्व स्तरीय सर्वांगीण शिक्षा का समर्थन करे और ज्ञान के नए क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने में सक्षम हो। इन शैक्षणिक पहलों का मुख्य लक्ष्य प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक प्रणालियों के ज्ञान और अनुप्रयोग को आगे बढ़ाने के लिए आधार प्रस्तुत करना है ताकि व्यक्तिगत और शैक्षणिक दृष्टिकोण और सहयोग को व्यापक बनाने पर आधारित एक नई विश्व व्यवस्था बनाई जा सके। इसे अपने विशिष्ट क्षेत्रों और अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से पूरा किया जाता है। शैक्षिक कार्यक्रमों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के समानांतर लाने के लिए, पाठ्यक्रम को लगातार नए पाठ्यक्रमों और पाठ्यक्रम संरचनाओं के साथ अद्यतन किया जाता है जो सीखने के परिणामों को स्पष्ट करने, उन लक्ष्यों को पूरा करने के तरीकों का पता लगाने और सीखने के परिणामों के साथ संरेखित मूल्यांकन रणनीतियों की दृष्टि से तैयार किए जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित एक नई अवसंरचना वर्ष 2017 के अंत में उद्घाटित की गई। ज्ञान के नए क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान पर ध्यान देने के साथ अंतर्विषयी नवाचारी पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। सभी पाठ्यक्रम एक कैफेटेरिया मॉडल में हैं जिसमें विकल्प सूची में कई ऐच्छिक विषय हैं जो अंतर्विषयी हैं। 2018 में कुल पाठ्यक्रम क्रेडिट को 48 क्रेडिट से बढ़ाकर 64 कर दिया गया।

स्नातकोत्तर डिग्री की संरचना: 64 क्रेडिट

1. नालंदा में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के लिए, एक छात्र को 64 क्रेडिट: पूर्ववर्ती (प्रथम वर्ष) में 32 और उत्तरवर्ती (द्वितीय वर्ष) में 32 क्रेडिट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। स्नातकोत्तर छात्रों को प्रत्येक सेमेस्टर में कम से कम 16 क्रेडिट पूरे करने होते हैं। एक शैक्षणिक वर्ष में कम से कम 18 सप्ताह के दो शैक्षणिक सेमेस्टर होते हैं, जिसमें 16 सप्ताह की कक्षा में उपस्थिती अनिवार्य होती है।
2. संधारणीय विकास एवं प्रबंधन में एमबीए पाठ्यक्रम एक 74 क्रेडिट वाला पाठ्यक्रम है जो भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों/पेशेवर व्यक्तियों और पदधारियों दोनों के लिए खुला है। नालंदा में एमबीए डिग्री प्राप्त करने के लिए, एक छात्र को 74 क्रेडिट: पूर्ववर्ती (प्रथम वर्ष) में 38 क्रेडिट (जिसमें समर इंटर्नशिप के 2 क्रेडिट और शामिल हैं) और उत्तरवर्ती (द्वितीय वर्ष) में 36 क्रेडिट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है एमबीए छात्रों को समर इंटर्नशिप के 2 क्रेडिट के अलावा प्रत्येक सेमेस्टर में कम से कम 18 क्रेडिट पूरे करने होते हैं। एक शैक्षणिक वर्ष में कम से कम 18 सप्ताह के दो शैक्षणिक सेमेस्टर होते हैं, जिसमें 16 सप्ताह की कक्षा में उपस्थिती अनिवार्य होती है।

कुल पाठ्यक्रम क्रेडिट नालंदा विश्वविद्यालय के सभी स्कूलों में एक समान पाठ्यक्रम संरचना है। पाठ्यक्रमों को मुख्य,वैकल्पिक और संगोष्ठी पाठ्यक्रमों में वर्गीकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक स्कूल में चौथे सेमेस्टर में एक शोध प्रबंध का घटक शामिल होता है।

प्रत्येक सेमेस्टर की विस्तृत संरचना नीचे दी गई है।

एमए / एमएससी .:

1. 10 मुख्य पाठ्यक्रम, 30 क्रेडिट के समतुल्य।
2. 7 ऐच्छिक, 21 क्रेडिट के समतुल्य।
3. 4 सेमिनार, 4 क्रेडिट के समतुल्य।
4. 1 निबंध, 9 क्रेडिट के समतुल्य।

कुल 64 क्रेडिट
(16 क्रेडिट / सेमेस्टर)

एमबीए:

5. 12 मुख्य पाठ्यक्रम, 36 क्रेडिट के समतुल्य।
6. 2 मुख्य पाठ्यक्रम, 6 क्रेडिट के समतुल्य।
7. 4 ऐच्छिक, 12 क्रेडिट के समतुल्य।
8. 2 सेमिनार, 2 क्रेडिट के समतुल्य।
9. 1 ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप, 2 क्रेडिट के समतुल्य
10. शोध-निबंध 10 क्रेडिट के समतुल्य और प्रस्तुतिकरण 2 क्रेडिट के समतुल्य अथवा
11. कॉर्पोरेट अनुभव 10 क्रेडिट के समतुल्य और मोनोग्राफ 2 क्रेडिट के समतुल्य

कुल 74 क्रेडिट
[38 पूर्ववर्ती (प्रथम वर्ष) में जिसमें 2 क्रेडिट समर इंटर्नशिप के लिए शामिल है और उत्तरवर्ती (द्वितीय वर्ष) में 36 क्रेडिट सहित]

मूल्यांकन प्रणाली

अनुशासनात्मक और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को खत्म करने के लिए तथा व्यक्तिगत उपलब्धियों की आसान तुलना के लिए वर्ष 2018 में एक नई ग्रेडिंग प्रणाली लागू की गई । एक निश्चित ग्रेड से नीचे के छात्रों को अपने स्कोर में सुधार लाने का अवसर प्रदान करने के लिए, मूल्यांकन की एक नई पद्धति क्रियान्वित की गई। विश्वविद्यालय साहित्यिक चोरी और अन्य परीक्षा कदाचार के प्रति एक शून्य-सहिष्णुता नीति का अनुपालन करता है।

नई मूल्यांकन और निर्धारण प्रक्रिया के अनुसार, प्रत्येक पाठ्यक्रम में कम से कम 50% छात्र मूल्यांकन सेमेस्टर के अंत में एक औपचारिक परीक्षा पर आधारित होता है, यह मुख्य रूप से मौखिक परीक्षा के साथ अथवा उसके बिना एक लिखित परीक्षा होती है। अन्य 50% में जिसके अंतर्गत औपचारिक मध्य-अवधि लिखित परीक्षा के लिए 20% मूल्यांकन शामिल है, जबकि शेष 30% को आमतौर पर 20% मूल्य निर्दिष्टकार्य/ परियोजाना के

लिए और 10% को अनवरत निर्धारण के बीच विभाजित किया जाता है। वसंत 2020, से एक नई ग्रेडिंग प्रणाली विकसित और कार्यान्वित की गई।

मध्य सेमेस्टर लिखित परीक्षा

20%

परियोजनाएं /सौंपे गए कार्य

20%

अनवरत निर्धारण

10%

सेमेस्टर के अंत में लिखित परीक्षा

50%

कुल

100%

वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम (नियमित और अंशकालिक)

नालंदा विश्वविद्यालय दो स्तरों (नियमित और अंशकालिक) पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए चार वर्षीय डॉक्टरेट पाठ्यक्रम प्रदान करता है। नियमित पीएच.डी. छात्रों के लिए यह पूरी तरह से एक आवासीय कार्यक्रम है। अंशकालिक पीएच.डी. पाठ्यक्रम विद्यालयों द्वारा निर्धारित संपर्क कार्यक्रमों/कार्यशालाओं के अनुसार संचालित किया जाता है। विश्वविद्यालय ने नियमित और अंशकालिक दोनों स्तरों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए चार वर्षीय वैश्विक डॉक्टरेट कार्यक्रम के लिए 11 छात्रों को प्रवेश दिया है। यह कार्यक्रम जनवरी, 2020 में शुरू हुआ और ग्लोबल पीएच.डी. पाठ्यक्रम वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन विद्यालयों द्वारा प्रदान किया जा रहा है।

ग्लोबल पीएचडी डिग्री के अवार्ड हेतु इस शोध पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए, एक अध्येत्ता को नीचे दिए गए विवरण के अनुसार कुल 130 क्रेडिट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है:

1. कोर्स वर्क: 32 क्रेडिट (प्रथम सेमेस्टर)
2. थीसिस: 60 क्रेडिट
3. प्रकाशन/अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/फोरम में/ प्रस्तुति: 08 क्रेडिट
4. पूर्व प्रस्तुत संगोष्ठी प्रस्तुति: 10 क्रेडिट
5. मौखिक परीक्षा: 20 क्रेडिट

कुल: 130 क्रेडिट

लघु अवधि पाठ्यक्रम (डिप्लोमा और प्रमाण पत्र)

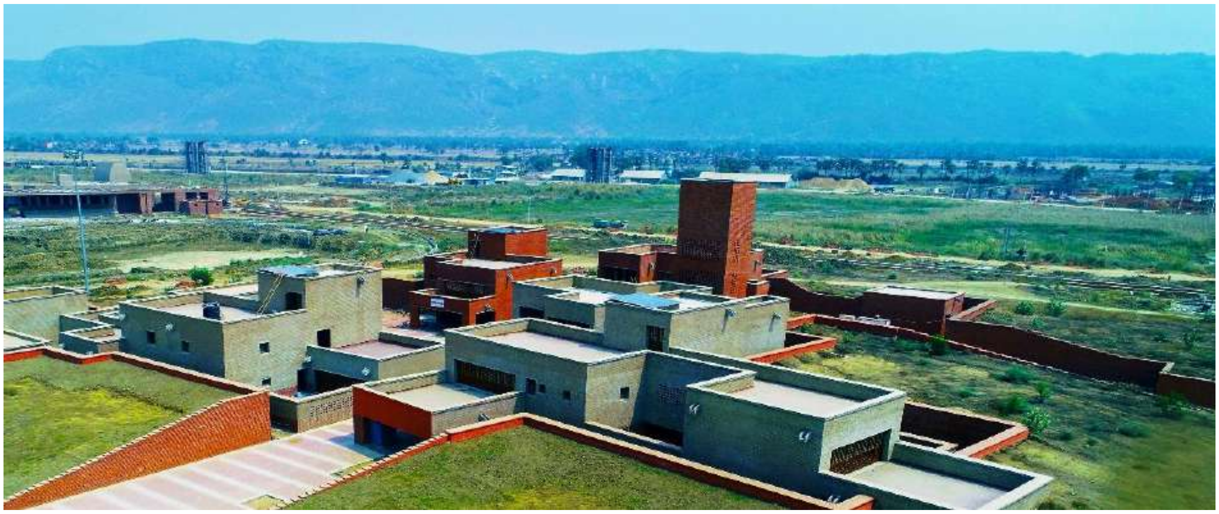

शैक्षिक खंड, नया परिसर

नालंदा विश्वविद्यालय में अल्पकालिक कार्यक्रम एनयू द्वारा किए गए प्रयासों का हिस्सा हैं, जिसकी माननीय कुलपति ने कल्पना की थी, यह परिकल्पना उनकी आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के साथ जुड़ने की एक पहल थी। विश्वविद्यालय ने 2018 से अल्पकालिक कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है, जिसमें छात्रों को विभिन्न भाषाओं और विशिष्ट क्षेत्रों में दक्षता हासिल करने में सक्षम बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विश्वविद्यालय ने विविधीकरण और सामुदायिक जुड़ाव के इरादे से इन कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है।

आरम्भ में संस्कृत, अंग्रेजी और कोरियाई में प्रवीणता और डिप्लोमा का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। धीरे-धीरे, पालि, योग, रिमोट सेंसिंग और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) कार्यक्रमों को भी प्रस्तावित पाठ्यक्रमों की सूची में जोड़ा गया।

अध्ययन विद्यालय

बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म विद्यालय

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यालय (एसबीएसपीसीआर) 2016-17 से संचालित है और शैक्षिक और सुप्रचालन दोनों स्तरों पर विकासोन्मुख है। यह दो परास्नातक पाठ्यक्रम प्रदान करता है, यथा - बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म में एमए और हिंदू अध्ययन (सनातन) में एमए । इन पाठ्यक्रमों में एक समग्र विषय-सामाग्री सम्मिलित है जिसमें हिंदू और बौद्ध परंपराओं का इतिहास, भारत की विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों का पाठ-आधारित अध्ययन और धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है। यह विद्यालय पृथक रूप से शास्त्रीय भाषाओं यथा- पालि, संस्कृत और तिब्बती में भी प्रशिक्षण प्रदान करता है। भाषा घटक पर जोर देने के साथ, परास्नातक कार्यक्रम विभिन्न भाषाओं में लिखे गए प्राथमिक हिंदू और बौद्ध ग्रंथों, और अन्य धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने की सुविधा प्रदान करते हैं, जो शैक्षणिक विश्वसनीयता के उच्च मानकों के साथ एक योग्य स्नातकोत्तर शोध कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अभिन्न कौशल विकसित करने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। छात्रों को प्रदान किए जाने वाले कौशल में साहित्यिक और दार्शनिक ग्रंथों के गहन पठन-पाठन से लेकर पुरातात्विक प्रशिक्षण शामिल होता है।

एसबीएसपीसीआर के परास्नातक पाठ्यक्रम छात्रों को सहयोगी अनुसंधान के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें एक कैफेटेरिया मॉडल में अंतर्विषयी और अंतर-अनुशासनात्मक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला में संबद्ध करते हैं ताकि इस पाठ्यक्रम के स्नातक क्षेत्रीय अध्ययन, क्षेत्र अध्ययन, धार्मिक अध्ययन, योग अध्ययन तथा उन संगठनों जो अंतरसांस्कृतिक और बहुसांस्कृतिक मुद्दों के साथ काम करते हैं, में रोजगार के लिए पात्र हो सकें। धार्मिक अध्ययन, योग और दर्शन में प्रशिक्षण हस्तांतरणीय अंतर्विषयी कौशल प्रदान करता है जो स्नातकों को विभिन्न क्षेत्रों यथा भारत-विद्या, भाषा विज्ञान, बहु-भाषा, दर्शनशास्त्र, अभिलेखाध्यक्ष/पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में पेशेवर रास्ते खोलने के अलावा, तंत्र और योग पर टिप्पणीकार, शांति कार्यकर्ता, योग प्रशिक्षक, सांस्कृतिक प्रशासक, कला क्यूरेटर आदि में करियर बनाने में सक्षम बनाता है। यह पाठ्यक्रम अन्य दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं के संबंध में भारत-विद्या संबंधी विचारों और मूल्यों और उनके ऐतिहासिक विकास के अध्ययन पर विशेष जोर देता है ।

तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन पाठ्यक्रम का कैफेटेरिया मॉडल

एसबीएसपीसीआर पाठ्यक्रम कैफेटेरिया मॉडल का अनुसरण करता है जो छात्रों को एसबीएस और विश्वविद्यालय के अन्य विद्यालयों से विविध विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। हिंदू और बौद्ध परंपराओं के विकास की व्यापक सामाजिक-ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-धार्मिक संदर्भों की जांच एक नवाचारी और अंतर्विषयी पाठ्यक्रम के माध्यम से की जाती है। यह विद्यालय विश्लेषणात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है और भारतीय तथा एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध धर्म और हिंदू परंपराओं के व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों का अन्वेषण करता है।

अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र

1. बौद्ध धर्म और हिंदू आध्यात्मिक परंपराओं, ग्रंथों और ध्यान प्रथाओं के अभिविन्यास की गतिशीलता;
2. प्राथमिक ग्रंथों, शिलालेखों और हिंदू और बौद्ध प्रतिमा, कला और अन्य कलाकृतियों का अध्ययन;
3. बौद्ध, जैन और हिंदू परंपराओं और उनकी विभिन्न शाखाओं के साथ-साथ उनके क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भों पर जोर देने के साथ एशिया की विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं की तुलना और चर्चा;
4. सम्पूर्ण एशिया में हिंदू और बौद्ध परंपराओं से संबंधित प्रमुख स्थलों का पुरातत्व;
5. बौद्ध धर्म और हिंदू परंपराओं की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ और उनकी समकालीन प्रासंगिकता

अनुसंधान पहल

एसबीएसपीसीआर बौद्ध और हिंदू परंपराओं के धार्मिक साहित्य के लिए वैयक्तिक और सहयोगपरक अनुसंधान, अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण और अन्य समीपस्थ दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराओं के संबंध में धार्मिक विचारों और मूल्यों के अध्ययन पर विशेष जोर देता है।

संकाय

क्रम सं	नाम	पदनाम
1.	गोदाबरीशा मिश्रा	प्रोफेसर एवं डीन
2.	सुखबीर सिंह	प्रोफेसर एवं पूर्व डीन
3.	आनंद सिंह	प्रोफेसर
4.	एंड्रिया लॉसरीज	प्रोफेसर
5.	एलेक्जेंड्रा वेंटा	सहायक प्रोफेसर
6.	नवीन जी हलप्पा	वरि. सहायक प्रोफेसर
7.	प्रांशु समदर्शी	सहायक प्रोफेसर
8.	कुमुदा प्रसाद आचार्य	सहायक प्रोफेसर
9.	ब्रेंडा हुआंग जुआन लियू	टीचिंग फेलो, एसबीपीसीआर
10.	गेशे थुपटेन लोडेन	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएलएच
आंगतुक संकाय		
11.	अरिंदम चक्रवर्ती	प्रोफेसर, हवाई विश्वविद्यालय
12.	जे.ई.एम. हौबेन	प्रोफेसर, पीएसएल अनुसंधान विश्वविद्यालय, पेरिस
13.	दिवाकर आचार्य	स्पैल्डिंग प्रोफेसर, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
14.	हरमोहन मिश्रा	पूर्व निदेशक, उन्नत संस्कृत अनुसंधान केंद्र, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी

15.	मयंक शेखर	संपादक, कलाकोणा प्रभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त संस्थान)

पाठ्यक्रम

यह विद्यालय बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र तथा तुलनात्मक धर्म और हिंदू अध्ययन (सनातन) में परास्नातक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। वैश्विक पीएच.डी. पाठ्यक्रम बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म में प्रदान किया जाता है। पाठ्यक्रम मुख्य पाठ्यक्रम, वैकल्पिक पाठ्यक्रम और भाषा पाठ्यक्रम में विभाजित हैं।

बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म में परास्नातक

सेमेस्टर - I (आधार पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

4 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. बौद्ध धर्म का परिचय
2. बौद्ध दर्शन की मूल बातें
3. योग का इतिहास और दर्शन
4. भारतीय दर्शन का परिचय

1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. भाषा: संस्कृत/ पालि /तिब्बती (कोई एक भाषा) भाषा अनिवार्य विकल्प है।
2. ध्यान: सिद्धांत और अभ्यास-I [ऑडिट कोर्स]
3. एसईईएस/एसएचएस [ऑडिट कोर्स] से स्वैच्छिक विकल्प

*विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध [*क्रेडिटरहित पाठ्यक्रम]

1 संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - II (सेतु पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

3 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. बौद्ध पुरातत्व
2. बौद्ध मनोविज्ञान
3. सांख्य , योग, वेदांत, तंत्र : तुलनात्मक अध्ययन

2 वैकल्पिक पाठ्यक्रम: (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. भाषा: संस्कृत/पालि/तिब्बती [जैसा पहले चुना गया था] भाषा अनिवार्य विकल्प है।
2. भारतीय बौद्ध संप्रदायों का आरम्भ एवं विकास
3. धार्मिक ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन: (वैष्णव, शैव और बौद्ध ग्रंथों से चयन)

4. ध्यान: सिद्धांत और व्यवहार
5. एसएचएस/एसईईएस/एसएमएस (अंतर्विषयी/अंतर-विद्यालयी) से स्वैच्छिक विकल्प

* विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध [*क्रेडिटरहित पाठ्यक्रम]

1 संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - III (उन्नत पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

2 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. नालंदा परंपराएं
2. महायान और वज्रयान बौद्ध धर्म में दृश्य परंपराएँ: कला और प्रतिमा

3. वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

1. भाषा: संस्कृत/पालि /तिब्बती [जैसा कि पहले चुना गया था] भाषा अनिवार्य विकल्प है।
2. योग ग्रंथों को समझना
3. बौद्ध देवता: पाठ और अभ्यास
4. भारत में स्वास्थ्य और उपचार की परंपराएं
5. तुलनात्मक धर्म: उद्भव एक अध्ययन
6. ध्यान: सिद्धांत और अभ्यास- III
7. एसईईएस/एसएचएस से स्वैच्छिक विकल्प

* विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध [*क्रेडिटरहित पाठ्यक्रम]

संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - IV (विशिष्ट पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

1 मुख्य पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

1. बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत: मध्यमिका परंपराएं

1 स्वैच्छिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

1. भाषा (अनिवार्य नहीं): संस्कृत/पालि/तिब्बती
2. भारतीय दर्शन के सिद्धांत: हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म
3. ध्यान: सिद्धांत और व्यवहार
4. एसएचएस/एसईईएस/एसडी(अंतर्विषयी/अंतर-विद्यालयी) से विकल्प

*विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध *]क्रेडिटरहित पाठ्यक्रम[

1 संगोष्ठी 1 क्रेडिट **1 निबंध 9 क्रेडिट**

हिंदू अध्ययन में परास्नातक (सनातन)

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर - I (आधार पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

4 मुख्य पाठ्यक्रम: प्रत्येक के 3 क्रेडिट

मूल पाठ्यक्रम:

1. वेदों का परिचय: ऋग्वेद,यजुर्वेद,सामवेद और अथर्ववेद
2. मुख्य और लघु उपनिषदों का परिचय
3. इतिहास ग्रंथों का परिचय: रामायण और महाभारत
4. पौराणिक ग्रंथों का परिचय: विष्णु पुराण, अग्नि पुराण और भागवत पुराण

1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट) : छात्र निम्नलिखित में से किसी एक को चुन सकते हैं: -

5. संस्कृत भाषा-1 (अनिवार्य)
6. हिंदू दर्शन में नैतिकता: पुरुषार्थ, वर्ण और आश्रम
7. भारतीय दर्शन के सिद्धांत: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म
8. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस (कैफेटेरिया मॉडल में अन्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम)
9. विश्लेषणात्मक चिंतन (अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स)

संगोष्ठी- I (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - II (सेतु पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

3 मुख्य पाठ्यक्रम: प्रत्येक के 3 क्रेडिट

10. हिंदू दर्शन के मूल सिद्धांत: छह दर्शन - सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत
11. भगवद्गीता : धर्म का विश्लेषण, क्रिया के मार्ग, भक्ति और ज्ञान; स्थितप्रज्ञ की अवधारणा
12. वाल्मीकि रामायण: पाठ्य और विषयगत अध्ययन

2. वैकल्पिक पाठ्यक्रम: प्रत्येक के 3 क्रेडिट

छात्र निम्नलिखित में से दो का चयन कर सकते हैं: -

13. संस्कृत भाषा- II (अनिवार्य)
14. पतंजलि का योगसूत्र: सिद्धांत और व्यवहार
15. भरत का नाट्यशास्त्र : प्रदर्शन कला की भारतीय परंपरा
16. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस(कैफेटेरिया मॉडल में अन्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम)
17. * विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध (अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम)

1 संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - III (उन्नत पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

2 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक के 3 क्रेडिट)

मूल पाठ्यक्रम

18. प्रमुख उपनिषदों के सिद्धांत: छांदोग्य उपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद
19. भारतीय ज्ञान परंपरा के स्रोत: सूत्र, वर्तिका और भाष्य(टिप्पणी)

3 वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रत्येक)के_: छात्र निम्नलिखित में से तीन का चयन कर सकते हैं : **(क्रेडिट 3**

20. संस्कृत भाषा- 3 (अनिवार्य)
21. भाषा का भारतीय दर्शन: पतंजलि का परिचय महाभाष्य और भर्तृहरि वाक्यापद्य
22. वेदांत का अध्ययन: शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य
23. पंचतंत्र का अध्ययन: जीवन के पाठ का मूल मंत्र
24. भारतीय सौंदर्यशास्त्र – रस सिद्धांत
25. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस(कैफेटेरिया मॉडल में अन्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम)
26. विश्लेषणात्मक चिंतन (अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स)

1 संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - IV (विशेष पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

1 मुख्य पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

मूल पाठ्यक्रम

27. धर्मशास्त्र का परिचय : गौतम, मनु और याज्ञवल्क्य : से चयनित अंश

1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट) (छात्र निम्नलिखित में से किसी एक को चुन सकते हैं)

28. प्राचीन भारत के प्रमुख विचारकों का चयन करें: ब्रह्मगुप्त, आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कर, बाणभट्ट और अभिनवगुप्त
29. नागार्जुन और संन्यास की अवधारणा
30. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
31. संस्कृत भाषा- 4
32. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस(कैफेटेरिया मॉडल में अन्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम)
33. विश्लेषणात्मक चिंतन एवं अंतर्विषयी शोध (अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम)

1 संगोष्ठी (1 क्रेडिट)

1 शोध-निबंध (9 क्रेडिट)

स्नातकोत्तर और वैश्विक पीएच.डी. छात्रों के लिए अनुसंधान पद्धति कार्यशाला।

विद्यालय द्वारा शोध कार्य-प्रणाली पर एक व्याख्यान सीरीज का आयोजन किया गया। नीचे दिए गए समयानुसार पीएचडी शोधार्थियों के लिए अनुसंधान पद्धति पर आठ विशेष व्याख्यान-सत्र आयोजित किए गए। निम्नलिखित संकाय सदस्यों ने प्रत्येक में दो व्याख्यान दिए:

1. जी. मिश्रा: 9 मार्च 2022
2. श्याम फरत्याल: 10 मार्च 2022
3. अभय के सिंह : 14 मार्च 2022
4. सपना नरूला : 15 मार्च 2022

1. 2 मई, 2022 को एक शोध प्रगति संगोष्ठी आयोजित की गई, जहां पीएचडी कार्यक्रम में नामांकित छात्रों ने अब तक किए गए कार्यों के साथ-साथ उनकी शोध परियोजना की सामग्री और कार्यप्रणाली की प्रस्तुतियां दीं।

लघु अवधि के पाठ्यक्रम

एसबीएसपीसीआर और एसएचएस द्वारा संयुक्त रूप से 15 अप्रैल से 13 मई 2021 के दौरान 'नालंदा विरासत' पर एक ऑनलाइन लघु अवधि का पाठ्यक्रम आयोजित किया गया और दुनिया भर से लगभग 35 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण कराया था।

विद्यालय शैक्षणिक उपलब्धियां

पुस्तकें (अनुवाद सहित)	2
पुस्तकों में अध्याय	3
लेख	4
सम्मेलनों/संगोष्ठियों/आमंत्रित वार्ता/संसाधित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुति	6
पुरस्कार/शैक्षणिक पहचान/अनुदान	1
परियोजनाएं (आमंत्रित ऑनलाइन अनुदेश शामिल हैं)	2
पर्यवेक्षित परास्नातक शोध-निबंध	34

विद्यालय द्वारा अनुसंधान:

पुस्तकें

1. मिश्रा, गोदाबरीशा। *फिलॉसफी फॉर यू (संपादित)* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशन के लिए स्वीकृत (अंतिम संशोधन चरण में)।

2. ली. ब्रेंडा एचएक्स, *अभिधम्म संगहो के संदर्भ में नाम और रूप का मनोदैहिक अध्ययन (*प्रकाशन के लिए प्रस्तुत; प्रकाशक: बौद्धिस्ट वर्ल्ड प्रेस पब्लिशर्स)

पुस्तक में अध्याय

1. मिश्रा, गोदाबरीशा। "संकर की सत्ता मीमांसा विषयक व्याख्या और अद्वैतवाद का प्रश्न," एक विशेष खंड जिसका शीर्षक: *ईश्वर अथवा दिव्यता? व्यक्तित्व और अवैयक्तिकता के बीच, अद्वैतवाद तथा आस्तिकवाद से परे धार्मिक पारगमन* ,बर्नार्ड नित्शे, मार्कस ,मुकर द्वारा संपादित । पीपी. 345-367।
2. हलप्पा, नवीन जी. *नैदानिक निर्देश श्रृंखला जिसका शीर्षक "स्वास्थ्य सुरक्षा एवं कल्याण के लिए योग" [एक चिकित्सक का मार्गदर्शन] है।* अवसादग्रस्तता संबंधी विकार, योग और स्वाभाविक चिंता विकारों के लिए योग पर एक अध्याय लिखने के लिए आमंत्रित (रूटलेज प्रकाशक को प्रस्तुत)।
3. समदर्शी, प्रांशु। स्थानीय तीर्थस्थल, पवित्र स्थल का वर्णन तथा निर्माण: चंपारण के गांव में पूर्वजों की पूजा का एक विश्लेषण। "इन *मिथ्स एंड स्पेस,* शोनालीका कृत। न्यूयॉर्क और लंदन: रूटलेज (प्रस्तुति स्वीकृत)।

प्रकाशित पत्र

1. मिश्रा, गोदाबरीशा। "*सर्वमुक्ति- बोधिसत्व* और जीवनमुक्त के लिए सामाजिक स्थान*का* संदर्भ," *ब्रह्मविद्या,* खंड 87/2022 थियोसोफिकल सोसायटी ,मद्रास। (प्रकाशन के लिए स्वीकृत)
2. हलप्पा, नवीन जी। *जर्नल ऑफ बॉडीवर्क एंड मूवमेंट थेरेपी में प्रकाशन के लिए योग और खेल पर आधारित शीर्षक "मस्कुलोस्केलेटल चोटों/विकारों और मानसिक विकारों के लिए एक निवारक और प्रबंधन रणनीति के रूप में व्यायाम और खेल विज्ञान के भीतर योग का एकीकरण" की समीक्षा,* (समीक्षाधीन)
3. प्रकाशन के लिए मूल पत्र जिसका शीर्षक "वयस्क खिलाड़ियों के बीच तंत्रिका-संज्ञानात्मक कार्यों पर एक पूरक हस्तक्षेप के रूप में योग का प्रभाव" जर्नल ऑफ कॉम्प्लिमेंटरी एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन (डीजीजेसीआईएम) को प्रकाशन हेतु प्रस्तुत (समीक्षाधीन)।
4. आचार्य, कुमुद प्रसाद। रस के अनुसार मीटर का अनुप्रयोग: क्षेमेन्द्र का दृष्टिकोण। *धीमही, चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन शोध संस्थान की चिन्मय शोध पत्रिका* खंड। 12. 2021. पीपी .267-271, आईएसएसएन 3066-0976 :(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध)

सम्मेलनों/संगोष्ठियों /आमंत्रित वार्ताओं/वक्ता/संसाधित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुतिकरण

1. हलप्पा, नवीन जी। इंडियन एकेडमी ऑफ साइंटिफिक राइटिंग एंड रिसर्च, पुणे द्वारा आयोजित प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलनके एक भागके रूप में आमंत्रित वक्ता। उन्होंने यह प्रस्तुतिकरण जर्नल क्लब के महत्व पर दिनांक 25/12/2021 को 11.35-11.45 बजे के दौरान दिया।

2. आरवी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बैंगलोर द्वारा 6 और 7 जनवरी 2022 को आयोजित प्रबंधन छात्रों के लिए "न्यूरोसाइंस और न्यूरोमार्केटिंग टूल्स की मूल बातें" पर एक 2 घंटे की संगोष्ठी के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया।

3. समदर्शी, प्रांशु प्रतिनिधि वक्ता: "संरक्षण मंत्र और घातक रोगों का संयोजन: तांत्रिक बौद्ध पाठ्य स्रोतों से प्राप्तियां।", धम्म -धर्म परंपराओं पर 6वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन, राजगीर: इंडिया फाउंडेशन और नालंदा विश्वविद्यालय, 8 नवंबर 2021।

4. आस्ट्रेलियन साइंस फंड (एएसएफ), वियना, आस्ट्रिया 'द लैंटर्न-डोम मंडला सीलिंग इन बुद्धिस्ट आर्किटेक्चर' नामक परियोजना की समीक्षा के लिए संसाधित व्यक्ति। समीक्षा रिपोर्ट 9 दिसम्बर 2021 को प्रस्तुत की गई।

5. "तंत्र की उत्पत्ति और विकास" विषय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) मूक्स (MOOCS) स्वयं (SWAYAM) के एक ऑनलाइन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए शिक्षण मॉड्यूल तैयार करने के लिए संसाधित व्यक्ति। (31मार्च 2022 को प्रस्तुत)

6. ली, ब्रेण्डा। समानेरा और विपश्यना ध्यान प्रशिक्षक के रूप में एक लघु अवधि-एक सप्ताह (25 दिसम्बर 2021 से 01 जनवरी 2022) का सामनारा प्रशिक्षण, सुकनाचारी, त्रिपुरा, भारत।

पुरस्कार/शैक्षणिक पहचान/अनुदान

1. हलप्पा, नवीन जी। रेड (RED) टॉक्स डेली इंटरनेशनल, हैदराबाद द्वारा दिनांक 28/02/2022 को योग और मनश्चिकित्सा में भारत एशियाई- अनुसंधान उत्कृष्टता पुरस्कार-2022

परियोजनाएं (जारी)

1. मिश्रा, गोदाबरीशा। भारतीय दर्शन के विश्वकोश में अद्वैत वेदांत पर परियोजना रिपोर्ट को अंतिम रूप प्रदान करना, खंड 27 (मुख्य संपादक कार्ल एच .पॉटर)।

2. हलप्पा, नवीन जी " किशोर स्वस्थ स्वयंसेवकों के बीच साइको-न्यूरो-अंतःस्रावी कार्यों पर योग के दीर्घकालिक प्रभाव", विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित (सत्यम योजना) समापन तिथि 28/12/2023 (संभावित)

विविध

1. मिश्रा, गोदाबरीशा। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की फेलोशिप चयन समिति के सदस्य

2. बौद्ध और भारतीय अध्ययन, सांची विश्वविद्यालय की फेलोशिप चयन समिति के सदस्य

3. हलप्पा, नवीन जी। फैलोशिप :नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी (एनआईएन) पुणे से एडवांस एक्यूपंक्चर में 6 महीने की फेलोशिप सफलतापूर्वक पूरी की। इसके अलावा, दिसंबर 2021 में 3 दिनों के लिए एक व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में प्रतिभागिता

4. राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर के आमंत्रण पर योग और प्राकृतिक चिकित्सा पर पीएचडी के प्रवेश प्रश्न पत्र का संयोजन।
5. जर्नल ऑफ बॉडीवर्क एंड मूवमेंट थेरेपी द्वारा प्रकाशित एक शोध पत्र की समीक्षा और एक नियमित समीक्षक के रूप में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ योग (आईजेओआई) द्वारा प्रकाशित 03 शोध पत्रों की समीक्षा की।
6. संकाय/स्टाफ/विद्यार्थियों के लिए 2 माह का योग शिविर (वसंत सेमेस्टर)

स्नातकोत्तर के छात्रों (बैच 2019-21) द्वारा प्रस्तुत शोध-निबंध

1. बुई थी दीम थ्यू । हिंदू धर्म में भगवद गीता और बौद्ध धर्म में धम्मपद के अंतर्संबंधों में एक अध्ययन
2. चैंथला औंफिवोंग । लाओ बौद्ध परंपरा और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच तुलना: इसके प्रभाव का एक अध्ययन
3. डू क्वांग होआंग थांग । सिगालोवाद सुत्त के अनुसार पारिवारिक शिक्षा का कर्तव्य
4. डू थी किम नगन। सब्बासव सुत्त में दर्शाएँ गईं प्राचीन बौद्ध आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रविधियां: एक अध्ययन
5. हो थिओ जुआन। भिक्खुनी संघा को शाही संरक्षण
6. हुइन्ह काओ नहुतो क्वांग। नश्वरता और निःस्वार्थ: सुख कहाँ है? उदयनवर्ग में चयनित अध्यायों का संस्कृत और तिब्बती से एक टिप्पणी अनुवाद
7. गवांग ज़ेपा। शून्यता पर नागार्जुन का प्रतिपादन: तिब्बती मूलाध्यायमाकारिका पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन
8. गुयेन ली। चंपा बौद्ध धर्म का सांस्कृतिक गठन और विकास
9. कोंगपोप पनयालर्टसिनपैसार्न। महायान बौद्ध धर्म में काया का सिद्धांत और थेरवाद के लिए इसकी प्रासंगिकता
10. श्याम जॉर्ज। आत्मा और मन के तत्वमीमांसा: भारतीय वेदों में एक अध्ययन
11. ट्रूओंग न्गोक होआ । बौद्ध धर्म में दृष्टिकोण: ब्रह्मांड के जीवन पर पांच समग्र दृष्टिकोण
12. डुओंग है येन। आरम्भिक बौद्ध धर्म और धम्मपद में मन से संबंधित पालि ग्रंथ और शिलालेख

पीएचडी पर्यवेक्षण

1. ले दीन्हो कुओंग। बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अध्ययन :भारत में शुरुआत से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक (पर्यवेक्षक और सह-पर्यवेक्षक: अभय कुमार सिंह और ब्रेंडा हुआंग जुआन ली)
2. गुयेन थिओ हंह। प्रारंभिक बौद्ध धर्म में शून्यता की अवधारणा का विकास : एक अन्वेषण (पर्यवेक्षक: प्रांशु समदर्शी)
3. सौरजितो घोष। भारत के परिदृश्य में धर्म का अभ्यास करने वाली महिला मठवासी परंपराओं के सशक्तिकरण के लिए विशेष संदर्भ में बौद्ध आध्यात्मिक और सामाजिक लोकाचार संघ में भिक्षुणी का योगदान (पर्यवेक्षक और सह पर्यवेक्षक: आनंद सिंह और एलोरा त्रिबेदी)
4. गुयेन थी न्गोक हुआंग । बौद्ध परंपरा में महिलाओं की एक सामाजिक-ऐतिहासिक एवं चित्रात्मकता (पर्यवेक्षक एलोरा त्रिबेदी)

विद्यालय के कार्यक्रम

एसबीएसपीसीआर के विशिष्ट व्याख्यान

एसबीएसपीसीआर ने 22 और 23 सितंबर को एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा, विजिटिंग प्रोफेसर, आईआईटी, भुवनेश्वर द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन्होंने भारतीय दर्शन और समकालीन समय के साथ इसके संबंध पर आधारित विषय पर दो व्याख्यान दिए।
अपने व्याख्यानों में, प्रो. मिश्रा ने भारतीय ग्रंथों की प्रणाली (*शास्त्र*) के पहलुओं और आधुनिक समय में उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय बौद्धिक प्रणाली के पौराणिक विचलन के तरीकों और इसके लिए पश्चिमी दृष्टिकोण पर भी जोर दिया। व्याख्यान श्रंखला के पहले दिन प्रो. मिश्रा ने संस्कृत शब्द *दर्शन* और उसके समकक्ष अंग्रेजी शब्द फिलासॉफी में अंतर बताया। उनके व्याख्यान के बाद आध्यात्मिक प्रश्नों पर भारतीय दृष्टिकोण की विशिष्टता पर ध्यान केंद्रित किया गया और भारत की स्वतंत्रता से पहले भारत के दर्शन को पश्चिमी दर्शन के समान क्यों नहीं माना गया, इस पर विस्तृत चर्चा हुई।

प्रो. अरिंदम चक्रवर्ती द्वारा एसबीएसपीसीआर विस्तार व्याख्यान

एसबीएसपीसीआर ने चौथे सेमेस्टर पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रम कोड C2-3, पाठ्यक्रम का शीर्षक: बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत: मध्यमिका परंपराएं) के एक भाग के रूप में प्रो. अरिंदम के चार विस्तार व्याख्यान आयोजित किए। ये चारों व्याख्यान ऑनलाइन आयोजित किए गए, और प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती ने ये व्याख्यान 11, 12, 18 और 19 अप्रैल 2022 को पूर्वाह्न 11:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे IST के दौरान प्रस्तुत किए। ये व्याख्यान दूसरी शताब्दी के पूज्य बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन द्वारा अपने पाठ मूलमाध्यामाकारिका में उद्धृत चार गुना निषेधात्मकता पर आधारित थे। एसबीएसपीसीआर के छात्रों ने समृद्ध वार्ता और महत्वपूर्ण चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रो. जे.ई. एम. हौबेन द्वारा एसबीएसपीसीआर विस्तार व्याख्यान

प्रथम सेमेस्टर, एमए हिंदू अध्ययन पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रम का शीर्षक: वेदों का परिचय) के एक भाग के रूप में प्रो. जे.ई.एम. हौबेन के चार विस्तार व्याख्यान आयोजित किए गए। सभी चार व्याख्यान निम्नलिखित विषयों और तिथियों पर ऑनलाइन मोड के माध्यम से आयोजित किए गए थे:

01.04.2022	वैदिक ग्रंथ और वैदिक विद्यालय: एक सिंहावलोकन
08.04.2022	यज्ञ और व्रत: सफलता और परिवर्तन के लिए वैदिक नियम
29.04.2022	वैदिक कवियों की दृष्टि और प्रेरणा
06.05.2022	वैदिक मंत्र, वैदिक भाषा और संस्कृत,पालि और अवेस्तान

पहले व्याख्यान में प्रो. हौबेन ने उन सभी वैदिक ग्रंथों की एक रूपरेखा प्रस्तुत की जो उनके लिए ग्रंथों के रूप में अपने निशान छोड़ गए हैं, जिनमें कुछ ऐसे ग्रंथ भी शामिल हैं जिन्हें हाल ही में खोजा गया है। प्रो. हौबेन वेद के

कर्मकाण्ड भाग यथा- त्याग यज्ञ और व्रत पर जोर दिया जिसमें उन्होंने वैदिक परंपरा के बारे में उल्लेख किया है जिसमें स्वयं वैदिक अनुष्ठानों (*यज्ञों*) के प्रदर्शन संबंधी जानकारी शामिल हैं , अपने दूसरे भाषण में इससे संबन्धित परंपरा पर प्रकाश डाला है। प्रो. हौबेन के तीसरे व्याख्यान में विभिन्न वैदिक मंत्रों से प्रेरित विचारों पर मंथन किया गया और उनकी तुलना अवेस्तान परंपरा से की गई। अपने चौथे व्याख्यान में उन्होंने वैदिक ग्रंथों और उसकी भाषा को समझने के लिए विभिन्न विचारधाराओं (न्याय , वैशेषिका, मीमांसा, व्याकरण आदि) पर जोर दिया, छात्रों, स्कूल और स्कूल के बाहर के शिक्षकों ने व्याख्यान श्रृंखला में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रो. दिवाकर आचार्य द्वारा एसबीएसपीसीआर विस्तार व्याख्यान

एसबीएसपीसीआर ने प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए प्रदान किए जाने वाला, एमए हिंदू अध्ययन पाठ्यक्रम (इतिहास ग्रंथों का परिचय : रामायण और महाभारत और पुराणों का परिचय : विष्णुपुराण और अग्निपुराण) के एक एक भाग के रूप में प्रो. दिवाकर आचार्य, स्प्लाडिंग प्रोफेसर, ईस्टर्न रिलीजन्स एंड इथिक्स के 4 हिन्दू अध्ययन विस्तार व्याख्यान आयोजित किए। ये व्याख्यान 25 और 26 अप्रैल 2022 को सुबह 11 बजे से दोपहर 01 बजे तक वर्चुअल मोड के माध्यम से आयोजित किए गए थे। प्रत्येक दिन प्रो. आचार्य ने 2 व्याख्यान दिए।

व्याख्यान के विषय निम्नलिखित हैं।

1. 25.04.2022

   व्याख्यान-1 सनातन ग्रंथ के रूप में जनता के लिए इतिहास और पुराण

   व्याख्यान-2 संस्कृत इतिहास-पुराण साहित्य का क्रमिक-विकास

2. 26.04.2022

   व्याख्यान -3 चौगुनी मानव उपलब्धि के उद्देश्य के लिए महाकाव्य और पुराण (*पुरुषार्थ*)

   व्याख्यान-04 इतिहास और पुराणों के अनुसार नैतिक निर्णय के आधार

प्रो. आचार्य ने वैदिक काल से इतिहास काल तक की परंपरा तथा इतिहास और पुराण सनातन संस्कृति और सभ्यता के किस प्रकार अभिन्न अंग हैं, इस पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत और रामायण के विभिन्न उद्धरणों और उदाहरणों को बताते हुए इतिहास और पुराण के कुछ अज्ञात पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि व्यक्ति को वेदों को फिर से अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए, इतिहास और पुराणों की सहायता से वैदिक सत्य की व्याख्या करनी चाहिए । उन्होंने पौराणिक स्रोतों के उदाहरणों के साथ इतिहास के प्रतीकवाद को पांचवें वेद के रूप में भी चित्रित किया। व्याख्यान श्रृंखला में विद्यालय और विद्यालय के बाहर के छात्रों, शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

हरमोहन मिश्रा द्वारा एसबीएसपीसीआर विस्तार व्याख्यान

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्मों के विद्यालय ने कश्मीर शैववाद और अभिनवगुप्त के *बोधपंचदशिका* पर व्याख्यान की एक श्रृंखला आयोजित की है, जो 'धार्मिक ग्रंथों (वैष्णव, शैव और बौद्ध ग्रंथों से चयन) की तुलनात्मक पठन पाठ्यक्रम में बौद्ध अध्ययन,दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्मों में एमए के दूसरे सेमेस्टर के छात्रों के लिए एक मॉड्यूल बनाता है । उन्होंने 5 और 6 अप्रैल 2022 को *कश्मीर* शैववाद के दर्शन और इसमें अभिनवगुप्त के योगदान पर व्याख्यान दिया और 18 और 19 अप्रैल 2022 को अभिनवगुप्त के बोधपंचदशिका (ज्ञान पर पंद्रह छंद) का पाठ पढ़ाया । उन्होंने कश्मीर शैववाद का संक्षिप्त परिचय दिया और यह दक्षिण के शैव सिद्धांत(शैव धर्म का एक अन्य विद्यालय) से कैसे भिन्न है, पर चर्चा की । उन्होंने कश्मीर शैववाद परा, प्रत्यय, सिती, परमशिव शक्ति आदि यथा में प्रयुक्त तकनीकी अवधारणाओं पर चर्चा की । विद्यालय और विद्यालय के बाहर के छात्रों, शिक्षकों ने व्याख्यान श्रृंखला में सक्रिय रूप से भाग लिया ।

क्षेत्र यात्राएं

राजगीर में पहा.ड़ियों व वानिकी के संरक्षण के लिए फील्ड ट्रिप

28 अगस्त 2021 को एसबीएसपीसीआर के छात्रों ने राजगीर के आसपास की विभिन्न पहाड़ियों की एक फील्ड ट्रिप में भाग लिया और पर्यावरण, पारिस्थितिकी और इससे संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। छात्रों को पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए आवश्यकता और मानवीय दायित्वों के बारे में परंपरा और हमारे पूर्वजों की जागरूकता के बारे में बताया गया। उन्होंने देखा कि कैसे स्थानीय समुदाय के लोग पर्यटन संबंधी गतिविधियों के साथ-साथ अपनी विरासत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। छात्रों ने राजगीर की वैभरगिरी पहाड़ियों का अन्वेषण और पहाड़ी वन क्षेत्र से संबंधित पर्यावरण और सांस्कृतिक पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया और इसके संरक्षण पर विचार-विमर्श किया।

राजगीर में हेरिटेज वाक

एसबीएसपीसीआर के छात्रों ने 10 सितंबर, 2021 को विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित हेरिटेज वॉक में भाग लिया। यह छात्रों के बीच विरासत जागरूकता और संरक्षण के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। यह हेरिटेज वॉक लगभग 6 किमी लंबी थी जो ब्रह्म कुंड से शुरू हुई थी। प्रतिभागियों ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थलों यथा- जारादेवी मंदिर, मनियार मठ, सोन भंडार गुफा और जरासंध अखाड़ा इत्यादि को कवर किया। इस हेरिटेज वॉक का समापन सूफी दरगाह मखदूम कुंड में हुआ। छात्रों को इन स्थानों के ऐतिहासिक, पुरातात्विक, दार्शनिक और पारिस्थितिक महत्व के बारे में वॉक-लीडर (जिनमें एसबीएसपीसीआर के पीएचडी के छात्र सम्मिलित थे) द्वारा जानकारी दी गई। इस वॉक ने पूर्ण अनुभव प्रदान किया क्योंकि छात्रों ने विरासत के पहलुओं को संरक्षित करने के लिए स्थानीय समुदायों के साथ सार्थक चर्चा की जो उनके अतीत के साथ-साथ उनकी पहचान को भी दर्शाता है।

बोधगया का शैक्षिक क्षेत्र-भ्रमण

एसबीएसपीसीआर द्वारा छात्रों के लिए 17 अप्रैल 2022 (रविवार) को बोधगया की एक शैक्षिक क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। इस यात्रा में कुल छब्बीस छात्रों और तीन संकाय सदस्यों ने भाग लिया। अंतरिम

परिसर और संबंधित छात्रावासों से छात्रों और संकाय सदस्यों के पिकअप की व्यवस्था की गई, और यह ट्रिप सुबह 7 बजे परिसर से रवाना हुई।

डुंगेश्वरी गुफा की यात्रा

यह समूह सुबह 9:30 बजे डुंगेश्वरी पहुंचा और एक छोटी पहाड़ी पगडंडी से दुंगेश्वरी गुफा मंदिरों के दर्शन किए। छात्रों को गुफा मंदिर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व और इस स्थल के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई। इस भ्रमण के पश्चात, समूह ने नाश्ता किया और बोधगया के लिए प्रस्थान किया।

महाबोधि मंदिर और बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान

यह समूह लगभग पूर्वाहन 10 बजे बोधगया पहुंचा, बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति के स्वागत केंद्र में इनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। मंदिर प्रबंधन समिति ने महाबोधि मंदिर के दर्शन की व्यवस्था की। सभी ने बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान किया और एक समूह ने मंदिर और उसके आसपास के क्षेत्र का निर्देशित दौरा किया।

एसबीएसपीसीआर के छात्र बोधि वृक्ष के नीचे - बोधगया का क्षेत्र भ्रमण

मध्यमका परंपरा और नालंदा पर चर्चा

इस समूह ने तत्पश्चात तिब्बती मंदिर और मठ गदेन फेलगेलिंग नामग्याल दत्संग का दोपहर में दर्शन किया और मठ द्वारा आयोजित दोपहर का भोजन ग्रहण किया। मध्याह्न भोजन के बाद मध्यमका परंपरा पर और नालंदा

पर पद्मश्री पुरस्कार विजेता प्रो. गेशे गवांग समतेन (पूर्व तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ के कुलपति) के वार्ता का आयोजन किया गया। छात्रों ने इस वार्ता में सक्रिय रूप से प्रतिभागिता की।

जप और प्रार्थना सत्र

इसके बाद समूह ने मठ के मंदिर और प्रार्थना कक्ष का दौरा किया, जहां उनके लिए विशेष मंत्रोच्चार और प्रार्थना की व्यवस्था की गई थी। इस समूह ने मठ की एक निर्देशित यात्रा के बाद भिक्षुओं द्वारा प्रार्थना और मंत्रोच्चार में भाग लिया।

रूट्स इंस्टीट्यूट, बोधगया के निदेशक के साथ संवाद-सत्र

मठ के समापन सत्र में मठ के हॉल में आयोजित एक संवाद-सत्र शामिल था। वेन. त्सेन ला, एक बौद्ध नन और रूट्स इंस्टीट्यूट, बोधगया के निदेशक ने इस सत्र का संचालन किया। यह यात्रा शाम 7:30 बजे छात्रों के राजगीर वापस अपने-अपने आवासों पर पहुंचने के साथ संपन्न हुई।

इस यात्रा का उद्देश्य छात्रों को बौद्ध दर्शन और तीर्थस्थल केंद्रों और उसके आसपास घटित प्रथाओं के बारे में प्रासंगिक समझ प्रदान करना था। इस यात्रा के दौरान छात्रों को एक सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ केंद्र, इसके इतिहास, परिदृश्य, स्मारकों और मूर्तियों से अवगत कराया गया। उन्होंने अनुष्ठान, ध्यान और समृद्ध वार्ता और व्यावहारिक चर्चाओं में भी भाग लिया।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय वैश्विक स्तर पर मानव समाज द्वारा झेले जा रहे वर्तमान पारिस्थितिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर केंद्रित है। ये पाठ्यक्रम कक्षा शिक्षण, निर्दिष्ट कार्य समीक्षा और प्रस्तुतियों, प्रायोगिक और क्षेत्र-कार्य के माध्यम से पढ़ाए जाते हैं। कक्षा-सत्र में विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले प्रासंगिक केस स्टडीज, पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय मुद्दों, चुनौतियों और सफलता की कहानियों पर विस्तृत और चर्चा की जाती है। प्रस्तुति कौशल और आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाने के लिए, छात्रों को नियमित रूप से संगोष्ठी में प्रस्तुतिकरण हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

विद्यालय विश्वविद्यालय के शैक्षणिक संरचना का अनुसरण करता है। सेमेस्टर- I में 4 मुख्य और 1 ऐच्छिक के साथ आधार पाठ्यक्रम शामिल हैं। सेमेस्टर-II में 3 मुख्य और 2 ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के साथ सेतु पाठ्यक्रम हैं। सेमेस्टर- III 2 मुख्य विषयों और 3 ऐच्छिक के माध्यम से उन्नतऔर केंद्रित शिक्षा पर जोर देता है। चौथा सेमेस्टर अंतिम सेमेस्टर है, जहां छात्र विशेषज्ञ संकाय की देखरेख में अपनी रुचि का शोध-प्रबंध करते हैं। शोध प्रबंध पर अधिक जोर देने के लिए इस सेमेस्टर में केवल एक मुख्य और एक वैकल्पिक विषय है। छात्रों ने अपने शोध प्रबंध के लिए प्राथमिक और माध्यमिक डेटा एकत्र करने के लिए क्षेत्र भ्रमण किया। वैश्विक महामारी की स्थिति और यात्रा प्रतिबंध के कारण, नियमित कक्षाएं, संगोष्ठी प्रस्तुतियाँ और शोध प्रबंध ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजित किए गए।

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों का विवरण नीचे दिया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर में छात्र एक विषय-आधारित पाठ्यक्रम पूरा करते हैं।

पाठ्यक्रम

एमएससी

आधार पाठ्यक्रम

मूल पाठ्यक्रम

1. पारिस्थितिकी और पर्यावरण का परिचय
2. ऊर्जा अध्ययन और जलवायु विज्ञान
3. पर्यावरण और समाज
4. रिमोट सेंसिंग और जीआईएस की सामान्य जानकारी
5. संगोष्ठी-1

ऐच्छिक / कैफेटेरिया मॉडल

1. पर्यावरण प्रदूषण
2. नागरिक विज्ञान
3. पर्यावरण क्षेत्र

अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम

1. **विश्लेषणत्मक चिंतन**
2. **संधारणीय प्रबंधन**
3. **अनुसंधान पद्धति और संचार**

सेतु पाठ्यक्रम

मूल पाठ्यक्रम

1. पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान
2. आपदा प्रबंधन
3. जल संसाधन प्रबंधन
4. संगोष्ठी-2

ऐच्छिक / कैफेटेरिया मॉडल

1. पर्यावरण जल विज्ञान
2. शहरी पर्यावरण: वैश्वीकरण जगत में एशियाई शहर
3. उन्नत आरएस और जीआईएस प्रौद्योगिकियां
4. पर्यावरण कानून और नीतियां
5. पर्यावरण मूल्यांकन और हरित लेखा
6. कृषि वानिकी और बीज पारिस्थितिकी

अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम

1. विशलेषणातमक चिंतन और आंतर्विषयी अनुसंधान

उन्नत पाठ्यक्रम

मूल पाठ्यक्रम

1. जलवायु परिवर्तन
2. ऊर्जा विज्ञान
3. संगोष्ठी-3

ऐच्छिक / कैफेटेरिया मॉडल

1. जल विज्ञान
2. तटीय और समुद्री पर्यावरण
3. रिमोट सेंसिंग और जीआईएस का अनुप्रयोग
4. प्रकार्यात्मक पारिस्थितिकी
5. पर्यावरण और विष विज्ञान जैव प्रौद्योगिकी
6. एशिया में पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और समाज
7. जीवन चक्र आकलन और परिधीय अर्थव्यवस्था

अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम

1. विशलेषणातमक चिंतन ।

विशिष्ट पाठ्यक्रम

मूल पाठ्यक्रम

1. कचरा प्रबंधन
2. संगोष्ठी-4

ऐच्छिक / कैफेटेरिया मॉडल

1. जैव विविधता और संरक्षण
2. पर्यावरणीय नैतिकता
3. पर्यावरण प्रभाव निर्धारण
4. पर्यावरण डाटा विश्लेषण

अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम

5. विश्लेषणात्मक चिंतन और अंतर्विषयी अनुसंधान

वैश्विक पीएचडी

चूंकि पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान कोई पीएच.डी. प्रवेश नहीं हुए, इसलिए वैश्विक पीएच.डी. के लिए कोई पाठ्यक्रम प्रस्तावित नहीं किया गया है। हालांकि, हमारे विद्यालय के वर्तमान पीएच.डी.छात्रों ने नियमित रूप से रिपोर्ट और सेमिनार के माध्यम से अपना कार्य प्रस्तुत किया।

संकाय

क्रम सं	नाम	पदनाम
1	सरनाम सिंह	प्रोफेसर और डीन
2	सोमनाथ :बंद्योपाध्याय	एसोसिएट प्रोफेसर
3	श्याम एस .फरत्याल	एसोसिएट प्रोफेसर
4	किशोर के . धवला	सहायक प्रोफेसर
5	प्रभाकर शर्मा	सहायक प्रोफेसर
6	अविराम शर्मा	सहायक प्रोफेसर
7	सायन भट्टाचार्य	सहायक प्रोफेसर
8	प्यारीमोहन महाराणा	टीचिंग फेलो
9	चाँद चाँद हिलोयधारी	टीचिंग फेलो

विद्यालयी शैक्षणिक उपलब्धियां

विशेषज्ञ-समीक्षित लेख	47
पुस्तक अध्याय	14
आमंत्रित वार्ता/सम्मेलन/संगोष्ठी प्रस्तुतियों में संकायों की भागीदारी	13
संकायों की शैक्षिक पहचान (एक पैनलिस्ट के रूप में , अतिथि संपादक, विशेषज्ञ-समीक्षक, चयन समितियों के सदस्य, वैज्ञानिक सोसायटी के सदस्य, आदि)	31
एमएससी/पीएचडी शोध प्रबंध / थीसिस पर्यवेक्षण	27
क्षेत्र भ्रमण	3

विद्यालय द्वारा अनुसंधान:

विशेषज्ञ-समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र

1. रोसबख, एस। ,चलमंडियर, एल। ,**फरत्याल, एस।,** और पॉस्क्लोड, पी। (2022)। इंफेरिंग कम्युनिटी एसेम्बली प्रोसेसज फ्रॉम फंक्शनल सीड ट्रेट वैरिएशन अलॉंग एलिवेशन ग्रेडिएंट। जर्नल ऑफ ईकोलॉजी। https://doi.org/10.1111/1365-2745.13955

2. शाह, एस. जेड., रशीद, ए., एल-केब्लावी, ए., गैरोला, एस., **फरत्याल, एस. एस,** गुल, बी., और हमीद, ए। (2022)। इन्टर-प्रोविएन्स वैरिएशन इन सीड जर्मिनेशन रेस्पान्स ऑफ कैश क्रॉप हेलोफाइट सुएडा फ्रुटिकोसा टू डिफरेंट एबिऑटिक फैक्टर्स । फ्लोरा, 152079।
3. लेम्ब्रेच्ट्स, जे. जे., वैन डेन हूजेन, जे., आल्टो, जे., एशक्रॉफ्ट, एम.बी, डी फ्रेन., पी., केम्पिनेन, **जे** .,...... फरत्याल, **एस. एस.,....** और हिक, डी. एस। (2022) मिट्टी के तापमान का वैश्विक मानचित्र। ग्लोबल चेंज बायोलॉजी, 28(9), 3110-3144।
4. मास्कोवा, टी., **फरत्याल, एस.एस.,** अबेदी, एम ., बार्टेलहाइमर, एम., और पॉस्क्लोड, पी. (2022)। मृदा नमी स्तर और सब्सट्रेट प्रकार मृदा बीज बैंक में बीज की लंबी अवधि के जीवनकाल को निर्धारित करते हैं। *प्लान्ट सॉइल* 477, 475-485 (2022)। https://doi.org/10.1007/s11104-022-05449-7
5. दसनायक, बी.आई., जिनदास, आर. एन., जयसूर्या, के. एम. जी. जी., और **फरत्याल, एस. एस.,** (2022) सीड इकोफिजियोलॉजी ऑफ एलीफैन्ट एप्पल (डिलनिया इंडिका) भारतीय हिमालय क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजाति। पारिस्थितिकी अनुसंधान। https://doi.org/10.1111/1440-1703.12312.

6. **फरत्याल, एस.एस.,** रोसबख, एस., ग्रुबर, एम., और पॉस्क्लोड, पी. (2022) घर की मीठी और कस्तूरी सुगंध, आर्द्रभूमि में बायोजेनिक एथिलीन से उपयुक्त बीज अंकुरण। प्लांट बायोलॉजी, 24(2), 278-285।

7. हमीद, ए., एल -केब्लवी, ए., अलजस्मी, एम., गैरोला, एस., **फरत्याल, एस. एस.,** मोसा, के. ए., और सोलिमन, एस। (2021) बहुउद्देशीय विदेशज पौधा प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा के बीज अंकुरण के दौरान बीज उद्गम स्थल, थर्मोपेरियोड और फोटोपेरियोड कम पानी संभावित सहनशीलता को प्रभावित करते हैं । शुष्क वातावरण अनुसंधान पत्रिका, 195,104627।

8. कुमार, आर.; वर्मा, ए.; रकीब, एम.आर.जे.; गुप्ता, पी.के.; **शर्मा, पी.;** गर्ग, ए.; गिरार्ड, पी। अमीनाभावी, टी. एम. 2022 । बायोचार के माध्यम से सूक्ष्म नैनो प्लास्टिक के सोखने का गुण: दूषित पारिस्थितिक तंत्र में सह-अस्तित्व, परिणाम और चुनौतियां। साइ. टोटल एनवायरन. 159097. doi: 10.1016/j.scitotenv.2022.159097

9. अल नाहियन, एस.; रकीब, एम.आर.जे.; कुमार, आर.; हैदर, एस.एम.बी; **शर्मा, पी। 2022** मोहेशखली नदी प्रणाली, बंगाल की खाड़ी के तलछट और सतही जल में माइक्रोप्लास्टिक्स का वितरण, विशेषताओं और जोखिम निर्धारण का विश्लेषण साइ. टोटल एनवायरन. 855:158892।

10. **शर्मा, ए.; महाराणा, पी;.** साहू, एस.; **शर्मा, पी** । 2022। दक्षिण बिहार, भारत में पर्यावरण परिवर्तन और भूजल विविधता । ग्राउंड वा. सस्टेन. डेव. । 19: 100846।

11. अभिषेक, के.; श्रीवास्तव, ए.; विमल, वी.; गुप्ता, ए. के.; भुजबल, एस. के.; बिस्वास, जे. के., सिंह, एल.; पांडे, ए.; **शर्मा, पी.;** कुमार, एम। 2022। ग्रीनहाउस गैस के निम्नीकरण, संदूषक स्थिरीकरण और मृदा उर्वरता वृद्धि के लिए बायोचार अनुप्रयोग: एक अत्याधुनिक समीक्षा। साइ. टोटल एनवायरन. 853:158562।

12. कुमार, आर.; **शर्मा, पी.;** यांग, डब्ल्यू.; शांग, जे.; सिलनपा, एम.; भट्टाचार्य, पी.; विथानगे, एम.; मैती, जे. पी. 2022। फ्लोराइड दूषित पानी के उपचार की अत्याधुनिक प्रगति: परिवहन अध्ययन द्वारा प्रायोगिक व्यवहार्यता और बायोचार-आधारित सामग्रियों की पुन: प्रयोज्यता।एनवायरन. रेस. 214(4):114043.

13. यान, सी.; ली, वाई,; चेन, क्यू.; **शर्मा, पी.;** ली, बी.; शांग, जे। 2022। जलीय और मृदा वातावरण में बायोचार कोलाइड्स के परिवहन और विघटित कार्बनिक पदार्थ काओलिनाइट और आयरन ऑक्साइड का एकत्रीकरण पर प्रभाव। केमोस्फीयर, 306: 135555।

14. यान, सी.; **शर्मा, पी.;** चेन, क्यू.; ली, बी.; शांग, जे। 2022। कपल्ड इम्पैक्ट ऑफ प्रोटीन्स विद डिफरेंट मॉलीकुलर वेट एंड सरफेस चार्जेस ऑन TiO_2 मोबिलिटी। एनवायरन. साइस नैनो, 9: 2773-2787।

15. कुमार, आर.; सिन्हा, आर.; रकीब, एम. आर. जे.; पाधा, एस.; भट्टाचार्य, एस.; धर, ए.; **शर्मा, पी।** 2022। बंगाल की खाड़ी के सुंदरबन डेल्टा में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण भार। जे. हजार्ड. मैट. एडवांस, 7: 100099।

16. सिन्हा, आर.; कुमार, आर.; **शर्मा, पी.;** कांत, एन.; शांग, जे.; अमीनाभवी, टी.एम. 2022। बायोचार आधारित अवशोषक के माध्यम से हेक्सावलेंट क्रोमियम का निष्कर्षण: अत्याधुनिक, चुनौतियां और भावी परिप्रेक्ष्य । जे. एनवायरन. मैनेज। 317:115356।

17. वानी, आई.; कुशवाहा, वी.; गर्ग, ए.; कुमार, आर.; नाइक, एस.; **शर्मा, पी।** मिट्टी की मजबूती पर बायोचार के प्रभाव की समीक्षा: जियोइंजीनियरिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में बायोचार के उपयोग के अन्वेषण की दिशा में एक प्रयास। बायोमास कंवर्ज. बायोरेफिन.डोओआई: 10.1007/s13399-022-02795-5

18. अल नाहियन, एस.; रकीब, एम.आर.जे; हैदर, एसएमबी.; कुमार, आर.; मोहसेन, एम.; **शर्मा, पी.;** खांडाकर, एम.यू 2022। बंगाल की खाड़ी में सेंट मार्टिन द्वीप के सतही जल और तलछट में माइक्रोप्लास्टिक्स की घटना, स्थानिक वितरण और जोखिम मूल्यांकन। समुद्री प्रदूषण बुलेटिन 179: 113720।

19. शंकर, यू.; दास, एस.बी.; कुमार, वी.; कुमार, एन.; कुमार, आर.; सिंह, आर.के; **शर्मा, पी।** 2022। स्टडीज ऑन स्ट्रक्चरल, मैग्नेटिक एंड बैंड गैप इंजीनियरिंग ऑफ नावेल Ag+ मॉडिफाइड $MgFe_2O_4$ नैनोमैटेरियल्स प्रीपेयर्ड बाई लो कॉस्ट सॉल-जैल मेथड फॉर मल्टीफंक्शनल एप्लीकेशन। जे. सुपरकंड. नवं. मैग्न । 35:1937-1960।

20. कुमार, आर.; मन्ना, सी.; पाधा, एस.; वर्मा, ए.; **शर्मा, पी.;** धर, ए.; घोष, ए.; भट्टाचार्य, पी. 2022। माइक्रो (नैनो) प्लास्टिक प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य :प्लास्टिक मनुष्यों के लिए किस प्रकार कार्सिनोजेनेसिस का कारण बन सकता है? केमोस्फीयर 298:134267।

21. कुमार, आर.; सिंह, एस.; कुमार, आर.; **शर्मा, पी।** 2022। बिहार, भारत के शेखपुरा जिले में सुरक्षित पेयजल और सिंचाई जल आपूर्ति के लिए भूजल गुणवत्ता लक्षण वर्णन: एक भू-स्थानिक दृष्टिकोण। फ्रन्ट। वाटर: एनवायरन. जल गुणवत्ता 4: 848018।

22. **शर्मा, पी**.; वर्मा, ए.; **शर्मा, ए.;** वर्मा, पी.; **बंद्योपाध्याय, एस**। 2022। जलभृत भंडारण और रिकवरी के लिए एक एकीकृत साइट चयन मानदंड। जे. इरिग। ड्रेनेज इंजी .148(5): 04022009।

23. शर्मा, पी.के.; कुमार, आर.; सिंह, आर.के.; **शर्मा, पी.;** घोष, ए। 2022। बायोचार आधारित सामग्री का उपयोग कर आर्सेनिक हटाने पर समीक्षा। ग्राउंडव। सस्टेन. डेव. 17: 100740।

24. पाधा, एस.; कुमार, आर.; धर, ए.; **शर्मा, पी।** 2022। उच्च ऊंचाई वाले पारिस्थितिक तंत्र में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण: दूरदराज के क्षेत्रों में माइक्रोप्लास्टिक के स्रोत, निष्कर्षण और वितरण पर एक समीक्षा। एनवायरन. रेस. 207:112232।

25. झाओ, के.; तुफेल, एस.; अराइ, वाई.; **शर्मा, पी.;** झांग, क्यू.; चेन, वाई.; वांग, एक्स.; शांग. जे। 2022। संतृप्त प्रवाह की अवस्थिति में फे Fe (ऑक्सीहाइड्र) ऑक्साइड परिवहन पर फाइटिक एसिड और आकारिकी का प्रभाव। जे. हैजार्ड. मैट. 424: 127659।

26. वर्मा, ए.; **शर्मा, पी।** 2022। दक्षिण बिहार, भारत के अबाधित उथले जलभृतों में प्रवाहित द्रव विद्युत चालकता लॉगिंग के साथ जलभृत भंडारण और पुनर्प्राप्ति व्यवहार्यता का अध्ययन। फ्रन्ट. वाटर. वाटर. रिसोर्स. मैनेज. 3: 802095।

27. कुमार, आर.; सिन्हा, आर.; शर्मा, पीके; आइवीवाई, एन.; कुमार, पी.; कांत, एन.; झा, ए.; झा, पीके; गुप्ता, पीके.; **शर्मा, पी.**; सिंह, आर.के.; सिंह, आर.पी.; घोष, ए.; वारा प्रसाद ,पी.वी. 2021। पौधों में फ्लोराइड का जैव संचयन और इसकी माइक्रोबियल समर्थित उपचार प्रणाली: जैविक प्रक्रियाओं और तकनीकी प्रदर्शन की समीक्षा। 9(12): 2154.

28. कुमार, आर.; **शर्मा, पी.;** वर्मा, ए.; झा, पी. के.; सिंह ,पी.; गुप्ता, पी.के.; चंद्रा, आर.; वारा प्रसाद, पी.वी. 2021। नदी तट क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र में माइक्रोप्लास्टिक्स के परिवहन और जमाव पर भौतिक विशेषताओं और हाइड्रोडायनामिक स्थितियों का प्रभाव। जल। 13(19): 2710.

29. कुमार, आर.; वर्मा, ए.; शोम, ए.; सिन्हा, आर.; सिन्हा, एस.; झा, पी.के.; कुमार, आर.; कुमार, पी.; त्रिवेदी, एस.; दास, एस.; **शर्मा, पी.;** प्रसाद, पी.वी.वी. 2021। पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभाव, संधारणीय विकास लक्ष्य और चक्रीय अर्थव्यवस्था और नीतिगत हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता । सस्टेनेबिलिटी। 13(17): 9963।

30. कुमार, आर.; **शर्मा, पी.;** मन्ना, सी.; जैन, एम। 2021। प्रचुरता, अंतःक्रिया, अंतर्ग्रहण, पारिस्थितिकी सरोकार और नदी तट क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र में सूक्ष्म प्लास्टिक प्रदूषण की शमन नीतियां: एक समीक्षा। साइ. टोटल एनवायरन. 782:146695।

31. कुमार, आर.; **शर्मा, पी.;** बंद्योपाध्याय, एस। 2021। आर्द्रभूमि में माइक्रोप्लास्टिक्स का साक्ष्य: मीठे पानी और तटीय पारिस्थितिक तंत्र में निष्कर्षण और मात्रा निर्धारण। जे. वाटर प्रोसेस इंजी. 40:101966.

32. आइवीवाई, एन.; मुखर्जी, टी.; **भट्टाचार्य, एस.;** घोष, ए.; **शर्मा, पी।** 2022। बांग्लादेश में भूजल में आर्सेनिक संदूषण और बाद में खाद्य श्रृंखला के माध्यम से संचरण: सार्वजनिक स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य और न्यूनीकरण। वातावरण। भू-रसायन । स्वास्थ्य 10.1007/s10653-022-01330-9

33. कुमार, आर.; सिन्हा, आर.; रकीब, एम.आर.जे.; पाधा, एस; **भट्टाचार्य, एस.;** धर, ए.; **शर्मा, पी.; 2022।** बंगाल की खाड़ी के सुंदर बन डेल्टा में सूक्ष्म-प्लास्टिक प्रदूषण का भार, एडवांसेस. मैट. 7: 100099.

34. सिन्हा, आर.; कुमार, आर.; अभिषेक, के.; शांग, जे.; **भट्टाचार्य, एस.;** सेनगुप्ता, एस.; कुमार, एन.; सिंह, आर. के.; मलिक, जे.; कार, एम.; **शर्मा, पी 2022।** हेक्सावलेंट क्रोमियम अवशोषण के लिए चावल की भूसी से प्राप्त सक्रिय चुंबकीय बायोचार का एकल-चरण संश्लेषण: संतुलन तंत्र, काइनेटिक्स, और थर्मोडायनामिक्स विश्लेषण। ग्राउंडव. सस्टेन. डेव। 18: 100796।

35. कुमार, आर.; आइवीवाई, एन.; **भट्टाचार्य, एस.;** डे, ए.; **शर्मा, पी। 2022।** पौधों पर माइक्रोप्लास्टिक्स और भारी धातुओं के युग्मित प्रभाव: उद्धरण, जैव संचयन, और पर्यावरणीय स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य। साइ. टोटल एनवायरन. 836:155619।

36. कुमार, आर.; **भट्टाचार्य, एस.; शर्मा, पी। 2021।** चुंबकीय ग्राफीन कंपोजिट का उपयोग करके भारी धातु आयनों के अवशोषण की नई अंतर्दृष्टि । जे. पर्या. रसा. अभि. 9:106212।

37. **भट्टाचार्य, एस.; शर्मा, पी.;** मित्रा, एस.; मलिक, आई.; घोष, ए। 2021। आर्सेनिक का उठाव और पौधों में जैव संचयन: दक्षिण पूर्व एशिया में उपचारात्मक और सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य पर एक समीक्षा। एनवायरन. नैनोटेक. मॉनिटर. मैनेज. 15:100430.

38. विजय, वी., कपूर, आर., सिंह, पी.; **हिलोधरी, एम.;** और घोष, पी। (2022) विकेंद्रीकृत ऊर्जा उत्पादन और जलवायु परिवर्तन शमन के लिए बायोमास संसाधनों का संधारणीय उपयोग: भारत में एक क्षेत्रीय केस स्टडी। पर्यावरणीय अनुसंधान, 212,113257।

39. **हिलोधरी, एम.;** विजय, वी., बनर्जी, आर., बरुआ, डी.सी.; और राव, ए.बी. (2021)। गन्ना बायोएनेर्जी का ऊर्जा-कार्बन-जल पदचिह्न: भारत के महाराष्ट्र राज्य में एक जिला-स्तरीय जीवन चक्र निर्धारण। अक्षय और सतत ऊर्जा समीक्षा, 151,111583।

40. **हिलोइधारी, एम.;** हरन, एस., बनर्जी, आर., और राव, ए.बी (2021) गन्ने से चीनी, इथेनॉल और विद्युत के जीवन चक्र ऊर्जा-कार्बन- जल का पदचिह्न। जैव संसाधन प्रौद्योगिकी, 330,125012.

41. **हिलोइधारी, एम.;** बनर्जी, आर.; और राव, ए. बी. (2021) भारत में विभिन्न गन्ने की खेती और सह-उत्पादन परिदृश्यों के अंतर्गत चीनी और बिजली उत्पादन का जीवन चक्र मूल्यांकन। जर्नल ऑफ़ क्लीनर प्रोडक्शन, 290,125170।

42. **शर्मा, ए.;** 2021, "ग्रामीण भारत में पर्यावरण शासन: सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रौद्योगिकियों का प्रसार", फोरम फॉर डेवलपमेंट स्टडीज, 48 (2), 225-245।

43. पांडे, पूनम और **शर्मा ए,** 2021, "नॉलेज पॉलिटिक्स ,वल्नरेबिलिटी एंड रिकॉग्निशन-बेस्ड जस्टिस : पब्लिक पार्टिसिपेशन इन रिन्यूएबल एनर्जी ट्रांजिशन इन इंडिया"। ऊर्जा अनुसंधान एवं सामाजिक विज्ञान, 71,101824**.**

44. **शर्मा ए,** 2021, "क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को वैश्विक और राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ संरेखित करना :ग्रामीण बिहार, भारत में संधारणीय विकास लक्ष्य 6 की उपलब्धि को प्राप्त करने में बाधाएं"। क्षेत्र विकास और नीति, 6(3), 363-373।

45. राजपूत रितिका और **शर्मा अविराम 2021,** बोधगया की दुनिया, संगोष्ठी, 745, 42-46।

46. शिखा एवं अन्य.; (2022) जलवायु परिवर्तन के अंतर्गत सिंचित और वर्षा-सिंचित कपास फसल उत्पादन के लिए जोखिम मूल्यांकन और अनुकूलन रणनीतियाँ। **पृथ्वी प्रणाली विज्ञान जर्नल** में प्रकाशन हेतु (स्वीकृत)।

47. **महाराणा, पी.;** कुमार, डी., कुमार, आर., सिंह, आर और डिमरी, ए.पी. (2022) टोंस नदी बेसिन में बड़े पैमाने पर बाढ़ की घटना का निदान। **सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त जलवायु विज्ञान।** https://doi.org/10.1007/s00704-022-04008-5

48. **महाराणा, पी.;** कुमार, डी., कुमार, पी और तिवारी, पी (2022)। एक युग्मित क्षेत्रीय मॉडल ढांचे में पूर्वोत्तर मानसून का अनुकरण। **वायुमंडलीय अनुसंधान**। http://dx.doi.org/10.1016/j.atmosres.2021.105960.

पुस्तक अध्याय के रूप में प्रकाशित लेख

1. सिंह, आर.; कुमार, आर.; **शर्मा, पी।** 2022। पटना, बिहार, भारत की गंगा नदी के तलछट में माइक्रोप्लास्टिक का अनुमान, प्रदूषित मृदा और भूजल के लिए उन्नत तकनीक, पी.के. गुप्ता, बी. यादव, एस. हिमांशु द्वारा संपादित, एल्सेवियर, आईएसबीएन 978-0-128 -23830-1।

2. कुमारी, पी.; धवला, के.; **शर्मा, पी.; शर्मा, ए।** अचीविंग "एनर्जी फॉर ऑल" : एशिया में ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए सौर मिनी ग्रिड, एशिया में अक्षय ऊर्जा संक्रमण: नीतियां बाजार, उभरते मुद्दे, एन. के जनार्दन, वी. चतुर्वेदी द्वारा संपादित, पालग्रेव मैकमिलन, आईएसबीएन 978-981-15-8904-1।

3. कुमार, आर.; **शर्मा, पी। 2021** कृषि मिट्टी और भूजल से माइक्रोप्लास्टिक्स के निष्कर्षण, पहचान और प्रमात्रीकरण में हालिया विकास, पी.के. गुप्ता, आर.एन. भार्गव द्वारा संपादित, इन फेट एंड ट्रांसपोर्ट ऑफ सब-सरफेस पॉलूटैंटस, स्प्रिंगर नेचर, आईएसबीएन 978-981-15-6564-9।

4. डे, एस; आनंद, यू.; **भट्टाचार्य, एस.;** कुमार, वी.; डे, ए। 2022। सक्रिय कीचड़ उपचार प्रणालियों में माइक्रोबियल समुदाय संरचना और प्रकार्य। कुमार, वी., ठाकुर, आई.एस (संस्करण) ओमिक्स इनसाइट्स इन एनवायर्नमेंटल बायोरेमेडिएशन। स्प्रिंगर, सिंगापुर, पीपी .187-2060 (आईएसबीएन : 978-981-19-4319-5)।

5. डे, एस., शेखावत, एम.एस.; पांडे, डी.के.; घोराई, एम., आनंद, यू., होडा, एम.; **भट्टाचार्य, एस.;** भट्टाचार्जी, आर., घोष, ए., नोंगडैम, पी., कुमार, वी., डे, ए. (2022) प्रदूषित ई-अपशिष्ट स्थलों के जैव उपचार में सूक्ष्मजीव समुदाय और उनकी भूमिका। कुमार, डी (संस्करण) मेटागेनोमिक्स टू बायोरेमेडिएशन (आईएसबीएन :978-0-323-96113-4)।

6. थॉर्नले, पी., राठी, बी., बोरा, ए.जे., साहा, बी., एडम्स, जे.; **हिलोधरी, एम.;** ब्लैंचर्ड, आर.; डिंसडेल, आर.; नागराजन, एस., कुमार, एस और वैद्यनाथन, एस। (2022) नेट जीरो अंतरण के लिए जैव ऊर्जा प्रौद्योगिकी: यूके-इंडिया बायोएनेर्जी रिसर्च स्कोपिंग के परिणाम।

7. बरुआ, डी.; **हिलोधरी, एम.;** और बरुआ डी.सी. (2022) अवायवीय मीथेन उत्पादन के लिए बायोमास आपूर्ति श्रृंखला: विषय और विचार । इन बायोमीथेन थ्रू रिसोर्स सर्कुलरिटी (पीपी 33-45)। सीआरसी प्रेस।

8. **हिलोइधारी, एम.;** और कुमारी, एस। (2021) बायोगैस उन्नयन और विभिन्न बायोगैस उन्नयन प्रौद्योगिकियों का जीवन चक्र मूल्यांकन। बायोगैस उन्नयन के लिए उभरती प्रौद्योगिकियाँ तथा जीवविज्ञान प्रणाली (पीपी .413-445)।अकादमिक प्रेस।

9. **शर्मा ए** 2021, "भारत में पर्यावरण और विकास पर चर्चा: विकासात्मक परिचर्चा का “हरित” में विकास के नए रास्ते: वैश्विक दक्षिण का परिप्रेक्ष्य, रहमा बोरक्विया और मार्सेलो सिली द्वारा संपादित, स्प्रिंगर, चाम, स्विट्ज़रलैंड।
10. **शर्मा ए** और पांडे पी, “प्रबंधन परिप्रेक्ष्य से संधारणीय सौर फोटोवोल्टिक उद्योग को बढ़ावा देने के लिए नवाचार, नीतियां और प्रभाव” फोटोवोल्टिक प्रौद्योगिकियों की स्थिरता और प्रबंधन, जिंगझेंग रेन और ज़िपेंग कान, द्वारा संपादित, एआईपी पब्लिशिंग, मेलविल, न्यूयॉर्क, यूएसए।
11. **शर्मा ए,** 2021, **रॉबर्ट** ब्रियर्स, “एशिया में छोटे शहर और शहरी संधारणीयता”, शहरी और क्षेत्रीय भविष्य का पालग्रेव विश्वकोश, पालग्रेव मैकमिलन, चाम, स्विटजरलैंड द्वारा संपादित।
12. **शर्मा ए,** 2021, "मीटिंग एसडीजी 6: ग्रामीण भारत में सभी के लिए सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करना शहरी और क्षेत्रीय भविष्य का पालग्रेव विश्वकोश, पालग्रेव मैकमिलन, चाम, स्विटजरलैंड द्वारा संपादित।
13. पांडे पूनम और **शर्मा ए,** 2022, “भारत में कोविद -19 और सीमांत समुदायों के लिए विज्ञान सलाह” बीइंग ह्यूमन डयूरिंग कोविड -19, पॉल मार्टिन, स्टीविएना डी सैल, कर्स्टी लिडियार्ड, और वॉरेन पीयर्स द्वारा संपादित, ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस, ब्रिस्टल, यूके।
14. रानी एस., कुमार आर. और **महाराणा पी. (**2022) जलवायु परिवर्तन, इसका प्रभाव तथा भारतीय हिमालय क्षेत्र में संधारणीयता का विषय: जलवायु परिवर्तन: एक परिचय, पुस्तक का नाम: भारतीय हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन प्रभाव, प्रतिक्रिया एवं संधारणीयता, (रानी और कुमार संस्करण), पीपी. 1-28, आईएसबीएन-978-3-030-92781-3, स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड, https://doi.org/10.1007/978-3-030-92782-0

आमंत्रित वार्ता/सम्मेलन/सेमिनार प्रस्तुतियां:

1. इन्टरनेशनल सोसायटी ऑफ सीड साइंस (आईएसएसएस) और पाविया विश्वविद्यालय इटली द्वारा आयोजित सीड फंक्शनल इकोलॉजी विंटर स्कूल 2022 में “बीज सुप्तता और अंकुरण: वर्गीकरण, स्थान और समय में भिन्नता” **(श्याम एस. फरत्याल की आमंत्रित वार्ता)।**
2. वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा 12-14 मार्च 2022 तक आयोजित पारिस्थितिकी तंत्र ,जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम में “बीज सुप्तता और अंकुरण: वर्गीकरण, स्थान और समय में भिन्नता” **(श्याम एस .फरत्याल की आमंत्रित वार्ता)।**
3. ‘जैव विविधता के लिए नागरिक विज्ञान’ पर आयोजित एक ऑनलाइन बैठक में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान में नागरिक विज्ञान के दायरे और प्रासंगिकता का आकलन विषय पर #CitSciIndia2021 में एक मौखिक प्रस्तुति, सितंबर 13-16, 2021 (श्याम एस. फरत्याल)
4. ऑक्सफोर्ड सेंटर फॉर ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्री, ब्रिटिश इकोलॉजिकल सोसाइटी (इकोलॉजी लाइव) न्यूयॉर्क बॉटनिकल गार्डन साइंस सीरीज़, यूरोपियन सिटिजन साइंस एसोसिएशन, EURAXESS इंडिया, यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेराडेनिया, श्रीलंका और ईयू-सिटीजन साइंस, रिसर्च कोलैबोरेशन (भारत) द्वारा आयोजित लगभग 20 वेबिनार में प्रतिभागिता। (श्याम एस. फरत्याल)

5. शांग, जे.; यान, सी.; **शर्मा, पी।** 2022 नैनोपार्टिकल मोबिलिटी पर विभिन्न आणविक भार और सतह चार्ज के साथ प्रोटीन का युग्मित प्रभाव। इजीयू महासभा, वियना, ऑस्ट्रिया, HS8.1.4, EGU22-6821 (प्रभाकर शर्मा)

6. **शर्मा, पी।** 2021। जलीय पर्यावरण में माइक्रोप्लास्टिक का भाग्य और परिवहन। पर्यावरणीय सूक्ष्म प्लास्टिक्स पर अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी, सिंगापुर। (प्रभाकर शर्मा)

7. **शर्मा, पी।** 2021। संधारणीय विकास के लिए सूक्ष्म-विज्ञान और सूक्ष्म-प्रौद्योगिकी। आर्यभट्ट नैनोसाइंस एंड नैनो टेक्नोलॉजी सेंटर, आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी, पटना, बिहार, (प्रभाकर शर्मा)

8. **शर्मा, पी।** 2021 जलभृत भंडारण और पुनर्प्राप्ति के लिए एक एकीकृत साइट चयन मॉडल, इंडियन नेशनल चैप्टर ऑफ इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोजियोलॉजिस्ट (प्रभाकर शर्मा)।

9. **भट्टाचार्य, एस।** 2021। पर्यावरण और समाज: गतिशील परिदृश्य और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में जल-विभाजक प्रक्रियाएं, पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मौखिक प्रस्तुति (आभासी व्याख्यान) **फ्लोरिडा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ,** संयुक्त राष्ट्र 22-23 नवम्बर 2021।

10. **शर्मा ए, भारत में पर्यावरणवाद की किस्में** नालंदा कॉलेज, बिहार शरीफ, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, भारत द्वारा आयोजित **भारतीय इतिहास में महिला और पर्यावरण आंदोलनों** पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुनरीक्षित, 14-15 मार्च 2022 (पूर्ण वार्ता)।

11. **शर्मा ए,** सेंटर फॉर नॉलेज आइडियाज एंड डेवलपमेंट स्टडीज, कोलकाता, भारत द्वारा आयोजित **आईसीएसएसआर-ईआरएस इंटरनेशनल वेबिनार** में **"सस्टेनेबल डेवलपमेंट: टैमिंग कंजम्पशन, इयरनिंग' फॉर इंक्लूसिविटी** पर मार्जिन से ऊर्जा लोकतंत्र पर बहस, कोलकाता, भारत 25-26 फरवरी 2022 (ऑलाइन)।

12. **शर्मा ए,** दक्षिण बिहार, भारत में जलवायु परिवर्तन विविधता तथा पर्यावरणीय परिवर्तन: **संधारणीय कृषि के लिए जलभृत भंडारण एवं पुन:प्राप्ति के क्रियान्वयन** पर आयोजित कार्यशाला में एक एकीकृत विमर्श, 2021, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर द्वारा आयोजित, 25-26 फरवरी 2021

13. **मुनमुन हिलोयधारी,** ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रौद्योगिकी विकल्प केंद्र (CTARA), आईआईटी, बॉम्बे में **आमंत्रित अतिथि व्याख्यान** (ऑनलाइन) 9-10 अक्टूबर 2021।

एसईईएस संकायों की शैक्षिक पहचान

1. एशिया पैनलिस्ट: "पौधा विज्ञान के लिए 100 महत्वपूर्ण प्रश्न के चयन" हेतु पैनलिस्टों में से एक पैनेलिस्ट के रूप में नियुक्ति, इसे न्यू फ़ाइटोलॉजिस्ट फ़ाउंडेशन- एक स्वतंत्र चैरिटी जो पादप विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है तथा कृषि नवाचार का ब्रिस्टल केंद्र द्वारा प्रायोजित किया गया था, जैविक विज्ञान विद्यालय, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय। अधिक अपडेट के लिए कृपया विजिट करें: https://twitter.com/PlantQuestions/status/1504759682988232728?s=20&t=85ps207ciEx_jYJiQpWJ6A (Shyam S. Phartyal).

2. जर्नल, फ्रंटियर्स ऑफ प्लांट साइंसेज के लिए 'कार्यात्मक बीज पारिस्थितिकी: एकल लक्षणों से पादप वितरण पैटर्न, सामुदायिक संयोजन और पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रियाएं' विषय पर अतिथि अनुसंधान

संपादक के रूप में भूमिका, अधिक विवरण के लिए कृपया देखें, https://fro.ntiers.in/seed-ecology (Shyam S. Phartyal).

3. एसोसिएट एडिटर 'सीड साइंस एंड टेक्नोलॉजी' इंटरनेशनल सीड टेस्टिंग एसोसिएशन (आईएसटीए), आधिकारिक जर्नल (श्याम एस. फरत्याल)।
4. अध्यक्ष, मूल्यांकन समिति- 2021, जापान सरकार का कृषि विज्ञान मेक्सट (MEXT) रिसर्च फेलोशिप प्रोग्राम, यह जापान दूतावास, नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया जाता है, 2021 (https://www.in.emb-japan.go.jp/Education/Research_Student.html) (Shyam S. Phartyal).
5. 2021-22 के दौरान 8 पत्रिकाओं तथा 12 पांडुलिपियों के लिए विशिष्ट समीक्षा की, अधिक जानकारी के लिये कृपया देखें, Shyam S. Phartyal | Publons (Shyam S. Phartyal)
6. सदस्य, बीज विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सोसायटी (आईएसएसएस), यूनाइटेड किंगडम, (श्याम एस. फरत्याल)
7. आईयूसीएन के आयोग सदस्य- स्पीसीज सरवाइवल कमीशन (एसएससी)- बीज संरक्षण विशेषज्ञ समूह, सीईएम कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र विशेषज्ञ समूह; सीईएम इकोसिस्टम रेस्टोरेशन थिमैटिक समूह, सीईएम इकोसिस्टम एंड इनवैसीव स्पीसीज थिमैटिक समूह, सीईएम वन पारिस्थितिकी तंत्र विशेषज्ञ समूह, सीईएम माउंटेन इकोसिस्टम विशेषज्ञ समूह, सीईएम आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र विशेषज्ञ समूह। अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें, Shyam Phartyal | Union Portal (iucn.org) (Shyam S. Phartyal).
8. भारतीय भूभौतिकीय संघ के आजीवन सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
9. एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया के आजीवन सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
10. डीएसटी (विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रभाग के पृथ्वी,महासागर और वायुमंडलीय विज्ञान पर पीएसी (परियोजना आवंटन समिति) के सदस्य, (प्रभाकर शर्मा)।
11. सामग्री विज्ञान और ऊर्जा प्रौद्योगिकी के संपादकीय बोर्ड के सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
12. इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन (L37891) (प्यारीमोहन महाराणा)
13. भारतीय मौसम विज्ञान सोसायटी (LM-3495) (प्यारीमोहन महाराणा)
14. बायोचार के संपादकीय बोर्ड के सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
15. कार्बन रिसर्च के संपादकीय बोर्ड सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
16. फ्रंटियर्स इन वाटर : पर्यावरणीय जल गुणवत्ता के संपादकीय बोर्ड के सदस्य (प्रभाकर शर्मा)
17. संधारणीय विकास के लिए भूजल, के अतिथि संपादक (प्रभाकर शर्मा)
18. फ्रंटियर्स इन एनवायरनमेंटल साइंस, के अतिथि संपादक (प्रभाकर शर्मा)
19. कई प्रमुख पत्रिकाओं के विशेषज्ञ समीक्षक (प्रभाकर शर्मा)
20. निम्नलिखित एल्सेवियर और स्प्रिंगर जर्नल्स में 14 विशेषज्ञ समीक्षित शोध पत्रों की समीक्षा, (जर्नल ऑफ हैजार्डस मैटेरियल्स, जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल कैमिकल इंजीनियरिंग, साइंस ऑफ दि टोटल एनवायरनमेंट, एनवायरनमेंटल जियोकैमिस्ट्री एंड हेल्थ। (संदर्भ: पब्लन्स) (सयान भट्टाचार्य)
21. फ्रंटियर्स इन एनालिटिकल साइंस जर्नल, एनवायर्नमेंटल एनालिसिस सेक्शन में समीक्षा सम्पादक। (सायन भट्टाचार्य)

22. फ्रंटियर्स इन वाटर जर्नल में समीक्षा संपादक। (सायन भट्टाचार्य)
23. भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, भारत के सदस्य (सायन भट्टाचार्य)
24. इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल फॉरेस्टर्स, इंडिया चैप्टर के सदस्य (सायन भट्टाचार्य)
25. सुपरजेन बायोएनेर्जी हब, एस्टन यूनिवर्सिटी, यूके द्वारा आयोजित यूके-इंडिया बायोएनेर्जी रिसर्च स्कोपिंग वर्कशॉप, 2022 के विषय का नेतृत्व (मुनमुन हिलोयधारी)
26. संसाधन, पर्यावरण और स्थिरता के आरंभिक कैरियर संपादकीय बोर्ड के सदस्य, एल्सेवियर (मुनमुन हिलोयधारी)
27. फ्रंटियर्स इन सस्टेनेबिलिटी, फ्रंटियर्स के अतिथि संपादक (मुनमुन हिलोयधारी)
28. 27 लेखों की समीक्षा : जर्नल ऑफ़ क्लीनर प्रोडक्शन (15), रिन्यूएबल एनर्जी (4), रिन्यूएबल एंड सस्टेनेबल एनर्जी रिव्यू (3), एनर्जी एंड क्लाइमेट चेंज (2), सस्टेनेबल एनर्जी एंड फ्यूल्स (1), एनर्जी रिपोर्ट (1), सस्टेनेबिलिटी (1) (मुनमुन हिलोयधारी)
29. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज के बुलेटिन के संपादकीय बोर्ड के सदस्य (सेज यूएसए) (अविराम शर्मा)
30. अविराम शर्मा ने 15 से अधिक पत्रिकाओं जैसे एनर्जी, साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट, अर्बन गवर्नेंस और अन्य के लेखों की समीक्षा की। (अधिक विवरण पबलोन्स पर उपलब्ध है)
31. लीड थीमैटिक वर्किंग ग्रुप- II : क्लाइमेट चेंज, एयर पॉल्यूशन वेरिएबिलिटी एंड ब्लैक कार्बन, अपर इंडस बेसिन नेटवर्क, (यूआईबीएन) इंडिया कंट्री आईसी (आईसी) चैप्टर (प्यारीमोहन महाराणा)।

एमएससी/पीएच.डी. शोध निबंध /थीसिस पर्यवेक्षण

1. हेडन आर। प्राउटी (एमएससी) 2021। वैश्विक शहरी वृक्ष पुनर्योजी प्रवृत्तियों का विश्लेषण (मुख्य पर्यवेक्षक: श्याम एस. फरत्याल)।
2. विजय ओझा (एमएससी) 2021। जंगली पौधों की प्रजातियों में पत्ती कार्यात्मक गुण मूल्यों में भिन्नता: राजगीर जंगलों से एक उदाहरण (मुख्य पर्यवेक्षक: श्याम एस. फरत्याल)।
3. पाल्डन (एमएससी) 2021। भूटान की वृक्ष विविधता और उनके कार्यात्मक लक्षणों में भिन्नता (मुख्य पर्यवेक्षक: श्याम एस. फरत्याल)।
4. अभिलाषा (एमएससी) 2021। सिजीगियम क्यूमिनी (एल.) से प्राप्त सक्रिय बायोचार के उपयोग द्वारा लेड (II) का निष्कर्षण स्टेम: अवशोषण संतुलन, काईनेटिक्स और थर्मोडायनामिक्स का विश्लेषण। नालंदा विश्वविद्यालय (प्रभाकर शर्मा, मुख्य पर्यवेक्षक)।
5. रमा सिन्हा (एमएससी) 2021। चावल की भूसी से सक्रिय चुंबकीय बायोचार के उपयोग द्वारा दूषित पानी से क्रोमियम (VI) का निष्कर्षण। नालंदा विश्वविद्यालय (प्रभाकर शर्मा, मुख्य पर्यवेक्षक)।
6. लैम दोर्जिक तमांगो (एमएससी) 2021। आर्सेनिक प्रतिरोधी बैक्टीरिया के आणविक तंत्र पर अध्ययन : प्रिज्मा मॉडल के अनुपालन द्वारा एक व्यवस्थित अध्ययन। (मुख्य पर्यवेक्षक: सयान भट्टाचार्य)
7. अनीता शर्मा (एमएससी) 2021)। अंतर-नदीय पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं – पंचाने नदी, नालंदा, बिहार की एक केस स्टडी। (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. सोमनाथ बंद्योपाध्याय)

8. अकपास अपक्रो (एमएससी) 2021)। एकीकृत कुक्कुट-एक्वापोनिक्स प्रणाली के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाना (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. किशोर धवला)
9. गागाडोसु ह्यूबर्टो (एमएससी) 2021। राजगीर का प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन : प्लास्टिक से ईंधन का तुलनात्मक विश्लेषण (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. किशोर धवला)
10. मोहम्मद आसिफ हाशमी (एमएससी) 2021। बिहारशरीफ में शहरी कृषि को समझना (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. अविराम शर्मा)
11. मोहम्मद आजम (एमएससी) 2021 श्रीलंका में त्रिंकोमाली जिले में हिरण आबादी का संधारणीय प्रबंधन और संरक्षण: एक सामाजिक-पारिस्थितिकी अध्ययन (मुख्य पर्यवेक्षक: सयान भट्टाचार्य)
12. ऋचा कुमारी (एमएससी) 2021 सूरजपुर गांव में छोटे पैमाने पर मशरूम उत्पादक। (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. किशोर धवला)
13. एस वैशाली (एमएससी) 2021 स्थानीय जलवायु पर भूमि उपयोग और भूमि कवर परिवर्तनों का प्रभाव- ऊटी नगरपालिका, नीलगिरी, तमिलनाडु का एक केस स्टडी। (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. सरनाम सिंह)
14. सृष्टि सिन्हा (एमएससी) 2021 उपग्रह डेटा का उपयोग कर राजगीर पहाड़ियों में भूमि उपयोग और भूमि कवर मानचित्रण तथा निगरानी (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. सरनाम सिंह)
15. खिन सैन (एमएससी) 2021 नदी बेसिन प्रबंधन की नई चुनौतियाँ और सीख : अय्यरवाडी बेसिन का एक मामला (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. किशोर धवला)
16. आरुषि राय (एमएससी) 2021)। एक महामारी के दौरान जल और स्वच्छता: राजगीर का एक केस स्टडी (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. अविराम शर्मा)
17. हेम प्रसाद राय (एमएससी) 2021 आवास उपयुक्तता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं: चेकर्ड कीलबैक; ज़ेनोक्रोफिस पिस्केटर (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ सरनाम सिंह)
18. उग्येन नॉर्टेन (एमएससी) 2021 भूटान के जल प्रबंधन में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (पीईएस) के लिए भुगतान- आमजन के दृष्टिकोण का अन्वेषण (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. सोमनाथ बंद्योपाध्याय)
19. मई थू विन (एमएससी) 2021 लैन कू आर्द्रभूमि, म्यांमार में मैक्रोइनवर्टेब्रेट्स की विविधता और उनके निवास स्थान की विशेषताएं (मुख्य पर्यवेक्षक: डॉ. सोमनाथ बंद्योपाध्याय)

पीएचडी थीसिस पर्यवेक्षित

1. अनुराग वर्मा (पीएचडी) 2020-2024। नालंदा जिला, बिहार में भूजल गुणवत्ता पर पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणाली का प्रभाव (अविराम शर्मा ,मुख्य पर्यवेक्षक)।
2. राकेश कुमार (पीएचडी) 2020-2024। संशोधित बायोचार का उपयोग करके दूषित मिट्टी और पानी से फ्लोराइड का उपचार, नालंदा विश्वविद्यालय (प्रभाकर शर्मा, मुख्य पर्यवेक्षक)
3. अर्कज्योति शोम (पीएचडी) 2020-2024। पादप कार्यात्मक लक्षणों के लांस के द्वारा भारतीय आर्द्रभूमियों की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन (श्याम एस. फरत्याल, मुख्य पर्यवेक्षक)।

4. निशिता आइवी (पीएचडी) 2020-2024। कोशी-गंगा बाढ़ के मैदान में आर्सेनिक संदूषण: जोखिम को कम करने के लिए जोखिम और विकल्प का आकलन (किशोर के. धवला, मुख्य पर्यवेक्षक)

क्षेत्र-कार्य

क्षेत्र-भ्रमण 1: 5-6 मार्च 2022

उद्देश्य: शांत और अशांत क्षेत्रों में निम्नलिखित उप-उद्देश्यों के साथ पर्यावरणीय स्थापना तथा नमूना भूखंडों पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों में पादप जैव विविधता संबंधी पारिस्थितिकीय डेटा के एकत्रीकरण का निर्देश:

1. समतल और ढलानों पर डाटा संग्रह के लिए समरूप वन परत ढूँढना
2. वृक्षों, झाड़ियों और जड़ीबूटियों के पौधों के लिए नमूना भूखंडों को रखना और- उन्हें चिह्नित करना।
3. वानस्पतिक और स्थानीय नामों से खेत में पौधों की पहचान को उद्धृत करना।
4. जैव विविधता सूचकांकों को विकसित करने के लिए पेड़, झाड़ियों और जड़ी) बूटियों के पौधों-आवक्ष ऊंचाई व्यास (का मापन

क्षेत्र-कार्य का परिणाम:

5. पहले दिन के छात्रों ने उपग्रह डेटा पर साल वन के समरूप परत का पता लगाया और पंत वन्यजीव अभयारण्य राजगीर के घोराकोटोरा वन रेंज के घने जंगल के माध्यम से साल वन का ,अन्वेषण किया। यहाँ छात्रों ने यह सीखा कि उपग्रह डेटा और जीपीएस का उपयोग करके जंगल के अंदर कैसे नेविगेट किया जाए और में एसईईएस छात्रों द्वारा 2020विकसित भूखंड को फिर से देखा जाए।
6. छात्रों को क्षेत्र प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई जैसे कि उत्तर दिशा की पहचान कैसे करें ,और साल वन में पेड़ों की गणना के लिए किस प्रकार झाड़िय ,मीटर के नए भूखंड 20×20ों के लिए 5×5 मीटर की दिशा की पहचान करें। उन्हें 1×1 बूटी वनस्पति के लिए-मीटर जड़ीआवक्ष ऊंचाई 1.37) मीटर पर पेड़ की परिधि के माप के बारे में (बताया गया।
7. उन्हें यह भी बताया गया कि स्टैंड की ऊंचाई ,मिट्टी के प्रकार ,जमीन पर कूड़े का प्रतिशत ,छत्र कवर , जैविक हस्तक्षेपवन्यजीव साक्ष्य आदि जैसी सहायक जानकारी कैसे एकत्र की जाती है। सभी पेड़ों की , पहचान की गई और उन्हें सूचीबद्ध किया गया। उन्हें कंपास और क्लिनोमीटर का उपयोग करके ढलान और पहलू का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित किया गया था । छात्रों को दो समूहों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक संकाय सदस्य ने डेटा एकत्र करने के लिए प्रत्येक टीम का पर्यवेक्षण किया।
8. ऐसा ही अभ्यास दूसरे दिनमिश्रित नम पर्णपाती वन स्वर्ण गिरी में किया गया। यह समूह शुष्क पर्णपाती झाड़ी के पहाड़ी, शुष्क पर्णपाती वनों से होते हुए मिश्रित नम पर्णपाती वन में पहुंचा। पहाड़ी पर चढ़ते समय छात्रों को विपरीत पहाड़ियों और घाटी में ,मूल तथ्यों को एकत्र करने और उपग्रह डेटा पर भूमि उपयोगभूमि कवर की पहचान करने और टोनल विशेषता और फिजियोग्राफी के प्रभाव का / अध्ययन करने के लिए समझाया गया था। उन्होंने रास्ते में आने वाले पौधों के वानस्पतिक नाम और उनके घटनाविज्ञानी- व्यवहार में जाना । छात्रों को अशांत समरूप साल वन और अबाधित मिश्रित नम पर्णपाती वन में जैव विविधता के अंतर के बारे में जानने का अवसर मिला। छात्रों द्वारा जैव विविधता

की मात्रा निर्धारण का विश्लेषण किया जाएगा। क्षेत्रभ्रमण के दौरान- विभिन्न गतिविधियों की कुछ तस्वीरें नीचे अनुलग्नक:के रूप में संलग्न हैं।

5-6 मार्च 2022 के दौरान आयोजित क्षेत्र-भ्रमण में एसईईएस 2020-22 बैच के छात्रों की फोटो जो अलग-अलग गतिविधियां कर रहे हैं।

क्षेत्र-कार्य 2: 19-20 नवंबर 2021

उद्देश्य: विभिन्न मौसमों के उपग्रह डाटा का उपयोग करके वनस्पति कवर प्रकार और भूमि उपयोग/भूमि कवर की मैपिंग के लिए मूल तथ्य एकत्र करना।

क्षेत्र-कार्य का परिणाम:

सेमेस्टर (2021-23 बैच) के छात्रों को 19-20 नवंबर 2021 के दौरान क्षेत्र कार्य के लिए ले जाया गया। पहले दिन छात्रों ने वैभरगिरी को ट्रैक किया। छात्रों ने टॉपो शीट्स के ओरिएंटेशन और रीडिंग, रेफरेंसिंग सिस्टम, स्केल वेरिएशन और 1:50,000 और 1:250,000 स्केल पर विवरण और महत्वपूर्ण सूचनाओं के बारे में ज्ञान

प्राप्त किया। हिल रिज से, उन्हें वैभरगिरी, विपुलगिरी, राजगीर की सांस्कृतिक विशेषताओं और आसपास के कृषि परिदृश्य के बारें विभिन्न विशिष्टताओं के बारे मेंअवगत कराया गया। इसके बाद, वे रत्नागिरी पर कुछ दूरी तय की, यहाँ दो स्थानों और सोंगिरी पर ब्रह्मकुंड-वनगंगा, वैभरगिरी और रत्नागिरी के बीच एक घाटी, ग्रिधिकुट के रास्ते में रत्नागिरि और उदयगिरी के बीच की घाटी और सोंगिरी और उदयगिरी के बीच की पहाड़ियों, सोंगिरी और जेथियन घाटी के दक्षिण ढलान के बीच वनस्पति और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन किया। उन्हें विभिन्न प्रकार के वनों (बांस, शुष्क पर्णपाती झाड़ी, शुष्क पर्णपाती वन, साल वन, नम पर्णपाती वन, घास के मैदान, वृक्षारोपण (सागौन, कैसिया, पेल्टोफोरम, आदि), भूमि उपयोग / भूमि कवर जैसे जल निकाय, कृषि क्षेत्र, बंजर मिट्टी और चट्टानें, बाग, बस्तियाँ, आदि दिखाए गए और उसके बारे में बताया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने निम्नांकित के बारे में सीखा।

1. विशिष्टताओं की निरंतरता के लिए मानचित्र के कंपास और संदर्भ प्रणाली का उपयोग करके किस प्रकार मानचित्र को उत्तर दिशा की ओर उन्मुख किया जाए ,
2. किस प्रकार विभिन्न विशेषताओं की पहचान और सहसंबंध स्थापित करें और मानचित्र पर वर्तमान स्थिति का पता लगाएं उस ,अवस्थिति को उपग्रह डेटा में स्थानांतरित करें और जीपीएस का भी उपयोग करें,
3. स्थल पर स्वयं की अवस्थिति का पता लगाने के लिए प्राथमिक और सहायक जानकारी का उपयोग कैसे करें।
4. स्थल पर विशिष्टताओं की पहचान करें और छवियों विशेषताओं को सह -संबंध स्थापित करेंऔर इन्हें , ,नोट करें
5. ये विशिष्टताएं विभिन्न स्थलों क्यों घटित होती हैं ,इसमें पृथक अथवा समान छवि विशेषताएं होती हैं , इसलिए उन्होंने विभिन्न विशेषताओं के कारणों और वर्णक्रमीय विशेषताओंका पता लगाया,
6. आरम्भिक समझ के बादछा ,त्रों ने स्वेच्छा से टीम का नेतृत्व किया और मूल तथ्य को एकत्रित करने के लिए अगले गंतव्य तक पहुंचे।

विभिन्न गतिविधियों की कुछ क्षेत्र-कार्य की तस्वीरें अनुलग्नक II के रूप में संलग्न हैं।

एसईईएस 2021-23 बैच के छात्रों द्वारा 19-20 नवंबर 2021 के दौरान क्षेत्र-कार्य में विभिन्न गतिविधियों में शामिल छात्रों की कुछ तस्वीरें।

क्षेत्र-भ्रमण 3: 26 नवंबर 2021

उद्देश्य: राजगीर शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को समझना

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय ने अपने पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में तीसरे सेमेस्टर के छात्रों के लिए 26 नवंबर 2021 को जीवन चक्र निर्धारण और चक्रीय अर्थव्यवस्था पर डॉ. किशोर धवला और डॉ. मूनमून हिलोयधारी के पर्यवेक्षण में राजगीर शहर, नालंदा, बिहार के केंद्र में अशोक नगर में स्थित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र के लिए एक क्षेत्र-भ्रमण का आयोजन किया। यह सुविधा 26 जुलाई 2017 को शुरु हुई, जो पहले राजगीर से 10 किमी उत्तर में भुई में स्थित थी। इस ठोस अपशिष्ट समस्या को हल करने का प्रस्ताव था, क्योंकि यह एक ऐसी जगह में उभरती हुई एक चिंता बन रही थी जहां दुनिया भर में पर्यटक आते हैं। केवल 1 लाख की आबादी वाला यह स्थल, प्रतिवर्ष लगभग 3.5 लाख पर्यटकों की मेजबानी करता है, जिसमें लगभग 1.9 लाख विदेशी नागरिक शामिल हैं, जो एसडब्ल्यूएमसी, राजगीर के लिए कुछ विशेष चुनौतियां प्रस्तुत करता है।

इस क्षेत्र भ्रमण का लक्ष्य शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति को समझना था। छात्र तीन अलग-अलग समूहों में काम कर रहे थे। समूह अ ने इस केंद्र के ठोस कचरे के निर्माण और संग्रहण प्रक्रिया की सुविधा पर ध्यान केंद्रित किया। उसी समय समूह ब ने इस केंद्र के पृथक्करण और उपयोग पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और समूह स ने इस केंद्र के प्रकार्य और राजस्व सृजन के बारे में विचार किया। प्रत्येक समूह ने राजगीर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के वर्तमान परिदृश्य को समझने के लिए डॉ. किशोर धवला के मार्गदर्शन में प्रश्नावली का एक सेट तैयार किया था।

इस सुविधा केंद्र में श्रमशक्ति के रूप में महिलाएं शामिल हैं जो पहले या तो गृहिणी थीं या ईंधन की लकड़ी को एकत्रित करने के कार्य में संलग्न थीं। इस केंद्र ने न केवल नियमित रोजगार सृजित किए बल्कि उन्हें आर्थिक रूप

से स्वतंत्र बनाकर उन्हें परिवार और समाज में सम्मान हासिल करने में भी मदद की। हरे रंग की साड़ी पहनी ये महिलाएं कचरे को "साधन" नाम देकर समाज में एक महत्वपूर्ण विचार परिवर्तन करती हैं। इस केंद्र को कचरा पैदा करने वाले समूहों पर लगाए गए शुल्क के अलावा रिसाइकिल और कम्पोस्ट की बिक्री से अच्छी रकम मिलती है। लेकिन इसे अभी भी वित्तीय रूप से स्वतंत्र होना है। उन्होंने इन वर्षों में एक लंबा सफर तय किया है, ये 1 वार्ड से शुरु होकर अब 19 वार्डों में सेवा दे रहे हैं, और उनका लक्ष्य इसे और आगे बढ़ाना है, तथा तेजी से बढ़ते अन्य विकासशील शहरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करना है।

इस क्षेत्र-भ्रमण से छात्र राजगीर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के वर्तमान परिदृश्य से अवगत हुए। अपशिष्ट प्रबंधन एक ऐसे समय में जब सबसे बड़ी आगामी आपदा "जलवायु परिवर्तन" से बचने और उसे कम करने के लिए स्थिरता प्राप्त करना आवश्यक है, अर्थव्यवस्था के "रैखिक" से "चक्रीय" मॉडल की ओर बढ़ने का एक महत्वपूर्ण सबक सिखाता है, । छात्रों ने क्षेत्र-भ्रमण के पश्चात इस विषय पर गहन चर्चा की और इन तीनों समूहों ने इस केंद्र के लिए कुछ सिफारिशों के साथ अलग-अलग रिपोर्ट तैयार की। इस क्षेत्र-भ्रमण ने छात्रों को तेजी से शहरीकरण करने वाले शहर "राजगीर" में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को समझने में मदद की।

एसईईएस क्षेत्र-भ्रमण: 26 नवंबर, 2021

इतिहास अध्ययन विद्यालय

इतिहास अध्ययन विद्यालय का उद्देश्य एक ऐसा जीवंत वातावरण प्रदान करता है जो ऐतिहासिक जांच और विश्लेषण के महत्वपूर्ण और समावेशी तरीकों को प्रोत्साहित करता है। संवादमूलक अनुदेश प्रविधि और व्यापक पाठ्यक्रम जो अनुशासन को विस्तार प्रदान करते हैं, उन मूल्यों, कौशल और ज्ञान पर जोर देते हैं जो अतीत को ठीक उसी तरह से फिर से बनाने के लिए प्रासंगिक हैं। विद्यालय में छात्रों को नालंदा परंपरा की ऐतिहासिक विरासत और शक्ति को ध्यान में रखते हुए एक छात्रवृत्ति के निर्माण की दिशा में विभिन्न दृष्टिकोणों, पहलुओं और विधियों में ऐसे ठोस मूल्यों की सलाह दी जाती है जो नए प्रश्न उठाती है, नई अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करती है और वर्तमान को बदलने के तरीके खोलती है।

इतिहास अध्ययन विद्यालय संकाय सदस्यों और स्नातक छात्रों का एक गतिशील समुदाय है। यह विद्यालय ऐतिहासिक कल्पना से संबंधित मौलिक प्रश्नों का एक मुक्त लेकिन कठोर वैज्ञानिक मूल्यांकन करता है। यह विद्यालय एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में समय, स्मृति और इतिहास के बीच के अंतर्संबंधों को फिर से तैयार करने और पुनर्विचार करने के लिए समर्पित है।

इतिहास अध्ययन विद्यालय में संकाय-सदस्य मानव समझ के लिए महत्वपूर्ण सभी प्रश्नों को शामिल करने के लिए ऐतिहासिक अध्ययन करता है । इन प्रश्नों के अंतर्गत मनुष्य अतीत को कैसे बनाते हैं अथवा समझते हैं, किस प्रकार अतीत की ऐतिहासिक समझ वर्तमान को कैसे बदल सकती है, और विभिन्न प्रविधियाँ जिनसे वर्तमान को संगठित अथवा निर्मित किया जाता है।

इस विद्यालय में संकाय सदस्य शोध और शिक्षण को प्रभावी बनाने तथा इतिहास समेत नृविज्ञान, समाजशास्त्र, पुरातत्व, धार्मिक अध्ययन, दर्शन, आर्थिक इतिहास, राजनीति विज्ञान, भाषाशास्त्र, दृश्य अध्ययन और कला के शिक्षण में समृद्ध विविध प्रकार की कार्य-पद्धतियों और अनुशासनात्मक पृष्ठभूमि को जोड़ते हैं। विद्यालय में छात्र वैश्विक इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, बौद्धिक, कला, धार्मिक और मौखिक और दृश्य इतिहास की महत्वपूर्ण समझ विकसित करने की उम्मीद कर सकते हैं। इतिहास अध्ययन विद्यालय ऐतिहासिक अभिकर्ताओं और शक्तियों की श्रेणियों, अवधारणाओं और संदर्भों की गहरी समझ के साथ शुरु होने वाले अनुसंधान को शुरु करने और उसे बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही, जब हम अतीत की व्याख्या और पुनर्निर्माण करते हैं, तो यह तथाकथित मानवीय अनुभव की सार्वभौमिक श्रेणियों के साथ गंभीर रूप से जुड़ा होता है।

पाठ्यक्रम

आधार पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

- सभ्यताओं का जन्म
- विश्व इतिहास: एक सिंहावलोकन
- संस्कृति को संवहनीय बनाना: एशिया और उससे इतर
- इतिहास और पुरातत्व
- संगोष्ठी-1

स्वैच्छिक/कैफेटेरिया मॉडल

- डिजिटल मानविकी-I
- दक्षिण एशियाई इतिहास

सेतु पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

- भारत का सांस्कृतिक इतिहास
- एशिया में चिंतनशील परंपराएं: भारत और चीन
- सांस्कृतिक नृविज्ञान / नृवंश-पुरातत्व
- संगोष्ठी-2

स्वैच्छिक/कैफेटेरिया मॉडल

- समुद्री इतिहास
- पूर्व और आद्य ऐतिहासिक पुरातत्व

उन्नत पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

- संस्कृति को संवनीय बनाना: हिंद महासागर में समुद्री अंतर्संबंध
- ऐतिहासिक पुरातत्व
- संगोष्ठी-3

स्वैच्छिक/कैफेटेरिया मॉडल

- भक्ति संस्कृतियों का इतिहास: भारत में सूफीवाद और भक्ति
- युगों से भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध
- स्मृति-संस्कृतियां
- विनाश से सीख: विभिन्न काल-खंडों के दौरान नालंदा।

विशिष्ट पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

- इतिहास निर्माण: इतिहासलेखन
- संगोष्ठी-4

स्वैच्छिक/कैफेटेरिया मॉडल

- भारतीय कला, सौंदर्यशास्त्र तथा वास्तुकला और उसका प्रभाव
- भारत और पूर्वी एशियाई देशों के बीच सभ्यता और ऐतिहासिक संबंध
- भारतीय सौंदर्यशास्त्र का इतिहास
- आर्थिक इतिहास

संकाय

क्रम सं	नाम	पदनाम
1.	अभय कुमार सिंह	प्रोफेसर और डीन
2.	राजीव रंजन चतुर्वेदी	एसोसिएट प्रोफेसर
3.	कश्शाफ घनी	सहायक प्रोफेसर
4.	श्रीशा उदुपा	सहायक प्रोफेसर
5.	एलोरा त्रिबेदी	सहायक प्रोफेसर
6.	तोशबंता पधान	टीचिंग फेलो
7.	प्रांशु समदर्शी	सहायक प्रोफेसर
8.	मीर इस्लाम	सहायक प्रोफेसर
9.	अमिता सत्याल	एसोसिएट प्रोफेसर)आगंतुक स्तर(
10.	मयंक शेखर	सहायक प्रोफेसर)आगंतुक स्तर(

विद्यलय की शैक्षणिक उपलब्धियां

लेख (पुस्तक अध्यायों सहित) 18

आमंत्रित वार्ता सहित प्रस्तुतीकरण, सेमिनार/सम्मेलन में प्रतिभागिता 15

पर्यवेक्षित पीएचडी थीसिस 4

निर्देशित स्नातकोत्तर शोध निबंध 4

विशिष्ट/आमंत्रित व्याख्यान 1

विद्यालय द्वारा अनुसंधान:

पुस्तकों में अध्याय

1. सत्याल, अमिता।(जून 2021)। दक्षिण एशियाई कला, संस्कृति और पुरातत्व की पुनर्कल्पना नामक पुस्तक में 'पुरातत्व: मौलिक विषय और भावी मार्ग' नामक अध्याय, माधाबी चौधरी एवं अन्य (संस्करण)। दिल्लीःस्वाति।

2. घनी, के। "समय क्षण (वक्त) और अनंत काल (दहर) में निहित है: सूफी इस्लाम से प्रतिबिंब", शोनालीका कौल (संस्करण), समय का पुनर्व्याख्यान: पूर्व आधुनिक दक्षिण एशिया की सामयिक प्रकृति, रूटलेज, लंदन, 2022

3. मध्ययुगीय भारतीय इस्लाम: धर्म, समाज, राजनीति ", प्रत्यय नाथ और कौस्तुभ मणि सेनगुप्ता (संस्करण), इतिहासशेरो बिटरको बिटरकर इतिहास : अति एर भारत ओ अजकेर गबेशना, [बंगाली में] आनंद पब्लिशर्स, कोलकाता, 2022

4. चतुर्वेदी, आरआर "मेकांग- गंगा सहयोग: समावेशी विकास की नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ना", प्रबीर डे (संस्करण), मेकांग- गंगा सहयोग (एमजीसी) के बीस वर्ष: उपलब्धियां और भावी मार्ग, दिल्ली, विज बुक्स, एआईसी और आईसीडब्ल्यूए, 2021, पीपी. 311-326।

5. "भारत की सुरक्षात्मक कूटनीति: एशिया-प्रशांत में समावेशी विकास के एक नए युग की शुरुआत", गुओ यांजुन और मियाओ जी (संस्करण), सुरक्षात्मक कूटनीति, दक्षिण प्रशांत में शांति-निर्माण एवं सुरक्षा, सिंगापुर: वर्ल्ड साइंटिफिक, 2022, पीपी. 137-154।

6. "चीन के राजनीति मार्गों का चुनाव: भारत का दृष्टिकोण", ड्रैगन पावलीसेविक और नोकोल टैल्मेक्स (संस्करण), चीन का प्रश्न: प्रतिवाद तथा संयोजन, सिंगापुर, पालग्रेव मैकमिलन, 2022, पीपी. 223-245।

7. "आसियान, भारत और भारत-प्रशांत क्षेत्र: क्षेत्रीय समुद्री पर्यावरण का क्रमिक विकास", सेरेन एरजेनेक (संस्करण), एक प्रविधि के रूप में आसियान: समसामयिक दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रवाद में प्रक्रियाओं और संस्थाओं का पुन: केन्द्रीकरण, एबिंगडन एवं न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2021, पीपी.73-89।

लेख

1. सत्याल, अमिता। 'महासागरीय इतिहास, पारिस्थितिकी और मिथक'। (प्रकाशन के लिए तैयार)

2. त्रिबेदी, एलोरा । " क्रिस्टीज में लोकनाथ अवलोकितेश्वर की छवि", कला: द जर्नल ऑफ इंडियन आर्ट हिस्ट्री कांग्रेस, गुवाहाटी, असम, खंड: XXVI, 2022

3. पधान, टी। 2020। छत्तीसगढ़ का प्रागैतिहास; एक समीक्षा विरासत : जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज इन आर्कियोलॉजी। Vol.no-8.2: 1002-1029, ISSN: 23475463। यूजीसी केयर जर्नल

4. 2022। पश्चिमी गारो पहाड़ियों में नवपाषाण उद्योगों के नए साक्ष्य, पूर्वोत्तर भारत, जियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन, विशेष प्रकाशन, SP515-2020-203। डीओआई: https://doi.org/10.1144/SP515-2020-203 (अंतर्राष्ट्रीय)

5. घनी , के। " खुलदाबाद ", एनसाइक्लोपीडिया ईरानिका, ईजे ब्रिल, लीडेन, 2021।

6. चतुर्वेदी, आरआर, " भारत प्रशांत क्षेत्र में साझेदार", द हिंदू, 15 सितंबर 2021, https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/partners-in-the-indo-pacific/article36460122.ece

7. भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों का विस्तार, प्रभात खबर 16 September 2021, https://www.prabhatkhabar.com/opinion/article-by-dr-rajeev-ranjan-chaturvedi-on-prabhat-khabar-editorial-about-india-australia-two-plus-two-dialogue-srn

8. "भारत-रूस शिखर बैठक: भरोसेमंद साझेदारी को बढ़ावा", संवाद वैब पत्रिका, 5 दिसम्बर 2021 https://samvadnews.in/article-21st-indo-russian-summit-in-new-delhi-on-6th-december-is-important-for-mutual-interests-2021-12-05/

9. रूस के साथ भारत के जुड़ाव का विस्तार करना, द हिंदू, 7 दिसंबर 2021, https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/expanding-indias-engagement-envelope-with-russia/article37874608.ece.

10. "बिम्सटेक से उम्मीदें", (बिम्सटेक शिखर सम्मेलन से उम्मीदें), प्रभात खबर, 30 मार्च 2022।

11. "एक मजबूत बिम्सटेक, की तलाश अंतर को दूर करना, द हिंदू , 30 मार्च 2022।

सम्मेलन, कार्यशालाएं, संगोष्ठी

1. त्रिबेदी, एलोरा। एशियाई अध्ययन पर 26 वें यूरोपीय सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए शोध पत्र "आरंभिक मध्यकालीन भारतीय बौद्ध धर्म में गैर-गतिशीलता और सामग्री सम्बद्धता: पूर्वी भारत के मामले" जिसका आयोजन 26-29 जुलाई, 2021 को वियना, ऑस्ट्रिया में एक हाइब्रिड सम्मेलन के रूप में किया गया।

2. भारतीय बौद्ध अध्ययन सोसायटी के 21वें वार्षिक सम्मेलन में फिजिकल मोड में प्रस्तुत शोध पत्र- "प्रारंभिक बौद्ध कला में सामाजिक जनसांख्यिकी पर प्रकाश", नवा नालंदा, महाविहार, नालंदा, 1 -3 अक्टूबर, 2021।

3. फाउंडेशन फ्रेंड्स ऑफ बटांग हरि रिवर, जाम्बी, इंडोनेशिया द्वारा आयोजित " मुआरो जाम्बी, राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत क्षेत्र में इंडोनेशिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालय का पुन: निर्माण" पर वेबिनार में नालंदा

और मुआरो जांबी की भूमि और भविष्य की संभावनाओं के बीच सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध, इंडोनेशिया, 28 मार्च, 2022।

4. पधान । टी. 2021। 8 दिसंबर 2021 को 'अशोक का शासनादेश और धम्म' फेयरफील्ड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी (एफआईएमटी) स्कूल ऑफ लॉ, नई दिल्ली पर आमंत्रित वेबिनार वार्ता ।

5. कोंकण शैलोत्कीर्ण महोत्सव में जनसभा को संबोधित करने के लिए विशेष अतिथि वक्ता के रूप में पर्यटन विभाग, महाराष्ट्र सरकार और निसर्ग्यत्री यात्री संस्था, रत्नागिरी द्वारा आमंत्रण। 26-27 मार्च 2022

6. सिंह, अभय कुमार। "धार्मिक कट्टरवाद, इसके कारण और स्वामी विवेकानंद के विचारों के संदर्भ में इसका समाधान" [ऑनलाइन] धर्मशास्त्र संकाय, अल ज़हरा विश्वविद्यालय, तेहरान [ईरान], 20.11.2021

7. धर्म और राष्ट्र का संवाद विषय पर आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "हिंदू धर्म में तीर्थयात्रा: उद्देश्य और लाभ" विषय पर व्याख्यान [ऑनलाइन], तेहरान, [ईरान] 10.3.2022।

8. विरासत, संस्कृति और बौद्ध धर्म के दर्शन और शिक्षण पर बोधगया वैश्विक संवाद के चौथे संस्करण के लिए 26.3.2022 को " तिब्बती बोधगया की संस्कृति और धर्म" पर सत्र की अध्यक्षता [25-27 मार्च, 2022]।

9. घनी, के। "मध्यकालीन बंगाल में सूफीवाद के अनेक स्वागत स्थल", इतिहास विभाग, संगोष्ठी श्रृंखला, दिल्ली विश्वविद्यालय, 04 अगस्त 2021।

10. वियतनाम इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन एंड साउथवेस्ट एशिया स्टडीज (VIISAS), हनोई और आसियान इंडिया सेंटर (AIC), नई दिल्ली द्वारा आयोजित "तीसरा आसियान-भारत सांस्कृतिक और सभ्यतागत सम्पर्क सम्मेलन (AICCL)"। ऑनलाइन। 7-8 अक्टूबर 2021

11. "सैम बेटमैन मेमोरियल प्रोजेक्ट कॉन्फ्रेंस" (ऑनलाइन), ऑस्ट्रेलियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन रिसोर्सेज एंड सिक्योरिटी (ANCORS) और आरएसआईएस (RSIS) द्वारा आयोजित, 19-20 अक्टूबर 2021

12. दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सिचुआन विश्वविद्यालयद्वारा आयोजित "महामारी युग के बाद चीन-दक्षिण एशिया संबंध" पर वेबिनार (ऑनलाइन), 28 अक्टूबर 2021

13. क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा आउटलुक 2022 पर आरएसआईएस सम्मेलन (ऑनलाइन)। 18-19 जनवरी 2022

14. ग्रैंडव्यू इंस्टीट्यूशन द्वारा आयोजित "भारत-चीन संबंध: वर्तमान चुनौतियां और नीतिगत अनिवार्यता" पर ग्रैंडव्यू वर्चुअल डायलॉग (ऑनलाइन) 21 जनवरी 2022

15. संकाय भागीदारी: 6वां अंतर्राष्ट्रीय धर्म- धम्म सम्मेलन, 07-09 नवंबर 2021, नालंदा विश्वविद्यालय।

पर्यवेक्षित स्नातकोत्तर शोध-निबंध

1. अनंत कृष्णन पी. (2021)। दक्षिण पूर्व एशिया और प्राचीन तमिलकम (600-1200 सीई) के बीच सांस्कृतिक संवाद और विनिमय (पर्यवेक्षक: कश्शाफ़ घनी)

2. निधि प्रिया (2021)। उत्तरापथ का इतिहास : उत्तरी व्यापार मार्ग नेटवर्क का एक अध्ययन (पर्यवेक्षक: अमिता सत्याल)

3. ओशिन विप्र सागर (2021)। मिथिला में बौद्ध धर्म और तंत्र : महिषी के उग्रतारा तीर्थ-स्थल का सांस्कृतिक ऐतिहासिक अन्वेषणम, 6वीं-12वीं शताब्दी (पर्यवेक्षक: अमिता सत्याल)

4. रोहित कृष्णा (2021)। समय का दृष्टिकोण: समय और सार्वभौमिक धर्म पर संवाद। (पर्यवेक्षक: श्रीशा उदुपा)

पर्यवेक्षित पीएचडी थीसिस

1. आजाद हिंद गुलशन नंदा। आरंभिक भारत, 8वीं-9वीं शताब्दी के महाविहार: सम्पर्क, संवाद, सांस्कृतिक विनिमय। (पर्यवेक्षक: अभय के. सिंह)

2. ले दीन्हो कुओंग । बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अध्ययन: भारत में शुरुआत से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक, एसबीपीसीआर। (पर्यवेक्षक: अभय के सिंह)

3. गुयेन थी न्गोक हुआंग । बौद्ध परंपराओं में महिलाओं का सामाजिक-ऐतिहासिक चित्रण और समकालीन स्वागत पर एक अध्ययन। एसबीपीसीआर [पर्यवेक्षक: एलोरा त्रिबेदी]

4. सौरजित घोष । बौद्ध आध्यात्म और सामाजिक लोकाचार में भिक्षुणी संघ का योगदान भारत के विशेष संदर्भ में धम्म का अभ्यास करने वाली महिला मठवासी परंपराओं के सशक्तिकरण । एसबीपीसीआर [सह-पर्यवेक्षक: एलोरा त्रिबेदी]

विद्यालय की अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. विशिष्ट व्याख्यान: क्लॉडाइन बॉटज़े पिकरॉन, "पूर्वी भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में शक्ति और संरक्षण की बौद्ध छवियां", 25 मार्च, 2022।

2. संकाय द्वारा राजगीर और नालंदा में पुरातत्व स्थलों का शैक्षिक भ्रमण (एलोरा त्रिबेदी, तोसाबंता पाधन, प्रांशु समदर्शी)

3. भारत के संस्कृति राज्य मंत्री परिसर के दौरे को चिह्नित करते हुए , 'यूनेस्को विरासत स्थल नालंदा के साइट, लैंडस्केप, हाइड्रोलिक्स की पुरातत्व संबंधी विशेषताएं' पर एलोरा त्रिबेदी द्वारा प्रस्तुति ट्राइबेडी, 9 नवंबर 2021।

4. एसएचएस वार्तालाप श्रृंखला - वार्ता: सुजीत कुमार प्रूसेथ, '125वीं जयंती के उपलक्ष्य में महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी: नेताजी सुभाष चंद्र बोस', पराक्रम दिवस, 23 जनवरी 2022।

भाषा और साहित्य / मानविकी विद्यालय

विश्व साहित्य में एमए के छात्रों का एक वर्ग

यह विद्यालय एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में मानविकी, भाषा, साहित्य, संस्कृति और जीवन के बीच अंतर्संबंधों को फिर से तैयार करने और उस पर पुनर्विचार करने के लिए समर्पित है। यह आधारभूत प्रश्नों में एक कठोर, अत्याधुनिक शोध का अनुसरण करता है जो मानविकी को एक ज्ञान क्षेत्र के रूप में गठित करता है। प्राचीन पूर्ववर्ती नालंदा महाविहार, और बड़े पैमाने पर विश्वविद्यालय के लोकाचार को ध्यान में रखते हुए, यह विद्यालय एक विविध, महानगरीय और जीवंत बौद्धिक संस्कृति को बढ़ावा देने और उसे बनाए रखने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य छात्रों को सांस्कृतिक संदर्भ और विश्व साहित्य की समृद्ध विविधता पर सराहनात्मक दृष्टिकोण और व्यावहारिक समझ हासिल करने की क्षमता से लैस करना है।

इस विद्यालय में अनुसंधान और शिक्षण प्रतिरूपण प्रारूपों की एक श्रृंखला को शामिल करते हैं जो गद्य, कविता, नाटक, प्रदर्शन, फिल्म, और सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभिव्यक्ति पाते हैं जिनमें ऐसी अभिव्यक्तियां होती हैं और जिन्हें वे आकार देने में मदद करते हैं। इस विद्यालय में शुरुआती लिखित पांडुलिपियों से लेकर सबसे हालिया 21वीं सदी के साहित्य और सार्वभौमिक रूप से एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया समेत अनेक महाद्वीपों के साहित्य में विशेषज्ञता परिव्याप्त है।

संकाय विशेषज्ञता के विशिष्ट क्षेत्रों में साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन, विश्व साहित्य, भारतीय काव्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, दृश्य अध्ययन, डिजिटल मानविकी, चिकित्सा मानविकी और दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया से प्रदर्शन परंपराएं शामिल हैं। संकाय-सदस्य विभिन्न अन्य विद्यालयों में कैफेटेरिया मॉडल के तहत वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, इसके अलावा अंग्रेजी कार्यक्रमों में प्रवीणता के अल्पकालिक प्रमाण पत्र और डिप्लोमा में शिक्षण पाठ्यक्रम भी प्रदान किया जाता है । ये भाषा पाठ्यक्रम अंग्रेजी के साथ-साथ अनुवाद में योग्यता प्रदान करने पर केंद्रित हैं।

यह विद्यालय शैक्षणिक सत्र 2021-22 से विश्व साहित्य में दो वर्षीय पूर्णकालिक स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। यह कार्यक्रम विश्व साहित्य के क्षेत्र में ज्ञान का एक व्यापक आधार रखने की परिकल्पना करता है। इसमें विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं को एक साथ लाकर विश्व साहित्य के व्यापक संग्रह को एक फ्रेम में शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम के वैकल्पिक पाठ्यक्रम कैफेटेरिया मॉडल के अनुरूप प्रदान किए जाते हैं, जिसमें सीखने और अनुसंधान में अंतःविषय पर विशेष जोर दिया जाता है। छात्रों को दुनिया भर से शैलियों में साहित्य के व्यापक स्पेक्ट्रम, साहित्यिक अध्ययन, साहित्यिक और सांस्कृतिक उत्पादों, सिद्धांतों और अध्ययन के तरीकों के क्षेत्र में बदलाव के साथ-साथ विशिष्ट, बारीकी से परिभाषित विषयों के साथ साहित्य और संस्कृतियों की विविधता और विभिन्न सामग्रियों के माध्यम से शोध कार्य करना होगा। यह सभी भाषाओं में साहित्य और संस्कृति के माध्यम से एक अन्वेषणपरक यात्रा है, यह साहित्य, संस्कृति, दर्शन, मीडिया और अन्य विषयों के बीच के अंतर को दर्शाता है। इसके अलावा, नालंदा विश्वविद्यालय की अंतःविषय परंपरा की संरचना के अंतर्गत यह पाठ्यक्रम छात्रों को अन्य क्षेत्रों के विषयों को अपने अध्ययन में एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के प्रत्येक सेमेस्टर को सर्वश्रेष्ठ संसाधन और आकस्मिक क्षेत्रों के अनुरूप अभिकल्पित किया गया है। बढ़ी हुई संकरता को दर्शाते हुए, सेमेस्टर की प्रत्येक इकाई विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और क्षेत्रीय संस्कृतियों पर आरंभिक सभ्यताओं से लेकर उत्तर आधुनिक युग तक केंद्रित है।

संकाय

क्रमांक	नाम	पदनाम
1.	राजेश्वर मित्तपल्ली	प्रोफेसर और डीन आ)ई ,(सी/एसएलएलएच/
2.	मीर इस्लाम	सहायक प्रोफेसर, एसएलएलएच, और / समन्वयक, अल्पकालिक कार्यक्रम
3.	श्रीशा उदुपा	सहायक प्रोफेसरएसएलएल/एच ,
4.	कुमुदा प्रसाद आचार्य	सहायक प्रोफेसरएसएलएल/एच ,
5.	सतरूपा सेन	टीचिंग एसोसिएटएसएलएल/एच ,
6.	स्मिता सिंह	टीचिंग फेलो ,एसएलएलएच/
7.	आर राज राव .	विजिटिंग फैकल्टीएसएलएल/एच ,

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर-I

मुख्य पाठ्यक्रम

- साहित्य का परिचय
- विश्व साहित्य का परिचय
- साहित्य और दर्शन

- शैली की सामान्य विशेषताएँ: कविता

स्वैच्छिक पाठ्यक्रम

- विश्लेषणात्मक चिंतन
- भाषा: भाषा: संस्कृत/पालि/कोरियाई

अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स (1 क्रेडिट)

- शैक्षिक लेखन

सेमेस्टर - II

मुख्य पाठ्यक्रम

- महाकाव्य परंपराएं: होमर, दातें और मिल्टन
- शैली की सामान्य विशेषताएँ: कल्पना
- कारण, विश्वास और कल्पना: डोन, ब्लेक और होल्डरलिन

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

- इकोपोयटिक्स: साहित्य और पारिस्थितिकी
- भक्ति साहित्य
- साहित्य, पौराणिक कथा और इतिहास: रामायण परंपराएं

अतिरिक्त क्रेडिट स्वैच्छिक

- विश्लेषणात्मक चिंतन और अंतःविषय अनुसंधान

प्रबंधन अध्ययन विद्यालय में मुख्य पाठ्यक्रम

- व्यापार संचार संगोष्ठी - I
- व्यापार संचार संगोष्ठी - II

अल्पकालिक पाठ्यक्रम

- प्रवीणता प्रमाण पत्र: i) संस्कृत, ii) अंग्रेजी, iii) कोरियाई, iv) पालि
- डिप्लोमा: i) संस्कृत, ii) अंग्रेजी, iii) कोरियाई

विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियां

पुस्तकें लिखी गई	1
संपादित पुस्तकें	1
लेख	5
परियोजनाएं	5
आमंत्रित वार्ताओं सहित सम्मेलनों/संगोष्ठियों में प्रस्तुतियाँ	8
संगोष्ठियों/सम्मेलनों में प्रतिभागिता (प्रस्तुतिकरण के साथ)	2
शैक्षणिक/वैज्ञानिक निकायों/समाजों में सदस्यता	12
पीएचडी थीसिस	4
निर्देशित स्नातकोत्तर शोध निबंध	2

विशिष्ट व्याख्यान 1

विद्यालय द्वारा अनुसंधान :

पुस्तक लेखन

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर। इंडियन फिक्शन एंड फिल्म्स: रीथिंकिंग हिस्ट्री, सोसाइटी एंड कल्चर। नई दिल्ली: अटलांटिक, 2021। आईएसबीएन: 978-81-269-3255-9

संपादित पुस्तकें

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर, के. पुरुषोत्तम, और आर मेघना राव, संपादक। करियर के लिए अंग्रेजी: स्नातक शिक्षार्थियों के लिए एक कोर्सबुक। हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2021।

अनुसंधान पत्रिका लेख

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर, और अजादेश दावौदी फर। "सामाजिक इतिहास और सामाजिक सुधार: थॉमस हार्डी की कल्पना।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंग्लिश एंड स्टडीज (आईजेओईएस), खंड 3, सं. 4, 2021, पीपी 128-37।
2. "भारत में अंग्रेजी और ईएलटी: कुछ सामाजिक आर्थिक विचार।" करंट इंग्लिश रिव्यू, खंड। 1, सं 1, 2021, पीपी 122-27।
3. "भारतीय फिल्में: एक अपरिहार्य सामाजिक और सांस्कृतिक घटना।" काकतीय जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, खंड 40, 2021, पीपी. 50-62।
4. आचार्य, कुमुदा प्रसाद। "रस के अनुसार मीटर का अनुप्रयोग: कामेंद्र का परिप्रेक्ष्य।" धूमही, चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन शोध संस्थान की शोध पत्रिका खंड 12, 2021, पीपी. 267-71.

परियोजनाएं

1. इस्लाम, मीर। अंतरंगता का इतिहास और दक्षिण पूर्व एशिया और प्रभाव (एक स्वतंत्र पुस्तक-स्तरीय परियोजना, जनवरी 2019 में शुरु हुई)।
2. हीलिंग की भारतीय परंपराएं (एक स्वतंत्र पुस्तक- स्तरीय परियोजना, जनवरी 2019 में शुरु हुई)
3. कश्मीर की मौखिक परंपराएं (एक स्वतंत्र परियोजना, 2017 में शुरु हुई, और पांडुलिपि पूरी होने वाली है)।
4. सेन , सतरूपा। स्वाद की विरासत: विभाजन के बाद आधुनिक बराक में भोजन बनाने की एक यात्रा (एक स्वतंत्र पुस्तक स्तरीय परियोजना, 2020 में शुरु हुई)।
5. सिलहेटी परियोजना (एसओएएस, लंदन विश्वविद्यालय के सहयोग से भाषाई प्रलेखन और सिलहेटी भाषा के संरक्षण के लिए एक स्वैच्छिक ऑनलाइन परियोजना 2017 में शुरु हुई)।
6. सिंह, स्मिता । निकायों और आहार: समकालीन भारत में खाद्य, स्वास्थ्य और संस्कृति की कहानियां (एक स्वतंत्र पुस्तक-स्तरीय परियोजना दिसंबर 2021 में शुरु हुई)।

आमंत्रित वार्ता/वक्ता सहित सम्मेलनों/संगोष्ठियों में प्रस्तुतियाँ

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर। एमएसपी मंडल श्री शिवाजी कॉलेज, परभणी (एमएस), द्वारा शोध एवं प्रकाशन नीति मूल्य पर आयोजित यूजीसी स्ट्राइड प्रायोजित एक सप्ताह की ऑनलाइन एसटीसी में "प्रतिष्ठित शोध-पत्रिकाओं में शोध पत्र कैसे लिखें और प्रकाशित करें" पर संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान 22-11-2021 तथा 27-11-2021 (ऑनलाइन) के दौरान तथा 26 नवंबर 2021।

2. सेन, सतरूपा। "अंग्रेजी भाषा का क्रमिक-विकास" पर आमंत्रित व्याख्यान, अंग्रेजी विभाग, कांद्रा राधा कांता कुंडू महाविद्यालय, पश्चिम बंगाल 23 जुलाई 2021।

3. अंग्रेजी विभाग, कांद्रा राधा कांता, कुंडू महाविद्यालय, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी भाषा शिक्षण के इतिहास पर राष्ट्रीय वेबिनार में संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान, 24 जुलाई 2021।

4. अंग्रेजी विभाग, पंशकुरा बनमाली कॉलेज (स्वायत्त) द्वारा शैक्षणिक सत्र 2020-2021 के लिए आयोजित पाठ्यक्रम "भाषा विज्ञान का परिचय" के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान।

5. सिंह, स्मिता। सांस्कृतिक अध्ययन और मानविकी में समकालीन रुझानों और विकास पर आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "संस्कृति, कलंक और महिला निकाय: "अन्यता का प्रश्न" पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया, इसे न्यू लिटेरिया- एक अंतर्राष्ट्रीय मानविकी अंतर्विषयी अध्ययन, इतिहास, मानविकी और समाज विभाग, रोम विश्वविद्यालय तोर वर्गाटा, इटली और अंग्रेजी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, भारत के सहयोग से आयोजित किया गया था। नवंबर 2021।

6. आमंत्रित वक्ता, सांस्कृतिक अध्ययन और मानविकी में समकालीन रुझानों और विकास पर आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "चिकित्सा मानविकी में अनुसंधान परिप्रेक्ष्य," पर व्याख्यान, इसे न्यू लिटेरिया- एक अंतर्राष्ट्रीय मानविकी अंतर्विषयी अध्ययन, इतिहास, मानविकी और समाज विभाग, रोम विश्वविद्यालय तोर वर्गाटा, इटली और अंग्रेजी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, भारत के सहयोग से आयोजित किया गया था। नवंबर 2021।

7. स्नातकोत्तर अंग्रेजी विभाग, श्री सी. अच्युता मेनन राजकीय महाविद्यालय, त्रिशूर, केरल, द्वारा आयोजित मासिक धर्म कथाओं को पुन: रिक्ति पर राष्ट्रीय वेबिनार में "माई पीरियड, माई प्राइड: रीडिंग मेंस्ट्रुएशन, री-स्पेसिंग मासिक धर्म स्वास्थ्य" पर एक पेपर प्रस्तुत किया। 11-12 दिसंबर 2021।

8. अंग्रेजी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा आयोजित महामारी साहित्य पर राष्ट्रीय वेबिनार में "साहित्य में स्वास्थ्य, पर्यावरण और मानवता: कोविड-19 का विश्लेषण" पर एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। 24-25 जुलाई 2021।

सेमिनार/सम्मेलन/वेबिनार में प्रतिभागिता (प्रस्तुतिकरण के साथ)

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर। ब्लेंडेड टीचिंग सिंपोजियम, नवंबर 13, 2021; आईएसईएल और यूज रोजीयर मैट टीसॉल, यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स, यूएसए (ऑनलाइन)।

2. मित्तपल्ली, राजेश्वर। "अंग्रेजी साहित्य शिखर सम्मेलन 2022," पर आभासी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन; इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर एजुकेशनल लीडरशिप (आईएसईएल) और एमआईटी आर्ट, डिज़ाइन एंड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी, पुणे 22-23 जनवरी 2022।

शैक्षणिक/वैज्ञानिक निकाय/समाज की सदस्यता

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर। सदस्य, आईएसीएलएएलएस (इंडियन एसोसिएशन फॉर कॉमनवेल्थ लिटरेचर एंड लैंग्वेज स्टडीज), नई दिल्ली।
2. मित्तपल्ली, राजेश्वर। सदस्य, ईएलटीएआई (इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया), चेन्नई।
3. मित्तपल्ली, राजेश्वर। आजीवन सदस्य, इंडियन एसोसिएशन फॉर इंग्लिश स्टडीज, नई दिल्ली।
4. आचार्य, कुमुदा प्रसाद। आजीवन सदस्य, प्रो के.वी. सरमा रिसर्च फाउंडेशन, अड्यार, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत।
5. आचार्य, कुमुदा प्रसाद। आजीवन सदस्य, केदारनाथ गवेषणा प्रतिष्ठान, भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत।
6. आचार्य, कुमुदा प्रसाद। आजीवन सदस्य, लोकभाषा प्रचार समिति, बारापड़ा, भद्रक, ओडिशा, भारत।
7. आचार्य, कुमुदा प्रसाद। सदस्य, ओडिशा विद्वत परिषद, कटक, ओडिशा, भारत।
8. सिंह, स्मिता । सदस्य, अंग्रेजी भाषा अनुसंधान और अध्ययन, पटना।
9. सिंह, स्मिता । आजीवन सदस्य, अंग्रेजी भाषा शिक्षक संघ, नई दिल्ली।
10. सिंह, स्मिता । सदस्य, अखिल भारतीय अंग्रेजी शिक्षक संघ, पटना।
11. सिंह, स्मिता । सदस्य, पटना यंग राइटर्स क्लब, पटना।
12. सिंह, स्मिता । सदस्य, फुलब्राइट इंडियन स्कॉलर्स एसोसिएशन, भारत।

पीएचडी थीसिस अधिनिर्णय (गैर-एनयू, बाह्य)

1. मित्तपल्ली, राजेश्वर । "चमन नहल के उपन्यासों में ऐतिहासिकता और यथार्थवाद", एन. रवि विंसेंट, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम द्वारा। पर्यवेक्षक: प्रो. टी. नारायण और प्रो. पी. राजेंद्र कर्मकार । अप्रैल 2021 में अधिनिर्णित।
2. मित्तपल्ली, राजेश्वर । रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद और जग्गी वासुदेव के लेखन में "ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति": एक तुलनात्मक अध्ययन", बावनु विजया राजू द्वारा, नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर। पर्यवेक्षक: प्रो के. संध्या, मैरिस स्टेला कॉलेज, विजयवाड़ा। जून 2021 में अधिनिर्णित।
3. मित्तपल्ली, राजेश्वर । "इंडो- एंग्लियन गद्य लेखकों का चयनित कार्य : महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के विशेष संदर्भ के साथ एक विषयगत अध्ययन", लक्ष्मणायडु रेड्डी द्वारा, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम। पर्यवेक्षक: प्रो. टी. नारायण और प्रो. वाई. सोमलता । जून, 2021 में अधिनिर्णित ।
4. मित्तपल्ली, राजेश्वर । " उपमन्यु चटर्जी के उपन्यासों में पारिवारिक ताने-बाने में बदलाव", पी. रजिथा, डिचपल्ली द्वारा, तेलंगाना विश्वविद्यालय । पर्यवेक्षक: प्रो. जी. दामोदर । जून, 2021 में अधिनिर्णित ।

परास्नातक शोध निबंध निर्देशित (गैर-एनयू, बाह्य)

1. * रजनी प्रधान । शिशुहत्या - टोनी मॉरिसन की बिलव्ड में एक माँ के हताशा का विश्लेषण । एसआरएम विश्वविद्यालय, सिक्किम, 2021। (पर्यवेक्षक: स्मिता सिंह)

2. *बंदना शर्मा। मुल्क राज आनंद की अछूत में दलित आघात के सौंदर्यशास्त्र का अन्वेषण । एसआरएम विश्वविद्यालय, सिक्किम। 2021। (पर्यवेक्षक: स्मिता सिंह)

विशिष्ट व्याख्यान

- प्रो. आर. राज राव, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, अंग्रेजी विभाग, सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय ने "प्रांत में महानगर: नई दुनिया का अन्वेषण" पर एक विशिष्ट व्याख्यान दिया। (23-03-2022)

एमए विश्व साहित्य के छात्र, एसएलएलएच

प्रबंधन अध्ययन विद्यालय

माननीय कुलपति प्रो. सुनैना सिंह, नालंदा विश्वविद्यालय के नेतृत्व में प्रबंध अध्ययन विद्यालय का शुभारंभ किया गया । विद्यालय का उद्देश्य आगामी प्रबंधकों और अधिकारियों को प्रशिक्षण देना है जो न केवल संधारणीय विकास के लिए बाजार के मौजूदा रुझानों के प्रति संवेदनशील होंगे बल्कि स्थिरता की विविध वैश्विक चुनौतियों का समाधान भी खोजेंगे। यह विद्यालय अपनी अवधारणा में अद्वितीय है क्योंकि यह आने वाले प्रबंधकों को अंतर्विषयी प्रविधि से प्रबंधन की समस्याओं को हल करने के लिए प्रशिक्षित करता है और उन्हें न केवल वित्तीय जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए तैयार करता है बल्कि आधुनिक संगठनों द्वारा पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिमों का सामना करने लिए भी तैयार करता है।

प्रबंध अध्ययन विद्यालय के विवरण तैयार करने के लिए एक हितधारक परामर्श के आयोजन हेतु शिक्षाविदों और उद्योग के विशेषज्ञों से संपर्क किया गया। उस संदर्भ में, डॉ मनोज वर्गीस, पूर्व निदेशक, फेसबुक इंडिया और गूगल के पूर्व मानव संसाधन प्रमुख (एशिया-प्रशांत) ने राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का दौरा किया और योग्यता के साथ **संधारणीय विकास और प्रबंधन में एमबीए के** लिए कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई, जिनमें इस पाठ्यक्रम से संबंधित मानदंड, प्रवेश प्रक्रिया और शुल्क संरचना सम्मिलित थी।

बाद के महीनों में, विद्यालय के लिए मिशन, दृष्टि और रणनीतिक प्राथमिकताओं को परिभाषित किया गया था। विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम विवरण और रूपरेखा की योजना बनाई गई थी। सभी पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री की पहचान की गई और विवरण को पाठ्यक्रम की रूपरेखा में जोड़ा गया। विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पाठ्यक्रम से संबंधित प्रासंगिक पुस्तकों और पत्रिकाओं को संरक्षित करने का प्रयास किया गया ।

प्रबंधन और स्थिरता के विषयों में विदेशी विश्वविद्यालयों और उद्योग के विभिन्न प्रतिष्ठित संकाय से संपर्क किया गया और संधारणीय विकास और प्रबंधन में एमबीए के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया।

विद्यालय के बारे में जानकारी यथा- संकाय, कार्यक्रम संरचना और विवरण वैबसाइट पर अपडेट किया जा चुका है और शैक्षणिक वर्ष 2020-21 से कार्यक्रम को शुरू करने के लिए एक प्रवेश रणनीति तैयार की जा चुकी है।

इस विद्यालय का उद्देश्य आगामी प्रबंधकों और अधिकारियों को प्रशिक्षण देना है जो न केवल संधारणीय विकास के लिए बाजार के मौजूदा रुझानों के प्रति संवेदनशील होंगे बल्कि स्थिरता की विविध वैश्विक चुनौतियों के समाधान भी खोजेंगे। इन क्रमों में, अनुभवपरक शिक्षा, समाधान आधारित चिंतन और वैचारिक अन्वेषण के उद्देश्य से संवादपरक और गैर-पारंपरिक शिक्षाशास्त्र के माध्यम से ज्ञान निर्माण और प्रसार के लिए हमारे व्यापक अंतर्विषयी दृष्टिकोण के माध्यम से, छात्रों/अधिकारियों को तकनीकी प्रबंधकों के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा।

आगामी कुछ वर्षों में, हम दुनिया भर के विश्वविद्यालयों, निगमों और संस्थानों के साथ बहु-हितधारक साझेदारी बनाने का प्रयास करेंगे, विशेष रूप से यह देखने के लिए कि विद्यालय स्थायी प्रबंधन और अन्य उभरते प्रबंधन प्रतिमानों की दिशा में एक अद्वितीय ज्ञान केंद्र के रूप में वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करे। उत्तरदायी प्रबंधन शिक्षा पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आधारित नेटवर्किंग के माध्यम से, विद्यालय में हमारा प्रयास नालंदा विश्वविद्यालय की दृष्टि के अनुरूप विभिन्न धाराओं के छात्रों और विद्वानों को आकर्षित करना होगा क्योंकि यह 21वीं सदी के लिए एक नवीन ज्ञान केंद्र का मार्ग प्रशस्त करता है।

मिशन

विकास के लिए संधारणीय मॉडल बनाने में उत्तरदायी प्रबंधन और अन्य उभरती प्रबंधन सीमाओं में वैश्विक नेता के रूप में प्रबंधन अध्ययन विद्यालय की स्थापना।

रणनीतिक प्राथमिकताएं

1. नेतृत्व विकसित करने में उत्कृष्टता प्राप्त करें जिससे संयुक्त राष्ट्र के संधारणीय विकास लक्ष्यों में योगदान दिया जा सके
2. सीखने के व्यावहारिक विधियों द्वारा संधारणीयता में एक वैश्विक ज्ञान केंद्र विकसित करना
3. कॉरपोरेट्स, संस्थानों और उद्योग के साथ नेटवर्किंग स्थापित करना
4. नए सिद्धांत और व्यवहार के मॉडलिंग के माध्यम से आसियान और व्यापक अर्थव्यवस्थाओं में संधारणीयता का एकीकरण

पाठ्यक्रम

<u>आधार पाठ्यक्रम</u>

मुख्य पाठ्यक्रम

1. संगठनात्मक व्यवहार
2. प्रबंधकीय लेखा
3. मात्रात्मक प्रविधियां
4. सूक्ष्म अर्थशास्त्र और मौद्रिक नीति
5. स्थिरता प्रबंधन के सिद्धांत
6. व्यापार विधि
7. व्यापार संचार में संगोष्ठी
8. अतिरिक्त- क्रेडिट पाठ्यक्रम: शैक्षिक लेखन और विश्लेषणात्मक चिंतन

<u>सेतु पाठ्यक्रम</u>

मुख्य पाठ्यक्रम

1. प्रबंधकीय अर्थशास्त्र

2. व्यापार रणनीति और नीति
3. संधारणीय विपणन रणनीतियाँ
4. व्यापार नैतिकता और कॉर्पोरेट प्रशासन
5. सामाजिक उद्यमिता और संधारणीयता
6. मानव संसाधन प्रबंधन
7. संगोष्ठी और व्यापार संचार
8. अतिरिक्त- क्रेडिट पाठ्यक्रम : विश्लेषणात्मक चिंतन और अंतर्विषयी अनुसंधान

प्रशिक्षुता

उन्नत पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

1. संधारणीय व्यापार नेतृत्व
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त

स्वैच्छिक/कैफेटेरिया मॉडल

1. नीली अर्थव्यवस्था
2. नए अक्षय संसाधन
3. एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन
4. कृषि और विकास
5. गरीबी और संधारणीय विकास
6. जलवायु परिवर्तन और विकास
7. संधारणीय शहरीकरण और विकास
8. संस्कृति, दर्शन, सौंदर्यशास्त्र और प्रबंधन
9. शैक्षणिक लेखन

संकाय

आंतरिक संकाय

क्रमांक	**संकाय**	**पद**	**विशेषज्ञता का क्षेत्र**
1.	सपना ए नरूला	प्रोफेसर और डीन	व्यापार स्थिरता, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सामरिक योजना, संधारणीय व्यापार रणनीति
2.	आनंद कुमार	सहायक प्रोफेसर	मात्रात्मक तकनीक, जल संसाधन प्रबंधन,

			नीली अर्थव्यवस्था, सामाजिक उद्यमिता
3.	मुनीर ए मैगरी	शिक्षण साथी	गरीबी और संधारणीय विकास, जलवायु परिवर्तन और विकास, कृषि और विकास, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

अन्य विद्यालयों के आमंत्रित संकाय

4.	किशोर धवला	एसोसिएट प्रोफेसर	सूक्ष्म अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त
5.	मीर इस्लाम	सहायक प्रोफेसर	व्यापार संचार, विश्लेषणात्मक चिंतन
6.	श्रीशा उदुपा	सहायक प्रोफेसर	प्रबंधन के लिए संस्कृति, दर्शन और सौंदर्यशास्त्र

अंतर्राष्ट्रीय आगंतुक संकाय

क्रमांक	**आगंतुक संकाय**	**पदनाम**	**विशेषज्ञता का क्षेत्र**
7.	अंबिका जुत्शी	एसोसिएट प्रोफेसर डीकिन विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया	व्यापार नैतिकता और नेतृत्व, कॉर्पोरेट प्रशासन
8.	मनोज वर्गीस	प्रबंधन साझेदार मिलार्ड रेव्स एडवाइजरी पूर्व प्रमुख फेसबुक, भारत और पूर्व मानव संसाधन प्रमुख, गूगल (एशिया-प्रशांत)	संगठनात्मक व्यवहार, नेतृत्व
9.	फारोखो लैंगडाना	प्रोफेसर और निदेशक कार्यकारी एमबीए प्रोग्राम, रूटगर्स बिजनेस स्कूल, एनजे, यूएसए	अर्थशास्त्र
10.	सीज़र मरोला	प्रोफेसर, लेखक संधारणीयता के लिए सलाहकार समिति के सदस्य, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए	संधारणीय शहरीकरण, स्मार्ट शहर

11.	माइकल डियोहा	पोस्ट डॉक्टरल सदस्य कार्नेगी इंस्टीट्यूट फॉर साइंस, स्टैनफोर्ड, सीए, यूएसए	नवीकरणीय ऊर्जा
12.	रजत पंवार	प्रोफेसर ओरेगान स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए	संधारणीय व्यवसाय
13.	नवा सुब्रमण्यम	प्रोफेसर और डीन (अनुसंधान) प्रबंधन लेखा और विधि केंद्र	प्रबंधकीय लेखा
14.	श्रीरंगन राजगोपाल	सीईओ यूमोबी सॉल्यूशंस कॉर्पोरेशन, एनजे, यूएसए	संगठनात्मक व्यवहार, मानव संसाधन प्रबंधन

आगंतुक संकाय (भारत)

क्रमांक	**आगंतुक संकाय**	**पदनाम**	**विशेषज्ञता का क्षेत्र**
15.	सुनीता सेनगुप्ता	प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय	प्रबंधन के लिए संगठन व्यवहार, संस्कृति दर्शन और सौंदर्यशास्त्र
16.	बीके सिक्का	कार्यकारी निदेशक, इक्विकैप वेंचर्स प्रा. लिमिटेड	कृषि व्यवसाय
17.	एम.वी. शिजू	प्रोफेसर, साईं विश्वविद्यालय चेन्नई	व्यापार विधि
18.	एम. पी. राम मोहन	प्रोफेसर और संयोजक, कैट परीक्षा	व्यापार विधि
19.	अंजल प्रकाश	शोध निदेशक और एसोसिएट प्रोफेसर, भारती इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक पॉलिसी, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी), हैदराबाद	जलवायु परिवर्तन
20.	पूरन चंद्र पांडे	रेजीडेन्ट रिप्रेजेनटेटिव क्लाइमेट स्कोरकार्ड, मिल्टन, यूएसए	कार्पोरेट प्रशासन
21.	राजीव शर्मा	पूर्व कंट्री हेड और डायरेक्टर, बेयर क्रॉपसाइंसेज	कृषि व्यवसाय
22.	प्रभात कुमार	बागवानी आयुक्त, भारत सरकार, नई दिल्ली	कृषि और विकास
23.	अघिला शशिधरन	सहायक प्रोफेसर जिंदल ग्लोबल बिजनेस स्कूल, सोनीपत, भारत	प्रबंधकीय लेखा, वित्त

24.	ऐन सुजान अलेयास	सहायक प्रोफेसर सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	व्यापार संचार
25.	हम्सा डेविनेनी	विजिटिंग फेलो, नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन	समुद्री कानून

उद्योग के संकाय (सत्र विवरण सहित)

क्रमांक	उद्योग के संकाय	पदनाम	वार्ता का विषय	दिनांक
26.	सुनील पांडे	निदेशक, पर्यावरण एवं अपशिष्ट प्रबंधन, टेरी	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन	08.04.2021
27.	भास्कर चटर्जी	महानिदेशक और सीईओ इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ कार्पोरेट अफेयर्स	सीएसआर संशोधन: 2021	15.04.2021
28.	अनिर्बान घोष	चीफ सस्टेनेबिलिटी ऑफिसर महिंद्रा ग्रुप	महिंद्रा ग्रुप में व्यापार संधारणीयता और सीएसआर: चुनौतियां और आगे का रास्ता	29.04.2021
29.	राव कोटामर्थी	मुख्य वैज्ञानिक ,शिकागो विश्वविद्यालय	जलवायु परिवर्तन और ग्राह्यता	10.05.2021
30.	रिजितो सेनगुप्ता	सीईओ, सेंटर फॉर रेसपोंसीबल बिजनेस	महामारी के बाद की दुनिया में ग्रीन करियर	28.07.2021
31.	नंदिता उपाध्याय	उप प्रबंधक, टाटा कैमिकल्स	टाटा केमिकल्स में संधारणीयता	02.10.2021
32.	मानब भट्टाचार्य	मुख्य प्रबंधक, रणनीति, बीपीसीएल	उभरते हरित ऊर्जा क्षेत्र में संधारणीय विकास और व्यवसाय	08.10.2021
33.	शांतनु गुप्ता	मुख्य महाप्रबंधक, आईओसीएल	वैकल्पिक ऊर्जा	22.10.2021
34.	संगीता अगस्त्य	क्षेत्रीय निदेशक, दक्षिण एशिया, इनबार (INBAR)	संधारणीय विकास के अवसरों के लिए बांस	03.12.2021
35.	रिजितो सेनगुप्ता	सीईओ, सेंटर फॉर रेसपोंसीबल बिजनेस	वैश्विक स्वैच्छिक संधारणीयता मानक	07.01.2022
36.	अभिनव ठाकुर	वरिष्ठ प्रबंधक (संधारणीयता) महिंद्रा फाइनेंस	डॉव जोन्स सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स (डीजेएसआई)	21.01.2022
37.	आशीष गुप्ता	डीजीएम, बीपीसीएल	तेल और गैस क्षेत्र में संधारणीयता रिपोर्टिंग	04.02.2022

38.	अभिषेक रंजन	वैश्विक निदेशक (सीएसआर) ब्रिलियो	व्यवसाय में कार्बन पदचिह्न मापन ब्रिलियो का एक मामला	11.02.2022
39.	आई वी राव	विजिटिंग सीनियर फेलो, टेरी	संधारणीय गतिशीलता और परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी	18.02.2022

विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियां

सामग्री	10

विद्यालय द्वारा अनुसंधान:

सामग्री

1. ***मैग्री, एम.ए., और नरूला, एस.ए.*** (2021) नवीन अपशिष्ट प्रबंधन मॉडल के माध्यम से कृषि-खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं की संधारणीयता। *कृषि- खाद्य अपशिष्टों और उप-उत्पादों का मूल्यवर्धन* (पीपी. 605-591) अकादमिक प्रेस।
2. गुओ, एक्स ,.तिछर, टी ,.सिक्का, बी ,.भूरमल, ए,. गेश, के ,.***सपना, एन,. कुमार, ए … ,.*** और क्षम्या, एस. (2021) *फलों और सब्जियों पर स्कोपिंग अध्ययन; भारत से परिणाम : बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के लिए निवेश के अवसरों का आकलन*। वैगनिंगन आर्थिक अनुसंधान।
3. अगस्त्य, एस ,.*तरन्नुम,* एफ ,.और ***नरूला, एस.ए.*** (2021) आर्थिक लचीलापन और संधारणीयता के लिए नवाचार: संभलपुरी, इकत हथकरघा समूह, बरगढ़ भारत का एक केस स्टडी। एसईडीएमई *(लघु उद्यम विकास, प्रबंधन और विस्तार अनुसंधान पत्रिका), 48* (1), 74-90.
4. बशीर, एस ,.दत्त, वी ,.और *मैग्री, एम.ए.* (2021) लैंगेट फॉरेस्ट डिवीजन कश्मीर, भारत के पश्चिमी हिमालयी वन में विभिन्न ऊंचाई के साथ प्रजातियों का प्रभुत्व। इंडियन फॉरेस्टर, *147*(6), 515-521.
5. पोद्दार, ए ,.***नरूला, एस.ए.; और मैग्री, एम.ए.*** (2021) कोविड-19 महामारी के दौरान भारत में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व प्रथाओं और संधारणीय विकास लक्ष्यों की अत्याधुनिक स्थिति। *संधारणीय व्यवसायों के लिए उभरते आर्थिक मॉडल,* 173-155।
6. खट्टक, जे.ए.; फारूकी, ए.; हुसैन, आई.; ***कुमार, ए.;*** सिंह, सी.के.; माइलौक्स, बीजे.; … और वान गीन, ए। (2022) पाकिस्तान और भारत के पंजाब के मैदानों में भूजल फ्लोराइड: वितरण और अंतर्निहित तंत्र। *साइंस ऑफ दि टोटल एनवारनमेंट,* 806, 151353.

7. भट्ट, ए.जी.; ***कुमार, ए,.***और सिंह, एस.के. (2022) सोन नदी, उप बेसिन, मध्य -गंगा बाढ़ के मैदानी क्षेत्र, बिहार, भारत में भूजल का हाइड्रो-जियोकैमिकल क्रमिक-विकास और संबद्ध मानव स्वास्थ्य का जोखिम। *अरेबियन जर्नल ऑफ जियोसाइंसेज, 15*(5), 1-14.
8. दशोरा, एम ,.कुमार, ए,. कुमार, एस ,.कुमार, पी ,.***कुमार, ए.;*** और सिंह, सी.के. (2022) केमोमेट्रिक विश्लेषण और एन्ट्रॉपी वाटर क्वालिटी इंडेक्स (ईडब्ल्यूक्यूआई) का उपयोग करके भारत के एक रेगिस्तानी क्षेत्र में भूजल का भू-रासायनिक मूल्यांकन। *नेशनल हैजार्ड,* 112(1), 747-782.

छात्र इंटर्नशिप (शोध निबंध) एमबीए

1. सेल्मा मेकोंडजो नांगोम्बे नशेया । दक्षिणी अफ्रीका में कृषि व्यवसाय विकास के लिए एक क्षेत्रीय रणनीतिक मानचित्र के विकास हेतु बैलेंस स्कोरकार्ड पद्धति का अनुप्रयोग ।
2. संस्कृति ठाकुर । संधारणीयता में नवाचार ब्रांडिंग और विपणन (भारतीय नवाचार पर फोकस)
3. शुभम त्रिवेदी। एसडीजी, भारत में स्वैच्छिक संधारणीयता मानक (वीएसएस) का योगदान
4. अभिषेक कुमार । सिमाप्रो का उपयोग करके डीजल का जीवन चक्र मूल्यांकन
5. अक्कास अकी। कॉर्पोरेट क्षेत्र में लैंगिक समानता के प्रदर्शन का निर्धारण
6. नोरलीना पसारिबू । 2030 और 2050 के संदर्भ में इंडियन ऑयल का निम्न कार्बन उत्पाद पोर्टफोलियो ।
7. मो. खालिद मिराज । एशिया प्रशांत क्षेत्र जलवायु कार्रवाई पर आधारित अनुसंधान
8. गैरीसन बी. गे । ऑयल इंडिया लिमिटेड की 2018-2020 तक सीएसआर गतिविधियों का आकलन
9. पुष्पा यादव। संधारणीय विकास लक्ष्यों पर यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया (यूएनजीसीएनआई) की पहल
10. सीरातो तजामुल । एनवायरनमेंट सोशल गवर्नेंस (ईएसजी) प्रमुख भारतीय कंपनियों का प्रदर्शन
11. दमचो वांगमो । (गेल इंडिया) लिमिटेड में पर्यावरणीय संधारणीयता की दिशा में हरित पहल की ग्राह्यता
12. फैजल मो. जाकरी । सामाजिक स्थिरता की ओर: गेल इंडिया लिमिटेड की एक समीक्षा

कॉर्पोरेट अनुभव (शोध-निबंध)

विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

क्रमांक	प्रतिष्ठित संकाय	पदनाम	व्याख्यान का विषय	दिनांक
1.	कमलेश द्विवेदी	प्रेसीडेंट लाइन्स वेंचर कैपिटल, डेनवर, यूएसए	स्टार्ट-अप की सफलता का राज।	14.12.2021

2.	मेरेको वोसिंस्की	प्रोफेसर एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए	व्याख्यान 1: सामुदायिक विकास पर बहुसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य; वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा व्याख्यान 2: परिवर्तन का मनोविज्ञान (निर्णय से अंतरण द्वारा रूपांतरण) व्याख्यान 3: संधारणीय विकास के सामाजिक चालक	21.03.2022 24.03.2022 29.03.2022
3.	सुधा राज	प्रोफेसर सिराक्यूज यूनिवर्सिटी, यूएसए	पारंपरिक खाद्य प्रणालियों का पुनरुद्धार: संधारणीय पोषण के निहितार्थ	20.04.2022

छात्रों द्वारा कॉर्पोरेट अनुभव (2020-22)

क्रमांक	नाम	शीर्षक	संगठन	पर्यवेक्षक
5.	फैसल मोहम्मद जाकरी	भारतीय आईटी और इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में चक्रीय अर्थव्यवस्था का अनुप्रयोग: जल खपत, संचयन और उपभोक्ता पुनर्चक्रण पर फोकस	सेंटर फॉर रेसपोंसीबल बिजनेस (सीआरबी)	डॉ. आनंद कुमार
6.	सीरत तजामुल	ऊर्जा आधारित कंपनियों में जलवायु कार्रवाई प्रदर्शन का विश्लेषण -भारत और ऑस्ट्रेलिया का मामला	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट इंडिया	डॉ. मुनीर अहमद मगरी
7.	शुभम	भारत में व्यावसायिक उत्तरदायित्व और संधारणीय रिपोर्टिंग	सेंटर फॉर रेसपोंसीबल बिजनेस (सीआरबी)	डॉ. मुनीर अहमद मगरी
8.	कुमार अभिषेक	ब्रिलियो में सीएसआर	ब्रिलियो	डॉ. आनंद कुमार
9.	संस्कृति ठाकुर	कार्बन ऑफसेटिंग और इसके प्रभाव का स्तर	ब्रिलियो	डॉ. आनंद कुमार
10.	पुष्पा यादव	ऑयल इंडिया में ईएसजी प्रदर्शन का विश्लेषण	ऑयल इंडिया लिमिटेड	प्रो. सपना ए नरूला

11.	मोहम्मद खालिद मिराज	व्यापार और मानवाधिकार	सेंटर फॉर रेसपोंसीबल बिजनेस (सीआरबी)	डॉ. मुनीर अहमद मगरी
12.	सेल्मा मेकोंडजो नांगोम्बे नशेया	उनाम के झाड़ी आधारित पशु आहार के व्यावसायीकरण के लिए रणनीतिक विश्लेषण	नामीबिया विश्वविद्यालय	डॉ. मुनीर अहमद मगरी

छात्रों का अंतिम प्लेसमेंट (बैच 2020-22)

क्रमांक_	छात्र का नाम	नागरिकता	संगठन	भूमिका
1.	सेल्मा मेकोंडजो नांगोम्बे नशेया	नामिबिया	लॉक्सवर्थ कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड	ईएसजी प्रैक्टिशनर
2.	सीरत तजामुल	भारत	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट इंडिया	सदस्यता अधिकारी
3.	शुभम त्रिवेदी	भारत	एशियाई विकास अनुसंधान संस्थान, भारत	शोध सहयोगी
4.	संस्कृति ठाकुर	भारत	सेंटर फॉर रुरल डवलपमेंट (एसएलई) हम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन	शोधकर्ता
5.	दमचो वांगमो	भूटान	भ्रष्टाचार विरोधी आयोग, भूटान	अधिकारी
6.	नोरलीना पसारिबु	इंडोनेशिया	अंडालिन (पीटी. एक्ज़िमकु टेक्नोलोजी इंडोनेशिया)	सलाहकार
7.	फैसल मो. जाकिरी	घाना	नेट जीरो थिंक प्राइवेट लिमिटेड इंडिया	सलाहकार
8.	कुमार अभिषेक	भारत	श्नाइडर इलेक्ट्रिक इंडिया	एलसीए विश्लेषक
9.	पुष्पा यादव	नेपाल	एनआईसी एशिया बैंक, नेपाल	लेखा अधिकारी
10.	गैरिसन बी गाये	लाइबेरिया	सिविल सेवा, लाइबेरिया	सिविल सेवा अधिकारी

छात्र ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप (2021-23)

क्रमांक	छात्र का नाम	नागरिकता	संगठन
1.	कोमल सेन	भारत	टाटा क्लीनटेक कैपिटल लिमिटेड, भारत
2.	अभिलाष महापात्र	भारत	टाटा रेफ्रेक्ट्रीज लिमिटेड, भारत
3.	रौशन मिश्रा	भारत	टाटा स्टील लिमिटेड, भारत
4.	आयरिश कुमार	भारत	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
5.	दिबांग्शु जन	भारत	भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
6.	दीपंतो कुमार सेन	भारत	मरीन सॉल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड, भारत
7.	कल्याण राय	बांग्लादेश	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क, भारत
8.	सुब्रतो कुमार बिस्वास	बांग्लादेश	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क, भारत
9.	नालंदा	म्यांमार	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क, भारत
10.	लेपेकोला पायस महलो	लिसोथो	यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क, भारत
11.	प्या प्या कौंगो	म्यांमार	जनरल कार्बन एडवाइजरी सर्विसेज प्रा. लिमिटेड, भारत
12.	देवराज गुप्ता	नेपाल	इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स, भारत
13.	मारियो गोमेज निकोलौ	मेक्सिको	विल्समीट सॉल्यूशंस लिमिटेड, भारत
14.	उराचट बून्सिरिकोकोजो	थाईलैंड	महासरखम विश्वविद्यालय, थाईलैंड
15.	औलिया चंद्र यूनुस	इंडोनेशिया	मुहम्मदिया पर्यावरण परिषद, इंडोनेशिया
16.	सेस्टी श्री जयंती	इंडोनेशिया	मुहम्मदिया पर्यावरण परिषद, इंडोनेशिया

अल्पकालिक पाठ्यक्रम

नालंदा विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न भाषाओं और विशिष्ट क्षेत्रों में दक्षता हासिल करने में सक्षम बनाने पर फोकस के साथ वर्ष 2018 से अल्पकालिक पाठ्यक्रम प्रदान करना शुरू किया। विश्वविद्यालय ने विविधीकरण और सामुदायिक जुड़ाव के इरादे से इन कार्यक्रमों को शुरु किया है। यह पाठ्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. सुनैना सिंह की आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के साथ जुड़ने की पहल के अनुरूप एनयू द्वारा किए गए प्रयासों का हिस्सा है। 1400 से अधिक छात्रों ने अल्पकालिक पाठ्यक्रम में विभिन्न पाठ्यक्रमों में सफलतापूर्वक अपने पाठ्यक्रम पूरे कर लिए हैं, आरम्भ में संस्कृत, अंग्रेजी और कोरियाई में प्रवीणता प्रमाणपत्र और डिप्लोमा प्रदान किया गया। धीरे-धीरे, पालि, योग, तिब्बती, सुदूर संवेदन और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), नालंदा विरासत पाठ्यक्रमों को प्रस्तावित कार्यक्रमों की सूची में जोड़ा गया।

माननीय कुलपति अल्पकालिक पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) के छात्रों के साथ

स्वास्थ्य और इसके चिकित्सीय उपयोग के लिए योग का बुनियादी ज्ञान और अभ्यास प्रदान करने के उद्देश्य से योग पर लघु अवधि के पाठ्यक्रमों को शुरु किया गया । एक अनुशासन के रूप में योग अच्छे स्वास्थ्य और आध्यात्मिक मुक्ति के लिए सहायक साधन रहा है। यह सुदूर अतीत से भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न, विकसित और जीवित रहा है। योग की इतनी व्यापक सराहना को देखते हुए, इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य दैनिक जीवन में योग को अपनाने का तरीका प्रदान करना है ताकि समग्र स्वास्थ्य बनाए रखा जा सके। भाषा और योग के अलावा विशिष्ट क्षेत्रों यथा रिमोट सेंसिंग, जीआईएस और नालंदा विरासत के बारे में संक्षेपण पाठ्यक्रम और अल्पकालिक कार्यक्रम प्रदान किए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को ज्ञान के विशेष क्षेत्रों से परिचित होने में सक्षम बनाना है।

विश्वविद्यालय का लक्ष्य आने वाले क्षेत्रों में और अधिक अल्पकालिक कार्यक्रम और संक्षेपण पाठ्यक्रम प्रदान करना है, यह दोनों भाषा के साथ-साथ कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे संधारणीयता, विरासत अध्ययन, भारतीय ज्ञान प्रणाली और नवाचार एवं नेतृत्व क्षमता कौशल आदि में प्रदान किया जायेगा।

भाषा प्रयोगशाला

नालंदा विश्वविद्यालय में छात्रों के लिए विभिन्न भाषा को सीखने हेतु एक अत्याधुनिक भाषा प्रयोगशाला है, जिसका लाभ भाषा पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र उठा सकते हैं, भाषा शिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए इसे विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है जो शैक्षणिक सामग्री के उत्पादन और अन्य अनिवार्य पहलुओं को सक्षम बनाता है।

उद्देश्य

प्रयोगशाला की प्राथमिक भूमिका एक ऐसा वातावरण तैयार करना है जहां छात्र जो भाषा सीख रहे हैं उसे बोलने में सहज महसूस करें और जहां उन्हें दूसरी या तीसरी भाषा सीखने के लिए अपनी यात्रा में आवश्यक सहायता मिल सके। प्रयोगशाला का लक्ष्य है:

- नवीन प्रौद्योगिकी-आधारित शिक्षण सामग्री और भाषा सीखने की प्रणालियों के उपयोग को सुगम बनाना और उनका समर्थन करना
- बोलने और सुनने में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
- ऑन साइट सहायता प्रदान करना
- स्व-अध्याय को सक्षम बनाना

संवादात्मक अनुदेश

छात्रों के लिए भाषा प्रयोगशाला अंतरराष्ट्रीय सामग्री का एक बड़ा स्रोत है। उन्नत भाषा अधिग्रहण कार्यक्रमों के उपयोग के माध्यम से प्रयोगशाला प्रशिक्षकों को छात्र की विदेशी भाषा की शिक्षा में सक्रिय रूप से संवाद करने की क्षमता प्रदान करती है। छात्रों को भाषा दक्षता हासिल करने के लिए इन कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है और इनकी दृढ़ता से अनुशंसा की जाती है और प्रत्येक पाठ्यक्रम में प्रयुक्त की जा रही पाठ्य-सामग्रियों के साथ निकटता से समन्वयित किया जाता है।

एक-एक अनुदेश

छात्र अपनी जरूरतों और वैश्विक रुझानों को ध्यान में रखते हुए भाषा अधिग्रहण के लिए तैयार किए गए ऑडियो और विजुअल साधन सहित मल्टी-मीडिया संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। कार्य और अभ्यास के संदर्भ में प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है। यहां छात्र भाषा की तकनीकी सीखने और उनका व्यावहारिक उपयोग करने के लिए वास्तविक जीवन के भाषण नमूनों और पाठ्य-सामग्रियों के साथ प्रयोग कर सकते हैं।

मल्टीमीडिया और वेब-आधारित पाठ्य-सामग्री की सहायता से छात्रों की सूचना तक पहुँच शीघ्रता से होती है और यह शिक्षक को विभिन्न प्रकार की कक्षा गतिविधियों को डिजाइन करने की अनुमति देता है , इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया को वैयक्तिक बनाया जा सकता है जो सीखने के बेहतर वातावरण के पक्ष में रचनात्मकता, नवाचार और कौशल को प्रोत्साहित करता है।

वर्तमान में भाषा प्रयोगशाला अंग्रेजी भाषा के अल्पकालिक पाठ्यक्रमों के लिए सहायता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य छात्रों के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने कौशल को बढ़ाना है। सीखने के संसाधनों में इन सभी कौशल को शामिल करने वाले अनेक विषयों के बीच व्याकरण, ध्वनियाँ, शब्दांश-तनाव, लय, स्वर, स्थितिजन्य संवाद शामिल हैं। सामग्री और अभ्यास छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार भाषा की बेहतर पकड़ बनाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। भाषा सीखने के लिए यह भाषा प्रयोगशाला विभिन्न उपयोगी लिंक, वैबसाइट और ऐप भी प्रदान करती है।

सशक्त और करियर संभावनाएं

भाषा अध्ययन के लिए एक अभिन्न केंद्र के रूप में यह योगशाला आधुनिक और प्राचीन भाषा अधिग्रहण और अनुसंधान के लिए एक समर्थन प्रणाली के रूप में कार्य कर सकती है। एक संवादपरक, बहु-सांस्कृतिक वातावरण के साथ डिजिटल शिक्षण के सहयोग से भाषा की क्षमता अधिग्रहण को बढ़ावा मिलेगा जिससे शिक्षार्थियों को भविष्य के रोजगार के लिए तैयार किया जा सकेगा।

पाठ्यक्रम

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. संस्कृत में डिप्लोमा
2. अंग्रेजी में डिप्लोमा
3. कोरियाई में डिप्लोमा
4. योग में डिप्लोमा

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

1. संस्कृत में प्रवीणता प्रमाण पत्र
2. पालि में प्रवीणता प्रमाण पत्र
3. अंग्रेज़ी में प्रवीणता प्रमाणपत्र
4. कोरियाई में प्रवीणता प्रमाण पत्र
5. योग में सर्टिफिकेट
6. रिमोट सेंसिंग और जीआईएस में प्रमाण पत्र
7. नालंदा विरासत में प्रमाण पत्र

संकाय

क्रमांक	नाम	शीर्षक
1.	मीर इस्लाम	सहायक प्रोफेसर एसएलएल/एच,समन्वयक, अल्पकालिक कार्यक्रम
2.	स्मिता सिंह	सहायक प्रोफेसर एसएलएल/एच
3.	श्रीशा उदुपा	सहायक प्रोफेसर एसएलएल/एच
4.	नवीन हलप्पा	सहायक प्रोफेसर, एसबीएसपीसीआर
5.	सतरूपा सेन	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच
6.	सुनील कुमार	योग प्रशिक्षक
7.	ग्रेस ली	आगंतुक संकाय, एसएलएल/एच
8.	कुमुदा प्रसाद आचार्य	सहायक प्रोफेसर, एसबीएसपीसीआर
9.	भिक्कुनी ब्रेंडा लि	टीचिंग फेलो, एसएलएलएस/एसबीएस
10.	गेशे थुपटेन लोडेन	टीचिंग एसोसिएट

भाषा प्रयोगशाला में अल्पकालिक कार्यक्रमों के छात्र

वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम

कुलपति प्रो. सुनैना सिंह और उनकी टीम की पहल पर नालंदा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए दो स्तरों नियमित और अंशकालिक पर 4 वर्षीय ग्लोबल पीएचडी पाठ्यक्रम प्रदान करता है। नियमित पीएचडी छात्रों के लिए यह पूरी तरह से एक आवासीय पाठ्यक्रम है। अंशकालिक पीएचडी पाठ्यक्रम विद्यालयों द्वारा निर्धारित संपर्क कार्यक्रमों/कार्यशालाओं के अनुसार संचालित किया जाता है।

कुलपति महोदया की परिकल्पना के अनुसार अंशकालिक वैश्विक पीएचडी केवल कामकाजी पेशेवरों या सेवानिवृत्त व्यक्तियों या किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने चालीस वर्ष की आयु पूरी कर ली है और जिसकी अनुसंधान में गहरी दिलचस्पी है, के लिए प्रदान किया जाता है। विश्वविद्यालय के उद्देश्य और अधिदेश के अनुरूप अनुसंधान क्षेत्र निर्धारित किए गए हैं ताकि अनुसंधान के उभरते क्षेत्रों अथवा भारतीय ज्ञान परंपराओं पर नए ज्ञान का निर्माण किया जा सके।

चार वर्षीय वैश्विक पीएच.डी .के लिए ऋण आवश्यकताएँ। कार्यक्रम:

- कोर्सवर्क : 32 क्रेडिट (पहला सेमेस्टर)
- थीसिस: 60 क्रेडिट
- प्रकाशन/अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/फोरमों में प्रस्तुतिकरण: 8 क्रेडिट
- प्री-सबमिशन सेमीनार प्रेजेंटेशन: 10 क्रेडिट
- मौखिक परीक्षा: 20 क्रेडिट

कुल 130 क्रेडिट

डॉक्टरल स्कॉलर अतिरिक्त क्रेडिट जमा कर सकते हैं। ट्रांसक्रिप्ट ऐड-ऑन क्रेडिट दर्शाता है। इसमें थीसिस जमा करने के लिए कोई अतिरिक्त समय/सेमेस्टर नहीं दिया जाता है। कार्यक्रम की कुल अवधि 8 सेमेस्टर की है, इसको जमा करने का न्यूनतम समय चौथे सेमेस्टर के पूरा होने के पश्चात है।

सिखने का केंद्र/एआइएनयू

बंगाल अध्ययन की खाड़ी के लिए केंद्र

विश्वविद्यालय को गर्व है कि माननीय कुलपति प्रो सुनैना सिंह द्वारा की गई पहलों और उनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के आधार पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने न केवल विश्वविद्यालय में बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र की घोषणा की बल्कि नालंदा विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन के लिए बिम्सटेक देशों के लिए 30 फैलोशिप की भी घोषणा की।
बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल- बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र (बिम्सटेक-सीबीओबीएस) नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, भारत, भारत सरकार द्वारा समर्थित एक शैक्षणिक पहल है जो नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, बिहार, भारत में स्थित है। माननीय प्रधानमंत्री ने 30 अगस्त, 2018 को केंद्र को नालंदा विश्वविद्यालय में स्थापित करने की घोषणा की।

माननीय प्रधानमंत्री की घोषणा के अनुसार, इस केंद्र का उद्देश्य विभिन्न विषयी दृष्टिकोण से, विशेष रूप से "सभ्यता, इतिहास, कला, संस्कृति, भाषा, विरासत, वैश्विक समुद्री व्यापार मार्ग और समुद्री कानून के माध्यम से बंगाल की खाड़ी के पहलुओं में अनुसंधान का नेतृत्व करना होगा"। । अन्य अनुसंधान क्षेत्र के अंतर्गत सुरक्षा, व्यापार, विकास, समुद्र विज्ञान, पर्यावरण और समुद्री पारिस्थितिकी शामिल होंगे। बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में पांच बेसिन देश यथा- श्रीलंका, भारत, बांग्लादेश, म्यांमार और इंडोनेशिया है।

इस केंद्र का मिशन बंगाल की खाड़ी से संबंधित बहुआयामी और बहु-विषयक अनुसंधान का संचालन, नेतृत्व और उसके लिए सहयोग प्रदान करना है। इसके शोध का दोहरा लक्ष्य ऐतिहासिक, क्षेत्रीय और विश्व स्तर पर बंगाल की खाड़ी के निरंतर महत्व को उजागर करने के साथ-साथ हमारे मौजूदा ज्ञान आधार को इस प्रकार विस्तारित करना है ताकि यह बंगाल की खाड़ी के लंबे और जुड़े इतिहास, गहरी आध्यात्मिकता, जटिल नेटवर्क, समुद्री मार्ग और व्यापार, विविध पारिस्थितिकी और सामरिक वैश्विक प्रासंगिकता से परिचित हो सके।

इस क्षेत्र में अनुसंधान का उद्देश्य कई मुद्दों, विशेष रूप से सुरक्षा और पर्यावरण के लिए आसन्न चुनौतियों को और अधिक लाभकारी और पारस्परिक रूप से लाभकारी तरीकों से संबोधित करने के लिए संयुक्त क्षमताओं को बढ़ाना है। इन विद्यार्थियों को नालंदा विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन करने के लिए बिम्सटेक क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए तीस (30) छात्रवृत्ति प्रदान की गई । इस केंद्र का कार्य प्रगति-पथ पर अग्रसर है और अगले शैक्षणिक वर्ष से अनुसंधान कार्यक्रम शुरू करने की आशा है।

सार्वजनिक अभिलेखीय संसाधन केंद्र (सीएआरसी)

विश्वविद्यालय पूरी दृढ़ता और सक्रियता के साथ सार्वजनिक अभिलेखीय संसाधन केंद्र (सीएआरसी) की स्थापना के लिए तत्पर है जिसे नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, भारत स्थापित किया जाना है। यह एक **डिजिटल संग्रहालय** है, जिसे विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने जुलाई 2019 में स्थापित करने के लिए अपनी सहमति प्रदान की। यह केंद्र एशिया से संबंधित जानकारी और संसाधनों को संरक्षित और साझा करता है – यह अपने इतिहास, बहुमूल्य संस्कृति, व्यापार नेटवर्क, विरासत, धार्मिक विचारों और प्रथाओं, मौखिक और प्रदर्शनयोग्य परंपराओं, सभ्यता, और पारस्परिक एशियाई नेटवर्क पर प्रकाश डालता है, इसके अलावा इन क्षेत्रों की निरंतर अन्वेषण के लिए शैक्षणिक अवसरों का अभिकल्पन प्रस्तुत करता है। क्षेत्रीय-शांति और दूरदृष्टि को बढ़ावा देना विश्वविद्यालय मूलभूत उद्देश्यों में से एक है, **यह** केंद्र पूरे एशिया विशेष रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया से समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएं, विरासत, इतिहास और सभ्यता-विनिमय के डिजिटल संग्रह को संरक्षित करने का प्रयास करता है, ताकि अतीत के सांस्कृतिक संपर्क की समझ को संवर्धित किया जा सके और समझ को विश्व स्तर पर साझा किया जा सके।।

इस केंद्र पर विचार की परिकल्पना मेकांग- गंगा सहयोग (एमजीसी) शिखर सम्मेलन 2015 में की गई थी। वर्ष 2000 में स्थापित मेकांग- गंगा सहयोग (एमजीसी), भारत और मेकांग क्षेत्र के देशों यथा- कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, वियतनाम और थाईलैंड के बीच सहयोग के विस्तार पर फोकस करता है। एमजीसी के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्र पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा और परिवहन एवं संचार है, जिसका उद्देश्य दोनों क्षेत्रों के लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना है। अपने वर्तमान स्वरूप में यह केंद्र आसियान 2018 में कनेक्टिविटी के एक संयुक्त आह्वान की प्रतिक्रिया में उभरा। यह केंद्र इस प्रकार एशिया के एकीकरण के लिए क्षेत्रीय नेताओं की साझा आकांक्षाओं को एक एकल साझा-ज्ञान पारिस्थितिकी-तंत्र में निर्मित करता है, जो एशिया को एकीकृत करने के अलावा, इसमें सामंजस्य भी स्थापित करता है। दोनों, वास्तव में, अविभाज्य हैं, सभी अधिक विशिष्टता के साथ, अपनी विविधता संयोजित करते हुए आज भी सदस्य-राष्ट्र के विकास के विभिन्न चरणों से जुड़े हुए हैं।

यह केंद्र क्लस्टर के निर्माण हेतु एक पोर्टल प्रदान करता है, जो एशिया में ज्ञान के विभिन्न रूपों के उत्पादन, संचलन, खपत, विनियोग, भंडारण और पुन: उपयोग की डिजिटल स्थितियों को पूरा करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विविध सांस्कृतिक संसाधन ज्ञान का एक नेटवर्क बनाते हैं, जो ज्ञान मानचित्र के दोनों आयामों: ज्ञान की संरचना (ज्ञान की भौतिक अभिव्यक्तियों का वर्गीकरण और कोडीकरण) और ज्ञान का प्रसार (अभिव्यक्ति के तरीके और पहुंच का प्रश्न) को पूरा करते हैं। सीएआरसी (CARC) को अब कुलपति द्वारा प्रस्तुत

नई अवधारणा टिप्पणी के अनुसार विदेश मंत्रालय की मंजूरी मिल गई है।

संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र

विश्वविद्यालय ने आगामी शैक्षणिक वर्ष से इस पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंध विद्यालय में एक संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र की स्थापना की है। नालंदा विश्वविद्यालय, प्राचीन नालंदा महाविहार की शानदार विरासत और इसे प्रदान किए गए नए अधिदेश दोनों को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित है। इसका मुख्य उद्देश्य शांति निर्माण के माध्यम से संघर्ष को हल करने और उनकी वैश्विक पहुंच का विस्तार करने के लिए संवाद को बढ़ावा देने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच बनाना है। इसी सटीक संदर्भ में शांति निर्माण और संघर्ष समाधान अध्ययन केंद्र की परिकल्पना की गई है। केंद्र का प्रमुख अभिविन्यास यह जांचना है कि हम संघर्ष को कैसे हल कर सकते हैं और सकारात्मक शांति पैदा करके संघर्ष को हल करने वाले परिणामों की तलाश कर सकते हैं। उस हद तक, यह केंद्र संघर्ष को समझने के नए तरीकों के माध्यम से बदलाव की कल्पना करता है जो इसके *माध्यम से बातचीत करने में सक्षम बनाता* है।

केंद्र का उद्देश्य नए ज्ञान के निर्माण और सार्थक संवाद का समर्थन करने वाला एक समेकित, अंतर्राष्ट्रीय और अंतरसांस्कृतिक मंच प्रदान करके संघर्ष समाधान और शांति निर्माण की सुविधा प्रदान करना है। केंद्र शुरू में शांति और संघर्ष अध्ययन में अल्पकालिक कैप्सूल पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गोलमेज चर्चाओं की मेजबानी करने पर ध्यान केंद्रित करेगा ताकि किसी भी संकट से गुजर रहा कोई भी देश अपने स्तर या कारण के बावजूद संकट को संबोधित करने और हल करने के लिए वास्तविक बोली में इस केंद्र की गोलमेज चर्चाओं का चयन कर सके।

संक्षेप में, केंद्र के प्रयास इसके निम्नलिखित दोहरे विश्वास द्वारा निर्देशित हैं:

1. मौजूदा संघर्ष को एक अवसर के रूप में मानना संभावित रूप से शांति के लिए एक ,स्थल को निर्मित करनाजैसे बुद्ध ने जोर दिया कि अज्ञानता ज् ,ञान के उद्भव का स्थल कैसे हो सकता है;
2. आलोचनात्मक ज्ञान और सार्थक संवाद की शक्ति में न केवल किसी भी रूप में संघर्ष को संबोधित , प्रबंधित करने और बदलने की क्षमता रखता है अपितु यह भविष्य के संघर्ष को रोकने की भी क्षमता रखता है।

आसियान-भारत के विश्वविद्यालयों का नेटवर्क (एआईएनयू) – संकाय विनिमय पाठ्यक्रम

आसियान-भारत के विश्वविद्यालयों का नेटवर्क (एआईएनयू)

आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज (एआईएनयू) की परिकल्पना ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में की गई है जो भारत और आसियान के प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों के बीच नालंदा विश्वविद्यालय के साथ एक नोडल संस्थान के रूप में सम्पर्क स्थापित करता है। क्षेत्र-विशेष की समस्याओं से जुड़ने के लिए ज्ञान सृजन के प्रतिमानों को तैयार करने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए इस पहल का निवेश किया गया है।

माननीय प्रधानमंत्री ने जनवरी 2018 में नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भारत और आसियान के बीच व्यापक अंतर-विश्वविद्यालयी विनिमय को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालयों के एक नेटवर्क की स्थापना के बारे में घोषणा की। भारत सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर को एआईएनयू के गठन के साथ-साथ उसके भरण-पोषण का नेतृत्व करने के लिए नामित किया है।

एआईएनयू को 29 अगस्त 2022 को आसियान मुख्यालय, जकार्ता में संयुक्त रूप से एमओएस, एमईए एंड एजुकेशन डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, आसियान महासचिव दातो लिम जॉक होई तथा कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के साथ लॉन्च किया गया था।

जनवरी 2018 में नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विश्वविद्यालयों के आसियान-भारत नेटवर्क की घोषणा की गई थी।

सहयोगी उद्यम के अंतर्गत एआईएनयू प्रतिभागी विश्वविद्यालयों को भारत और आसियान में संस्थानों के साथ जुड़ने का मौका प्रदान करता है। यह ज्ञान को साझा करने की भावना को प्रोत्साहित करेगा, और अंततः भारत और आसियान के अधीन एक संसाधन पूल के सृजन की दिशा में आगे बढ़ेगा। यह ज्ञान साझा करने का अवसर प्रदान करेगा, जिसमें कौशल, क्षमता, सर्वोत्तम प्रथाओं और सूचनाओं का विनिमय शामिल है। यह सहयोग उभरती बहु-ध्रुवीय दुनिया के एशिया-प्रशांत में क्षमता निर्माण और क्षेत्रीय विचारकों के सृजन को सुनिश्चित करेगा।

एआईएनयू को तीन मोर्चों पर भारत और आसियान के बीच एक संयुक्त परियोजना के रूप में नियोजित किया गया है:

- संकाय विनिमय
- डॉक्टरल छात्र विनिमय
- संयुक्त पीएचडी अनुसंधान पर्यवेक्षण/संयुक्त अनुसंधान

फोकस क्षेत्र

एआईएनयू द्वारा निम्नांकित क्षेत्रों में अन्वेषण किया जायेगा:

1. अभियांत्रिकी
2. विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी
3. नीति तथा विधि-निर्माण
4. व्यापार और निवेश
5. शांति और सुरक्षा
6. संधारणीय विकास
7. मानविकी
8. धर्म
9. सांस्कृतिक अंतर-संबंध
10. नीली अर्थव्यवस्था

एआईएनयू इन क्षेत्रों में, न केवल सूचना और विचारों के मुक्त प्रवाह को सक्षम बनाएगा, बल्कि क्षेत्रीय सहयोग को भी प्रोत्साहित करेगा और भारत और आसियान क्षेत्र के संस्थानों को इन क्षेत्रों में शिक्षण और अनुसंधान का समर्थन करके वैश्विक अनुसंधान परिदृश्य में एक प्रमुख भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त होगा।

डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, एमओएस, एमईए एंड एजुकेशन, दातो लिम जॉक होई, आसियान महासचिव, श्री जयंत खोबरागड़े, राजदूत, तथा प्रो. सुनैना सिंह, कुलपति आसियान मुख्यालय, जकार्ता (इंडोनेशिया) में आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज के शुभारंभ समारोह में

आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज के शुभारंभ समारोह में कुलपति प्रो. सुनैना सिंह

"आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज का लॉन्च दक्षिणपूर्व एशिया और भारत के बीच सहस्राब्दी पुराने सभ्यतागत संबंधों की पुष्टि करता है"

डॉ. राजकुमार रंजन सिंह, एमओएस, एमईए एंड एजुकेशन, दातो लिम जॉक होई, आसियान महासचिव, प्रो. सुनैना सिंह, कुलपति, श्री जयंत खोबरागड़े, राजदूत, उप-महासचिव आसियान तथा आसियान में आसियान सदस्य राष्ट्रों के स्थायी प्रतिनिधि आसियान मुख्यालय, जकार्ता (इंडोनेशिया) में आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज के शुभारंभ समारोह में

एमओएस, एमईए एंड एजुकेशन, उप-महासचिव आसियान तथा आसियान सदस्य राष्ट्रों के स्थायी प्रतिनिधियों ने नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका और पहल की सराहना की।

एआईएनयू- संकाय विनिमय कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत भारत और आसियान सदस्य देशों के प्रतिभागी संस्थानों के संकाय सदस्यों का विनिमय शामिल है। विनिमय की अवधि एक सेमेस्टर के लिए होगी। यात्रा के दौरान, संकाय सदस्य को पाठ्यक्रमों प्रस्तुत करने होंगे और संयुक्त/सहयोगी शोध करने की आवश्यकता होगी। यह कार्यक्रम ज्ञान, विशेषज्ञता, कौशल के विनिमय को सक्षम बनायेगा। यह इस क्षेत्र के शैक्षिक परिदृश्य में गतिशीलता भी लाएगा।

परस्पर सहयोग, संधारणीय प्रगति और समान विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, एआईएनयू की परिकल्पना सामूहिक ज्ञान नेटवर्क के रूप में की गई है। भारत और आसियान के कई प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों ने पहले ही एआईएनयू कंसोर्टियम का हिस्सा बनने के लिए रुचि की अभिव्यक्ति साझा की है।

समझौता ज्ञापन/ सहयोग

नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा 2021-22 के दौरान निम्नलिखित समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर/पहल की गई:

- ओटानी विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान के साथ अगस्त 2022 में शैक्षणिक संबंधों और सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।
- लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, नेपाल के साथ शैक्षणिक संबंधों और सहयोग के लिए जून 2022 में समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।
- सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क, ब्रोंक्स कम्युनिटी कॉलेज, यूएसए के साथ अप्रैल 2022 में शैक्षिक जुड़ाव और सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।
- कोयम्ब्रा विश्वविद्यालय के साथ बौद्धिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है। प्रस्तावित समझौता ज्ञापन का उद्देश्य संयुक्त सम्मेलनों/संगोष्ठियों, छात्र विनिमय, संकाय विनिमय, संयुक्त शोध कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक अन्वेषण के लिए सहयोग का समर्थन एवं विकास करना है।
- पोर्टो विश्वविद्यालय के साथ बौद्धिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है। प्रस्तावित समझौता ज्ञापन का उद्देश्य संयुक्त सम्मेलनों/संगोष्ठियों, छात्र विनिमय, संकाय विनिमय, संयुक्त शोध कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक अन्वेषण के लिए सहयोग का समर्थन एवं विकास करना है।
- सलमनाका विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य संकाय सदस्य विनिमय, छात्र तथा शोध प्रशिक्षु विनिमय, संयुक्त सम्मेलनों/संगोष्ठियों तथा प्रकाशनों के लिए सहयोग का समर्थन एवं विकास करना है।

शोध और प्रकाशन

संकाय शोध और प्रकाशन

(लिखित/संपादित) पुस्तकें (एसबीएसपीसीआर-02+एसएलएलएच-02)	04
लेख (पुस्तक अध्यायों सहित) (एसबीएसपीसीआर -07+एसईईएस-61+एसएचएस-18 + एसएसएस-08 + एसएलएलएस-05)	99
प्रस्तुतियाँ/सेमिनार/सम्मेलन में प्रतिभागिता (एसबीएसपीसीआर-04 + एसईईएस -26 + एसएचएस -15 + एसएलएलएस -10)	55
शैक्षणिक पहचान /पुरस्कार/अनुदान (एसबीएसपीसीआर-05 + एसईईएस -31)	36
अनुसंधान परियोजनाएं (एसबीएसपीसीआर-02)	02
स्नातकोत्तर शोध-निबंध (एसबीएसपीसीआर-17 + एसईईएस-19 + एसएचएस-04 + एसएमएस-12 + एसएलएलएस-05)	57
पीएचडी थीसिस (एसबीएसपीसीआर-04 + सीईएस-04 + एसएचएस-01)	9

पाठ्यक्रम

वसंत 2021 – मुख्य पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर-04 + एसईईएस-04 + एसएचएस-04 + एसएमएस-7)	19
वसंत 2021 – ऐच्छिक पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर-12 + सीईईएस-07 + एसएचएस-05)	24
पतझड़ 2021 – मुख्य पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर-06 + एसईईएस-06 + एसएचएस-06 + एसएमएस-09 + एसएलएलएस-04)	31
पतझड़ 2021 – ऐच्छिक पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर-12 + एसईईएस-10 + एसएचएस-08 + एसएमएस-08 + एसएलएलएस-01)	39
*** पतझड़ 2021 - एक्स्ट्रा-क्रेडिट + अल्पकालिक पाठ्यक्रम** (एसएलएलएस-01 + एसएमएस-01)	02
वसंत 2022 – मुख्य पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर-08 + एसईईएस-04 + एसएचएस-04 + एसएमएस-07 + एसएलएलएस-03)	26
वसंत 2022 – वैकल्पिक पाठ्यक्रम (एसबीएसपीसीआर -11 + एसईईएस -10 + एसएचएस -06 + एसएलएलएस-02)	29
*** वसंत 2022 - अतिरिक्त क्रेडिट + अल्पकालिक पाठ्यक्रम** (एसएलएलएस-01)	01
वसंत 2021 - वसंत 2022 • **प्रदान किए गए कुल पाठ्यक्रम:** **मुख्य - 76; ऐच्छिक - 92; अतिरिक्त क्रेडिट - 03** • **ग्लोबल पीएचडी 9 -** **(एसबीएस - 04; एसईईएस - 04; एसएचएस - 01)**	**171**

छात्र शोध-निबंध और थीसिस

इतिहास अध्ययन स्कूल

प्रस्तुत किए गए स्नातकोत्तर शोध- निबंध

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	अनंत कृष्णन पी.	दक्षिण पूर्व एशिया और प्राचीन तमिलकम (600-1200 ई.) के बीच सांस्कृतिक परस्पर क्रिया और विनिमय
2.	निधि प्रिया	**उत्तरापथ का इतिहास : उत्तरी व्यापार मार्ग नेटवर्क का एक अध्ययन**
3.	ओशिन विप्र सागर	मिथिला में बौद्ध धर्म और तंत्र : महिषियों के उग्रतारा तीर्थस्थल के सांस्कृतिक इतिहास का अन्वेषण 6-12 वीं शताब्दी
4.	रोहित कृष्ण	**समय के दृष्टिकोण से: सार्वभौमिक धर्म का समय एवं संवाद**

पर्यवेक्षित पीएचडी थीसिस

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	आजाद हिंद गुलशन नंदा	आरम्भिक भारत (8-9वीं शताब्दी) ई.पू. का महाविहार: नेटवर्क, पारस्परिक संबंध, सांस्कृतिक विनिमय
2.	ले दीन्हो चुओंग	बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अध्ययन: भारत में शुरुआत से पांचवीं शताब्दी ई. तक
3.	गुयेन थी न्गोक हुआंग	बौद्ध परंपराओं में महिलाओं के सामाजिक-ऐतिहासिक चित्रण और समकालीन आतिथ्य पर एक अध्ययन
4.	सौरजित घोष	धम्म का अभ्यास करने वाली महिला मठवासी परंपराओं के सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में भारत के परिदृश्य में बौद्ध आध्यात्म और सामाजिक लोकाचार में भिक्षुणी संघ का योगदान

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय

प्रस्तुत एमएससी शोध-निबंध

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	**अभिलाषा**	सिजीगियम क्यूमिनी (एल) स्टेम से प्राप्त सक्रिय बायोचार का उपयोग द्वारा लेड (II) निष्कर्षण: अवशोषण संतुलन, काइनेटिक्स

		और थर्मोडायनामिक्स विश्लेषण।
2.	**अकपास अपक्रो**	एक एकीकृत पॉट्रीएक्वापोनिक्स प्रणाली के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाना
3.	**अनीता शर्मा**	अंतर-नदीय पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं - पंचाने नदी, नालंदा , बिहार की एक केस स्टडी ।
4.	**गागाडोसु ह्यूबर्ट**	राजगीर का प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन : प्लास्टिक से ईंधन का तुलनात्मक विश्लेषण
5.	**हेडन आर. प्राउटी**	वैश्विक शहरी वृक्ष पुनर्योजी प्रवृत्तियों का विश्लेषण
6.	**लैम दोर्जिक तमांग**	आर्सेनिक प्रतिरोधी बैक्टीरिया के आणविक तंत्र पर अध्ययन: प्रिज्म मॉडल के अनुप्रयोग द्वारा एक व्यवस्थित अध्ययन
7.	**मो. आसिफ हाशमी**	बिहार शरीफ में शहरी कृषि का विश्लेषण
8.	**मो. आजम**	श्रीलंका में त्रिंकोमाली जिले में हिरण आबादी का संधारणीय प्रबंधन और संरक्षण : एक सामाजिक-पारिस्थितिक अध्ययन
9.	**रमा सिन्हा**	चावल की भूसी से सक्रिय चुंबकीय बायोचार का उपयोग करके दूषित पानी से क्रोमियम (VI) निष्कर्षण।
10.	**ऋचा कुमारी**	सूरजपुर गांव में छोटे पैमाने पर मशरूम उत्पादनकर्ता ।
11.	**एस वैशाली**	स्थानीय जलवायु पर भूमि उपयोग और भूमि कवर परिवर्तन का प्रभाव-ऊटी नगरपालिका, नीलगिरी, तमिलनाडु की एक केस स्टडी।
12.	**सृष्टि सिन्हा**	उपग्रह डेटा के अनुप्रयोग द्वारा राजगीर पहाड़ियों में भूमि उपयोग भूमि कवर मानचित्रण और निगरानी
13.	**विजय ओझा**	जंगली पौधों की प्रजातियों में पत्ती कार्यात्मक गुण मूल्यों में भिन्नता: राजगीर के जंगलों से एक उदाहरण
14.	**खिन सैन न्यू**	नदी बेसिन प्रबंधन की चुनौतियाँ और सीख : अय्यरवाडी बेसिन का एक मामला
15.	**आरुषि राय**	महामारी के दौरान पानी और स्वच्छता: राजगीर का एक केस स्टडी
16.	**हेम प्रसाद राय**	आवास उपयुक्तता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं: चेकर्ड कीलबैक; जेनोक्रोफिस पिसकेटर
17.	**उग्येन नॉर्टेन**	भूटान के जल प्रबंधन में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (पीईएस) के लिए भुगतान - लोगों के दृष्टिकोण का अन्वेषण
18.	**पल्डोन**	भूटान की वृक्ष विविधता और उनके कार्यात्मक लक्षणों में भिन्नता
19.	**मई थु विन**	मैक्रोइनवर्टेब्रेट्स की विविधता और उनके निवास स्थान की

		विशेषताएं, लैन कू वेटलैंड, म्यांमार

पर्यवेक्षित पीएचडी थीसिस

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
11.	**अनुराग वर्मा**	नालंदा जिला, बिहार में भूजल गुणवत्ता पर पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणाली का प्रभाव
12.	**राकेश कुमार**	बायोचार का उपयोग करके दूषित मिट्टी और पानी से फ्लोराइड का उपचार, नालंदा विश्वविद्यालय
13.	**अर्कज्योति शोम**	पादप कार्यात्मक लक्षणों के दृष्टकोण से भारतीय आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन
14.	**निशिता आइवीवाई**	कोशी-गंगा बाढ़ के मैदान में आर्सेनिक संदूषण: जोखिम को कम करने के लिए जोखिम और विकल्प का आकलन

बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म विद्यालय

प्रस्तुत किए गए स्नातकोत्तर निबंध

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	**बुई थी दीयम थुय**	हिन्दूवाद में भगवद गीता और बौद्ध धर्म में धम्मपद का अन्वेषण : इनके अंतर्संबंधों में एक अध्ययन
2.	**चैंथला औंफिवोंग**	लाओ बौद्ध परंपरा और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच तुलना: इसके प्रभाव का एक अध्ययन
3.	**डो क्वांग होआंग थांग**	सिगालोवाद के अनुसार पारिवारिक शिक्षा के कर्तव्य सूत्र
4.	**दो थी किम नगन**	प्राचीन सब्बासव सुत्त में वर्णित बौद्ध आध्यात्मिक प्रशिक्षण विधियां: एक अध्ययन
5.	**हो थिओ जुआन**	भिक्खुनी संघ का शाही संरक्षण
6.	**हुइन्ह काओ नहुतो क्वांग**	नश्वरता और निःस्वार्थ : सुख कहाँ है? उदयनवर्ग में चयनित अध्यायों का संस्कृत और तिब्बती से एक टिप्पणी अनुवाद
7.	**गवांग ज़ेपास**	शून्यता पर नागार्जुन की प्रदर्शनी : तिब्बती मूलाध्यायमाकारिका पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन
8.	**गुयेन लियू**	चंपा बौद्ध धर्म का सांस्कृतिक गठन और विकास
9.	**नीमा ग्यालपो**	
10.	**श्याम जॉर्ज**	आत्मा और मन की तत्वमीमांसा: भारतीय विचारों में एक अध्ययन
11.	**टूरोंग गोक हो**	बौद्ध धर्म में परिप्रेक्ष्य: ब्रह्मांड के जीवन पर पांच समग्र दृष्टिकोण

12.	**डुओंग है येन**	धम्मपद में मन से संबंधित पालि ग्रंथ और शिलालेख
13.	**कोंगपोप पन्यालर्टसिनपैसार्न**	महायान बौद्ध धर्म में काया का सिद्धांत और थेरवाद के लिए इसकी प्रासंगिकता

पर्यवेक्षित पीएचडी थीसिस

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	गुयेन थिओ हन्हो	आरम्भिक बौद्ध धर्म में शून्यता की अवधारणा का विकास : एक अन्वेषण
2.	ले दीन्हो चुओंग	बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अध्ययन: भारत में शुरुआत से पांचवीं शताब्दी ई. तक
3.	गुयेन थी न्गोक हुआंग	बौद्ध परंपराओं में महिलाओं के सामाजिक-ऐतिहासिक चित्रण और समकालीन आतिथ्य पर एक अध्ययन
4.	सौरजित घोष	धम्म का अभ्यास करने वाली महिला मठवासी परंपराओं के सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में भारत के परिदृश्य में बौद्ध आध्यात्म और सामाजिक लोकाचार में भिक्षुणी संघ का योगदान

भाषा, विश्व साहित्य और मानविकी विद्यालय (बाह्य एनयू)

पर्यवेक्षित स्नातकोत्तर शोध निबंध

क्रमांक	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	रजनी प्रधान	शिशुहत्या - टोनी मॉरिसन बिलव्ड में एक माँ के हताशा का विश्लेषण
2.	बंदना शर्मा	मुल्क राज आनंद की अछूत में दलित आघात के सौंदर्यशास्त्र का एक अन्वेषण

प्रबंधन अध्ययन विद्यालय

छात्र शोध-निबंध एमबीए (2019-2021)

क्रमांक	नाम	ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप एमबीए का शीर्षक
1.	सेल्मा मेकोंडजो नांगोम्बे नशेया	दक्षिणी अफ्रीका में कृषि व्यवसाय विकास के लिए एक क्षेत्रीय रणनीतिक मानचित्र विकसित करने के लिए बैलेंस स्कोरकार्ड पद्धति का

		क्रियान्वयन।
2.	संस्कृति ठाकुर	संधारणीयता में नवाचार, ब्रांडिंग और मार्केटिंग (भारतीय नवाचार पर फोकस)
3.	शुभम त्रिवेदी	भारत में एसडीजी में स्वैच्छिक स्थिरता मानकों (वीएसएस) का योगदान
4.	अभिषेक कुमार	सिमाप्रो के अनुप्रयोग द्वारा डीजल का जीवन चक्र मूल्यांकन
5.	अब्बास अकी	कॉर्पोरेट क्षेत्र में लैंगिक समानता के प्रदर्शन का आकलन
6.	नोरलीना पसारिबु	2030 और 2050 के संदर्भ में इंडियन ऑयल का निम्न कार्बन उत्पाद पोर्टफोलियो
7.	मोहम्मद खालिद मिराज	एशिया प्रशांत क्षेत्र जलवायु कार्रवाई पर आधारित अनुसंधान
8.	गैरीसन बी. गाये	ऑयल इंडिया लिमिटेड की 2018-2020 तक सीएसआर गतिविधियों का आकलन
9.	पुष्पा यादव	संधारणीय विकास लक्ष्यों पर यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया (यूएनजीसीएनआई) की पहल
10.	सीरत तजामुल	प्रमुख भारतीय कंपनियों का एनवायरनमेंट सोशल गवर्नेंस (ईएसजी) प्रदर्शन
11.	दमचो वांगमो	गेल (इंडिया) लिमिटेड में पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में हरित पहल की ग्राह्यता
12.	फैसल मो. जाकिरी	सामाजिक संधारणीयता की ओर: गेल इंडिया लिमिटेड का एक सिंहावलोकन

प्रदान किये गए डिग्री / सर्टिफिकेट / डिप्लोमा

(एम.ए./एम.एससी.)

वर्ष 2021-22 के दौरान निम्नलिखित छात्रों को स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान की गई :

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय

क्रमांक	नाम
1.	अभिलाषा
2.	अकपा अकप्रो
3.	अनीता शर्मा
4.	गागाडोसु ह्यूबर्ट
5.	हेडन प्राउटी
6.	लैम दोर्जिक तमांग
7.	मोहम्मद आसिफ हाशमी
8.	मोहम्मद आजम
9.	रमा सिन्हा
10.	ऋचा कुमारी
11.	एस वैशाली
12.	सृष्टि सिन्हा
13.	विजय ओझा
14.	खिन सैन न्यू
15.	आरुषि राय
16.	हेम प्रसाद राय
17.	उग्येन नॉर्टेन

18.	पल्डोन
19.	माय थू विन

बौद्ध अध्ययनदर्शनशास्त्र , और तुलनात्मक धर्म विद्यालय

क्रमांक	नाम
1.	बुई थी दायम थुय
2.	चैंथला औंफिवोंग
3.	डो क्वांग होआंग थांग
4.	दो थी किम नगन
5.	हो थिओ जुआन
6.	हुइन्ह काओ नहुत क्वांगो
7.	गवांग ज़ेपा
8.	गुयेन लिय
9.	नीमा ग्यालपो
10.	श्याम जॉर्ज
11.	ट्रूओंग गोक होअ
12.	नरेन्दा
13.	डुओंग है येन
14.	कोंगपोप पन्यालर्टसिनपैसार्न
15.	वाशिम पलाश
16.	गुयेन थिओ नघिया
17.	दोर्जी फुनत्शो

इतिहास अध्ययन विद्यालय

क्रमांक	नाम
1.	अनंत कृष्णन पी
2.	निधि प्रिया
3.	ओशिन विप्र सागर
4.	रोहित कृष्ण

डिप्लोमा और प्रवीणता प्रमाणपत्र प्राप्तकर्ता

1	अमन राज
2	अभय कुमार
3	अभिषेक कुमार
4	आदित्य वर्धन
5	आदित्य वर्मा
6	अजीत कुमार
7	आकाश कुमार
8	आकाश कुमार
9	आकाश कुमार
10	आलोक कुमार
11	अमोद कुमार
12	अनीश कुमार
13	अंजलि कुमारी
14	अंजलिका झा
15	अंकित कुमार
16	अंकित राज
17	अंशु कुमारी
18	आशीष कुमार
19	अश्विनी कुमार
20	चंदन कुमार
21	चांदनी कुमारी
22	चंद्रमणि कुमार
23	चुथि थुय वान
24	दीपक कुमार

25	देवेंदता कुमार
26	धर्मवीर कुमार
27	दिव्या भारती
28	दुर्गेश रंजन
29	गौरव कुमार
30	गौरव कुमार
31	गौतम राज
32	गुंजन कुमार
33	हरीस परवेज
34	हर्ष कुमार गुप्ता
35	इन्द्रजीत वर्मा
36	जितेंद्र कुमार
37	जितेंद्र कुमार
38	ज्योति लक्ष्मी
39	ज्वाला कुमार
40	काजल कुमारी
41	कल्याणी कुमारी चौधरी
42	खुशबू रानी
43	खुशबु कुमारी
44	खुशबु कुमारी
45	कुमार शानू
46	कुंदन कुमार
47	कुंदन कुमार
48	लवली कुमारी
49	मानव विश्वकर्मा
50	मनोज कुमार
51	मनोरमा रानी
52	मंटू कुमार
53	मौसम कुमारी
54	मोहम्मद खोस्तार आलम
55	मुकेश कुमार
56	निधि प्रिया
57	नीतीश कुमार
58	नीतीश कुमार
59	ओशिन विप्र सागर
60	पल्लवी कुमारी
61	पंकज कुमार
62	पंकज राज
63	पोयूरी वीसना

64	पूजा कुमारी
65	प्रगति सिन्हा
66	प्रेम कुमार
67	प्रिया कुमारी
68	रचित तिवारी
69	राहुल कुमार
70	राहुल कुमार
71	राहुल कुमार
72	राजा कुमार
73	राजा कुमार
74	राजीव कुमार
75	राजीव कुमार
76	राजीव रंजन
77	रजनीश कुमार
78	राकेश कुमार
79	रामानुज कुमार
80	रामजी कुमार गोस्वामी
81	रंजय सिन्हा
82	रौशनी गोपाल
83	रौशन कुमार
84	रौशन कुमार
85	रौशन कुमार
86	रवि रंजन गुप्ता
87	रवि रंजन कुमार
88	रविकांत कुमार
89	ऋचा साध्या
90	ऋषिकेश कुमार
91	रितेश कुमार
92	रोहित कुमार
93	सागर कुमार
94	सज्जन कुमार अकेला
95	साकिन्द्र प्रसाद
96	सलोनी सानिया
97	समीर कुमार
98	सारिका सिंह
99	सत्यम कुमार
100	सत्येंद्र कुमार सिंह
101	सौरभ कुमार
102	सौरभ कुमार

103	शशि कोमल
104	शिशुपाल कुमार
105	शोभा विश्वनाथ सिद्धार्थ
106	श्रेयशी गुप्ता
107	श्रुति कुमारी
108	श्रुति सुहानी
109	शुभम कुमार
110	शुभम कुमार
111	शुभम रंजन
112	स्निग्धा)एनयू छात्र (22-20
113	सोनाली कुमारी
114	सोनाली कुमारी
115	सोनू कुमार
116	शुभम कुमार
117	सुधाकर कुमार
118	सुजीत कुमार
119	सुमंत कुमार
120	सूरज कुमार
121	सूरज कुमार
122	सूरज कुमार
123	सूरज कुमार
124	सुतिल कुमार
125	श्वेता कुमारी
126	तान्या पटेल
127	वेंकटेश कुमार मंगलम
128	विजया लक्ष्मी
129	विकास कुमार
130	विकाश कुमार
131	विकाश कुमार
132	विक्रम कुमार
133	विक्रम कुमार
134	विमलेश कुमार
135	विवेक कुमार
136	विवेक कुमार
137	मनीष कुमार
138	पुष्पांजलि कुमारी
139	ज्योति कुमारी
140	संजीव कुमार
141	जितेंद्र कुमार

142	सुलावी चकमा)एनयू स्टूडेंट(
143	प्रिंस राज
144	स्वाति सिन्हा
145	रिशु रंजन
146	सुबोध कुमार
147	सुशांत कुमार
148	श्री कुश शांडिल्य
149	सुश्री कात्यायनी नारायण सिंह
150	अरुंधति के. आर
151	कुमल कृष्ण
152	हर्ष रॉय
153	डॉ. सर्वेश कुमार
154	हर्षवर्धन
155	यशस्वी कांत कुमार
156	श्री प्रतीक राज
157	श्री चंद्रशेखर कुमार
158	सुश्री निपुण कुमारी सिन्हा
159	सुश्री प्रियंका कुमारी
160	सुश्री विफुल साक्षी
161	श्री विशाल कुमार
162	सुश्री दीपशिखा कुमारी
163	सुश्री डौली कुमारी
164	श्री अमर राज
165	सुश्री नीलम कुमारी
166	श्रीमती कुमारी बिंदु सिंह
167	श्री यशवंत सिंह
168	श्री कमलेश कुमार
169	श्री अजीत कुमार
170	श्री यशवंती आर्य
171	श्री पंकज कुमार
172	शोभा कुमारी
173	बिट्टू कुमार
174	अर्णव कुमार
175	अनंत कुमार
176	आकांक्षा भारती
177	अनुषा कुमारी
178	अब्बास अली
179	ब्यूटी कुमारी
180	गीतांजलि कुमारी

181	कुमारी पूजा
182	मेहंदी अली
183	ममता कुमारी
184	निपुण कुमारी
185	निशांत कुमार
186	प्रिंस कुमार
187	प्रवीण कुमार
188	रवि कुमार
189	चांदनी काप्सिमे
190	कुश शांडिल्य
191	नम्रता सिंह
192	निशा भारती
193	बिप्रांश कुमार
194	सौरभ कुमार
195	ऋषव राज
196	प्रतीक राज
197	शिवानी कुमारी
198	दीप्ति राज
199	रुपाली कुमारी
200	बजरंगी कुमार
201	सौरभ कुमार
202	सत्यम कुमार
203	ज्योति कुमारी
204	तनुजा कुमारी
205	कुमार शानू
206	रितिका कुमारी
207	रूनि कुमारी
208	स्वाति कुमारी
209	आशीष कुमार
210	सोनम कुमार
211	विकास गहलोत
212	देवेंद्र कुमार
213	सत्येंद्र कुमार
214	स्वीटी कुमारी
215	सज्जन कुमार अकेला
216	सुधीर कुमार श्रीवास्तव
217	सोनाली कुमारी
218	उज्जवल कुमार
219	विक्रम कुमार

220	संध्या कुमारी
221	मनीष कुमार
222	रंजय पांडे
223	निधि कुमारी
224	सोनम कुमारी
225	बिगुल कुमार
226	निभा कुमारी साहा
227	मृणालिनी नारायण सिंह
228	आदित्य रंजन
229	अमर राज
230	प्रतीक राज
231	डौली कुमारी
232	अर्णव कुमार
233	विजेंद्र कुमार
234	शिवशंकर कुमार
235	रोहित कुमार
236	धर्मवीर कुमार
237	रविशंकर कुमार
238	दीपशिखा कुमारी
239	चंद्रशेखर कुमार
240	यशवंत सिंह
241	कुमारी बिन्दु
242	सोनू कुमार
243	अखिलेश कुमार
244	नीतीश कुमार यादव
245	आलोक कुमार
246	ऋषिकेश कुमार
247	सूरज कुमार
248	विकास कुमार
249	रोहित कुमार तिवारी
250	अन्नी राज
251	विकास कुमार
252	राजबल्लम कुमार
253	कात्यानी नारायण सिंह
254	प्रेम कुमार
255	पंकज कुमार
256	हर्ष कुमार गुप्ता
257	देवेंद्र कुमार
258	सत्येंद्र कुमार

259	रवि रंजन गुप्ता
260	प्रशांत कुमार
261	रामजी कुमार गोस्वामी
262	चंद्रमणि कुमार
263	विकाश कुमार
264	आकाश कुमार
265	मोहम्मद खोस्तार आलम
266	सुतिल कुमार
267	मंटू कुमार
268	सज्जन कुमार अकेला
269	आलोक कुमार
270	मनोरमा रानी
271	रौशनी गोपाल
272	कुमार शानू
273	साकिन्द्र प्रसाद
274	शिशुपाल कुमार
275	चंदन कुमार
276	सौरभ कुमार
277	सत्यम कुमार
278	मुकेश कुमार
279	शुभम कुमार
280	ऋत्विक आर्यन
281	आरिफ अहमद
282	कुमार सईद
283	अरमानी महरा
284	सोनल जैनी
285	अरिंदम पोद्दार
286	मच्छान डैनियल एल
287	किशोर बिस्वास
288	चंद्र घोष
289	कल्पना के.
290	मानसी डे
291	नम्रता सिन्हा
292	पिजुस कांति
293	विष्णु कुमार
294	अदिति अजीत करंजकर
295	अनीश भट्टाचार्य
296	सुमित कुमार
297	आदर्श एम कुलकर्णी

298	हरिनी थंगाइवेल
299	किंगशोक सेन लस्कर
300	मेरिन जैकोब
301	रिद्धि गिरीश जोशी
302	जेहिदुल हुसैन
303	आशीष कुमार खन्ना
304	ऋषि कुमार
305	निधि चंद्रकांत जाधवी
306	यामिनी वर्मा
307	अरुंधुति बसु
308	आजाद हिंद गुलशन
309	रेवती आर. मेनन
310	अनिर्बान बसु
311	दीपक कुमार
312	जेम्स कोफी ब्लेय
313	मेक्सुधन जायसवाल
314	शिनी ठाकुर
315	अशोक कुमार
316	कृति शर्मा
317	श्री लक्ष्मी सौम्या गुल्लापल्ली
318	ललित आदित्य
319	प्रमोद कुमार लाल दास
320	श्वेता शेखर
321	अभिनव रंजन
322	आशुतोष सिंह
323	गौतम आनंद
324	जीवन लाल
325	कमलेश कुमार
326	शानबोरलिन वह्लांग
327	श्रीराम भास्करराव बोर्डे
328	दिनेश कुमार यादव
329	कुलदीप सिंह् लोहानी
330	नितिन राठी
331	हिरणमयानंद मोहंता
332	नितिन शर्मा
333	रबीशंकर सेनगुप्ता
334	तजामुल इस्लाम
335	इडा वेनोना हेंड्रिक्स
336	प्रियांशु प्रसाद

337	कुमार अभिषेक
338	दिग्विजय सिंह
339	चंद्र शेखर
340	सकीना बानू
341	आरती पी .देशमुख
342	पंकज सिंह ध्रुव
343	अभिषेक कुमार
344	ऐशी सरकार
345	आलोक कुमार बौद्धा
346	अमरदीप वर्मा
347	आरुषि बहुगुणा
348	अरविंद जामवाल
349	अरविंद सिंह जामवाल
350	असिहादि मुफ़्सी
351	धीरज कुमार सिंह
352	दिलीप एच आर
353	डॉ गजेंद्र सिंह यादव
354	जया बाविस्कार
355	ललिया डाकघोर
356	मेघना राज
357	निधि प्रिया
358	ओशिन विप्र सागर
359	राधा रानी सिंह
360	राजेश सेठ
361	रंजना सिंह
362	रीमा सरकार
363	रिशु रंजन
364	रोहित कृष्णन
365	संजय पैकराव
366	संजीव कुमार कांति
367	सौरभ शर्मा
368	सोमरीता मजूमदार
369	तरुण सिंह सेंगरी
370	टिन ट्रान
371	जगदीश वेकारिया
372	केतकी सुर्वे
373	के के पांडे
374	वेन. आलोक
375	अभिलेश कुमार

376	अभिषेक कुमार
377	अमन राज
378	आमोद कुमार हियासी
379	बिनिता कुमारी
380	चंदन कुमार
381	चंदन कुमार उपासक
382	चंद्रमणि कुमार
383	दीपक कुमार
384	धर्मवीर कुमार
385	धरनवीर प्रसाद
386	दिव्यांश कुमार
387	एलीशा
388	एलिज़ा
389	गुंजन कुमार
390	हरि नारायण मंगलम
391	हर्षु कुमारी
392	कैलाश पासवान
393	करुणेश कुमार
394	लोच सोवाना
395	मोहन कुमार
396	मुकेश कुमार
397	नम्रता कुमारी
398	पंकज कुमार
399	फूल कुमारी
400	फाम फुओक क्यू
401	प्रज्ज्वल कुमार
402	प्रेमजीत कुमार
403	प्रेमजीत कुमार
404	प्रिंस कुमार
405	प्रिया कुमारी
406	प्रियंका कुमारी
407	राजेश कुमार
408	रणबीर कुमार
409	रितेश कुमार
410	रीतिक रंजन
411	ऋत्विक आर्यन
412	रुद्र प्रताप
413	सागर कुमार
414	सागर नरोत्तम

415	संदीप कुमार
416	संजय कुमार
417	सौरभ शर्मा
418	शांतनु कुमार
419	शिवम कुमार
420	शोभा विश्वनाथ सिद्धार्थ
421	शुभम राज
422	सुमंत कुमार
423	सुतिल कुमार
424	ट्रान थी थु ट्रांग
425	टूओंग थि अन्ह तुयेत
426	उपेंद्र राज
427	विकास सिंह

सम्मेलन और सेमिनार

ज्ञान के प्रसार के एक भाग के रूप में उच्च अध्ययन और तुलनात्मक फोकस के लिए नालंदा विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. सुनैना सिंह की पहल के अनुरूप नई ज्ञान प्रणाली के उभरते विषयों पर सम्मेलनों और संगोष्ठियों का आयोजन करता है। प्रातिवेदन अवधि के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए:

छठा धर्म: धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

कोविड काल के पश्चात विश्व क्रम में धर्म: धम्म परम्पराओं का निर्माण

नालंदा विश्वविद्यालय ने इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से नवम्बर 2021 में अपने मुख्य परिसर में **कोविड काल के पश्चात विश्व क्रम में धर्म: धम्म परम्पराओं का निर्माण पर छठे धर्म: धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन** का आयोजन किया।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और श्रीमती मीनाक्षी लेखी, माननीय विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री, भारत सरकार ने समापन भाषण दिया। इस सम्मेलन में दुनिया के विभिन्न हिस्सों से 200 से अधिक विद्वानों ने शोध पत्र/मुख्य नोट/पूर्ण भाषण प्रस्तुत किए । माननीय कुलपति प्रो. सिंह की पहल के साथ नालंदा विश्वविद्यालय ने लगातार चौथे, पांचवें और छठे धर्म- धम्म अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन नालंदा विश्वविद्यालय में किया ।

अंतर्राष्ट्रीय छात्र

नालंदा विश्वविद्यालय छात्र विकास को बढ़ाने और विविधता को बढ़ावा देने के साथ-साथ अपने छात्रों सहित परिसर समुदाय के भीतर समावेश के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है। इन क्षेत्रों में नालंदा विश्वविद्यालय की स्पष्ट सफलताओं के लिए कक्षा से परे भी उत्कृष्ट शिक्षा का एक खुला वातावरण, पार-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और एक अंतरराष्ट्रीय अभिविन्यास महत्वपूर्ण हैं। इसके कार्यक्रम दुनिया के सभी भाग से छात्रों को आकर्षित करते रहे हैं। नालंदा में अंतर्राष्ट्रीय छात्र समुदाय 30 से अधिक राष्ट्रीयताओं का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए, विश्वविद्यालय में कुल 1070 छात्र थे। इस वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने विश्व साहित्य, हिंदू अध्ययन (सनातन) में नए स्नातकोत्तर कार्यक्रम और भाषाओं में अल्पकालिक कार्यक्रम (तिब्बती, पालि), नालंदा विरासत; बंगाल की खाड़ी अध्ययन; नवाचार और नेतृत्व; और, चेतना अध्ययन शुरू किए हैं जो अंतरराष्ट्रीय और अन्य छात्रों के हितों के लिए प्रासंगिक हैं।

बौद्ध जप के दौरान वियतनाम के छात्र

अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी

विश्वविद्यालय एक सीमारहित सीखने का अनुभव प्रदान करता है। इस प्रकार, नालंदा के अधिकांश छात्र अंतर्राष्ट्रीय हैं। नालंदा परिसर में 31 देशों के छात्र एक साथ रहते हैं, जो इसके बहु-सांस्कृतिक ताने-बाने को समृद्ध करते हैं। चूंकि विश्वविद्यालय दुनिया के भावी विचारकों को आकार प्रदान करने के कार्य में संलग्न है, इसलिए इसका प्राथमिक फोकस सार्वभौमिक शांति और वैश्विक सद्भाव को बढ़ावा देना है। इसलिए नालंदा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगम पर अद्वितीय है क्योंकि यह अपने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को एक घर प्रदान करने और एशिया और दुनिया के भविष्य के नेतृत्वकर्ताओं को एक साथ लाने का प्रयास करता है।

शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए, कुल 173 अंतर्राष्ट्रीय छात्रों (31 देशों से) को विभिन्न स्नातकोत्तर और पीएचडी (बैच 2020-23 के 05 पीएचडी, बैच 2020-22 के 82 स्नातकोत्तर, और बैच 2021-23 के 86 छात्र स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रदान किया गया। बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म में 82 अंतर्राष्ट्रीय छात्र हैं, इसके बाद पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन में (33), संधारणीय विकास और प्रबंधन में एमबीए (27), इतिहास अध्ययन में (20), अंग्रेजी में विश्व साहित्य (09), और हाल ही में शुरू स्नातकोत्तर हिंदू अध्ययन पाठ्यक्रममें दो छात्र हैं। विद्यालयवार संरचना नीचे दी गई है।

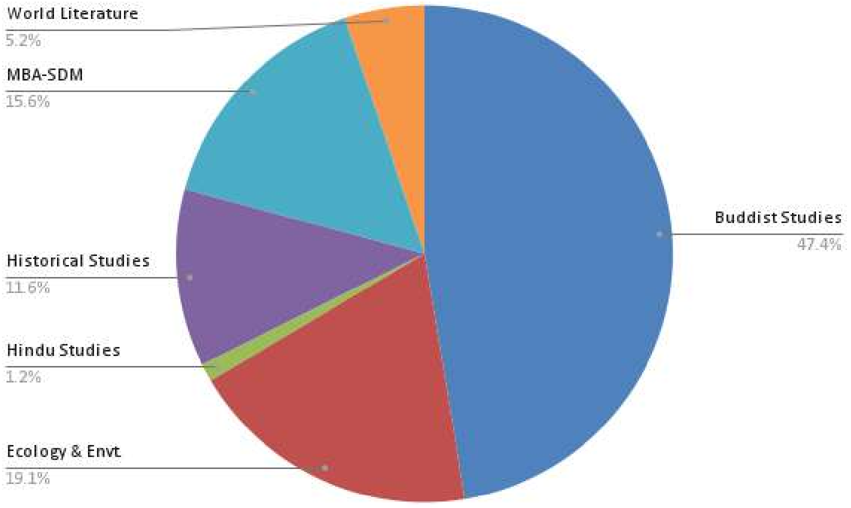

विश्व साहित्य 5.2% एमबीए- एसडीएम 15.6% इतिहास अध्ययन 11.6% हिन्दू अध्ययन 1.2% पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण 19.1% बौद्ध अध्ययन 47.4%

नालंदा विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2021-22 में 31 राष्ट्रीयताओं के छात्रों ने दाखिला लिया। पूर्व-एशियाई देशों के छात्रों का प्रतिनिधित्व अधिकतम है, यह क्षेत्र कुल अंतरराष्ट्रीय छात्रों (100 छात्रों) के आधे से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है, तत्पश्चात दक्षिण एशिया (47), अफ्रीका (12) का स्थान आता है। क्षेत्रवार छात्रों का आरेखीय प्रतिनिधित्व नीचे दिया गया है:

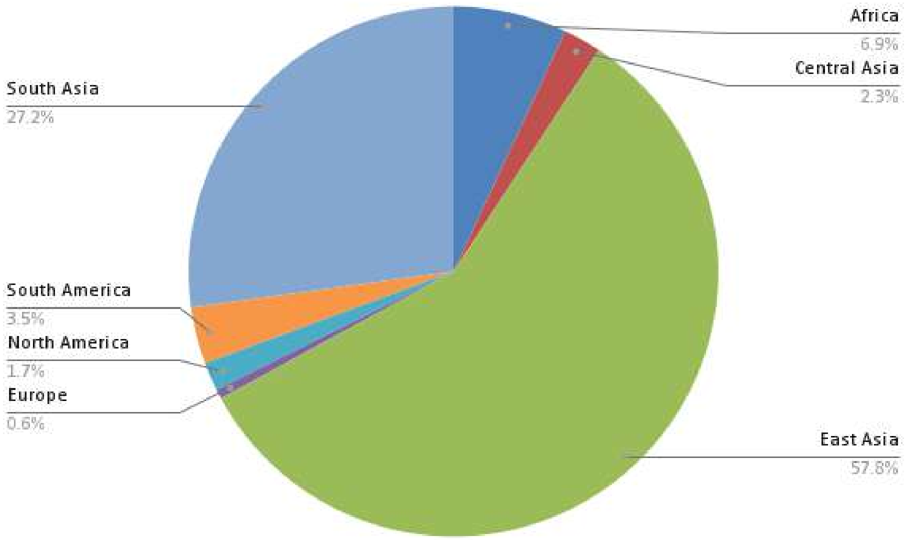

दक्षिण एशिया 27.2% दक्षिण अमेरिका 3.5% उत्तरी अमेरिका 3.5% यूरोप 0.6 % अफ्रीका 6.9 % मध्य एशिया 2.3% पूर्वी एशिया 57.8%

लिंग-वार वितरण: पुरुष और महिला छात्रों का उचित प्रतिनिधित्व है, निम्नलिखित आरेखीय प्रतिनिधित्व विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिंग-वितरण को प्रदर्शित करता है।

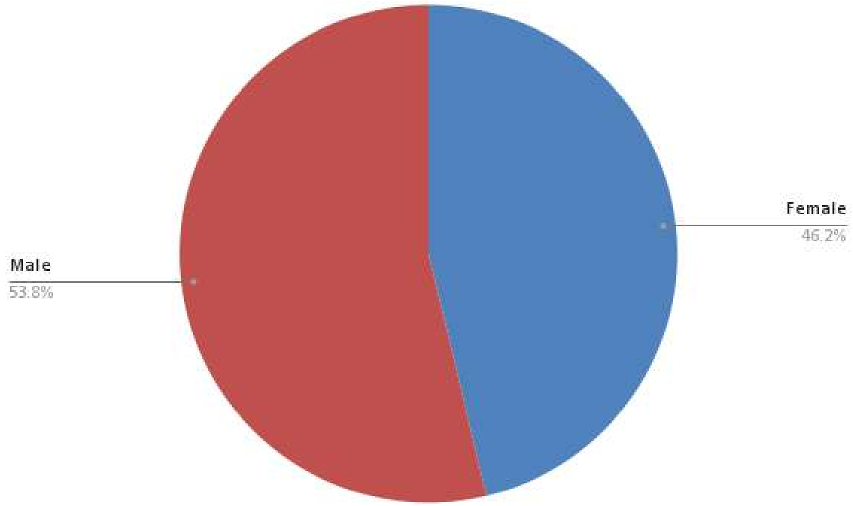

पुरुष 53.8% महिला 46.2 %

छात्रवृत्ति

माननीय कुलपति की पहल से शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए विश्वविद्यालय को छात्रवृत्ति योजनाएं प्राप्त हुई हैं। छात्रवृत्ति योजनाओं का विवरण नीचे दिया गया है:

नालंदा विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति योजना : विश्वविद्यालय ने भूटान के छात्रों के लिए प्रति शैक्षणिक वर्ष 30 छात्रवृत्तियां (स्नातकोत्तर के लिए 20, एमबीए और पीएचडी प्रत्येक के लिए 5) प्राप्त की हैं। छात्रवृत्ति स्लॉट मौजूदा 5 स्लॉट से बढ़ाकर 30 स्लॉट प्रति शैक्षणिक वर्ष कर दिया गया है।

आसियान छात्रवृत्ति योजना : विश्वविद्यालय ने आसियान सदस्य देशों के छात्रों के लिए प्रति शैक्षणिक वर्ष में 50 छात्रवृत्तियां (स्नातकोत्तर के लिए 40, पीएचडी के लिए 10) प्राप्त की हैं। छात्रवृत्ति योजना के 20 स्लॉट को बढ़ाकर प्रति शैक्षणिक वर्ष 50 स्लॉट कर दिए गए हैं।

बिम्सटेक छात्रवृत्ति योजना : विश्वविद्यालय को बिम्सटेक देशों के छात्रों के लिए प्रति शैक्षणिक वर्ष 25 छात्रवृत्तियां (20 स्नातकोत्तर और 5 पीएचडी के लिए) प्राप्त हुई हैं। छात्रवृत्ति स्लॉट मौजूदा 12 पीजी स्लॉट से बढ़ाकर 20 स्लॉट और 3 पीएचडी स्लॉट से बढ़ाकर 5 पीएचडी स्लॉट प्रति शैक्षणिक वर्ष में कर दिए गए हैं।

चेन्नई में तंजानिया के मानद वाणिज्य दूतावास से वित्त पोषण: माननीय कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) के प्रतिष्ठित नेतृत्व को स्वीकार करते हुए, चेन्नई में संयुक्त गणराज्य तंजानिया के मानद कौंसल, प्रो सुनैना सिंह के अग्रणी कार्य और एक विश्व स्तरीय संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण में उनकी दृष्टि की सराहना करना चाहते हैं, इसी क्रम में उन्होंने एनयू में किसी भी अंतर्विषयी पाठ्यक्रम से एक छात्र के लिए एक योग्यता छात्रवृत्ति (दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए ट्यूशन शुल्क छूट) की स्थापना की है । प्रो सुनैना सिंह मेरिट छात्रवृत्ति के अलावा, दो अन्य छात्रवृत्तियां चेन्नई में तंजानिया के मानद वाणिज्य दूतावास द्वारा प्रायोजित हैं: (अ) नालंदा विश्वविद्यालय में किसी भी अंतर्विषयी पाठ्यक्रम से एक भिक्षु छात्र को एक छात्रवृत्ति (दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए ट्यूशन शुल्क छूट) और (ब) नालंदा विश्वविद्यालय में किसी भी अंतर्विषयी पाठ्यक्रम से एक मेधावी छात्र (तंजानिया के छात्र को विशेष वरीयता) को एक छात्रवृत्ति (दो वर्षीय मास्टर कार्यक्रम के लिए ट्यूशन शुल्क छूट)।

विनिमय कार्यक्रम

विश्व स्तरीय सर्वांगीण शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि के साथ, एनयू में पाठ्यक्रमों का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध करना और उनके व्यक्तिगत और शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना है। यह नए और अनूठे क्षेत्रों की खोज और अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है । छात्रों के बीच ज्ञान में सक्रिय वृद्धि और कौशल के उन्नयन के लिए, एनयू ने विश्व स्तर पर विभिन्न संस्थानों के साथ सहयोग स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त, इसने एनयू में संकाय को सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों के साथियों के साथ सहयोग स्थापित करने में सक्षम बनाया है। उत्कृष्ट शैक्षणिक मानकों और विविधतापूर्ण ज्ञान प्राप्ति के अवसर प्रदान करने हेतु एनयू टीम छात्र और संकाय विनिमय कार्यक्रम को लागू करने के लिए विभिन्न उपाय कर रही है।

किए गए कार्यक्रम/गतिविधियां

क्रमांक	घटना गतिविधि /	दिनांक
1.	पीएचडी के छात्र नेतृत्व में हेरिटेज वॉक, एनयू, राजगीर ,	10.09.2021
2.	क्रिकेट मैच का अभ्यास सत्र	11.09.2021
3.	अजातशत्रु आवासीय हॉल में क्रिकेट ओवर का 20 मैच	12.09.2021
4.	छात्र और संकाय कर्मचारियों/के साथ ट्रेकिंग - विभरगिरी, राजगीर	26.08.2021
5.	छात्र और संकाय कर्मचारियों के साथ /ट्रेकिंग - ग्रिधाकुटा हिल, राजगीर	04.09.2021
6.	शैक्षिक यात्रानालंदा खंडहर -, साइट संग्रहालय और जुआंग मेमोरियल हॉल	18.09.2021
7.	एक सांस्कृतिक संध्या	25.09.2021
8.	दीपावली रात्रि उत्सव	04.11.2021
9.	क्रिसमस दिवस समारोह	25.12.2021
10.	नव वर्ष उत्सव	31.12.2021
11.	वियतनामी चंद्र दिवस	31.01.2022
12.	सरस्वती पूजा	05.02.2022
13.	होली का त्यौहार 2022	16.03.2022

छात्र जीवन

छात्र परिसर समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनकी समग्र देखभाल, कल्याण और स्वास्थ्य विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन सभी बिन्दुओं की सेवा के लिए, विश्वविद्यालय सक्रिय रूप से अपने संचालित आवासीय हॉल, एक 24x7 परिसर स्वास्थ्य केंद्र, रोजमर्रा के परिवहन के लिए बसों और सहयोगपरक समझ, पारस्परिक सांस्कृतिक जागरूकता और पारस्परिक-संवाद की भावना को बढ़ावा देने के लिए अनेक गतिविधियों की श्रृंखला के अभिकल्पन की निगरानी करता है।

नालंदा में अध्ययन के दौरान छात्रों को छात्र समितियों और क्लबों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । वे विश्वविद्यालय के किसी भी क्लब और सोसाइटी से जुड़ने के लिए अपनी अभिरुचि प्रकट कर सकते हैं। इन समूहों में शामिल होने से छात्रों को अपने संचार, संगठन और सामाजिक कौशल विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है जो यथार्थ जगत की परिस्थितियों में मूल्यवान साबित होते हैं। छात्र स्वयंसेवक इन क्लबों को चलाते हैं, क्योंकि विश्वविद्यालय केवल वित्तीय सहायता और सुविधाएं प्रदान करता है। इन क्लबों की कई गतिविधियाँ संकाय और कर्मचारियों की भागीदारी के लिए भी खुली हैं। छात्रों के लिए उपलब्ध कुछ विकल्प हैं: स्पोर्ट्स क्लब, अवेयरनेस सोसाइटी, लिटरेरी सोसाइटी, एनवायरनमेंट क्लब, कल्चरल एंड आर्ट्स सोसाइटी, करियर रिसोर्स सेल और सोशल क्लब। ये संगठन समय-समय पर गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित करते हैं और परिदृश्य अन्वेषण के साथ-साथ बातचीत करने और साथियों से सीखने का यह एक सर्वोत्तम तरीकों में से एक है।

भावी छात्रों और उनके गुरुओं को परिसर के अन्वेषण और वर्तमान छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। फ्रंट ऑफिस कम से कम पांच और अधिकतम दस छात्रों के लिए समूह दौरों की व्यवस्था भी करता है। संभावित और मौजूदा छात्रों के लिए सभी प्रासंगिक जानकारी छात्र की हैंडबुक पर प्रदान की जाती है , एक विस्तृत दस्तावेज जिसे विश्वविद्यालय की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

लिंग अनुकूल परिसर

नेट-जीरो और पर्यावरण के अनुकूल सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ नालंदा विश्वविद्यालय परिसर को अधिक लिंग अनुकूल और स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से, कुलपति और समिति प्रभारी ने परिसर समुदाय की महिला सदस्यों के लाभ हेतु सुविधाओं के अधिष्ठापन कार्य का शुभारंभ किया। । परिसर के विभिन्न स्थानों पर सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन और सेनेटरी वेस्ट इंसीनरेटर मशीनों की खरीद की आवश्यकता वर्ष 2022 में पहले ही चिन्हित की जा चुकी है । इस परिसर के राजगीर के बाजारों से दूर स्थित होने के कारण, परिसर में आपातकालीन और सैनिटरी पैड तक पहुंच को महिलाओं के लिए आवश्यक माना जाता था। समिति प्रभारी ने परिसर के तीन स्थानों: शिक्षण, संकाय और महिला आवासीय ब्लॉक में सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीनों के अधिष्ठापन का निरीक्षण किया। अब ये मशीनें काम कर रही हैं और प्राप्त फीडबैक के अनुसार उपयोगी साबित हो रही हैं।

इसके अलावा, चिकित्सा अपशिष्ट, जैसे सैनिटरी नैपकिन, को घरेलू कचरे के रूप में फेंक दिया जाता है, लेकिन इसे अन्य पुनर्चक्रण पदार्थों से मैन्युअल रूप से अलग किया जाना चाहिए। डिस्पोजेड नैपकिन रोगजनकों के पनपने और संक्रामक रोगों को फैलने का एक कारण बन सकते हैं। महिला आवासीय हॉलों से उत्पन्न अपशिष्ट को स्वच्छ तरीके से पुनर्चक्रण करने के मुद्दे को संबोधित करने और महिला छात्रों और कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए, उक्त समिति के प्रस्तावों के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सेनेटरी पैड इंसीनरेटर मशीनें खरीदी गईं। ये मशीनें एक विशेष तापमान पर पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ तरीके से इस्तेमाल किए गए नैपकिन को जलाती हैं। फिलहाल ये मशीनें महिला आवासीय हॉल में लगाई गई हैं। जैसे-जैसे परिसर में महिलाओं की संख्या बढ़ती जाएगी, विश्वविद्यालय और अधिक वेंडिंग और इंसीनरेटर मशीनों की खरीद करेगा।

महिला आवासीय हॉल में स्थापित सेनेटरी वेस्ट इंसीनरेटर मशीन; परिसर के तीन स्थानों पर सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगाई गई हैं

पुस्तकालय

नालंदा विश्वविद्यालय अपने पुस्तकालय को इसकी डिजाइन और संग्रह क्षमता दोनों के मामले में अपने मास्टर प्लान का केन्द्रीय आधार मानता है। एनयू पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य अत्याधुनिक संसाधनों प्रिंट और डिजिटल दोनों तथा सेवाओं के साथ एक शीर्ष संसाधन केंद्र बनना है। पुस्तकालय विश्वविद्यालय के पूरे समुदाय की शैक्षणिक यात्रा में अनवरत रूप से एक साथी होगा। यह ज्ञान के नए निकाय के सृजन की तलाश में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा ।

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय सेवाओं में उत्कृष्टता के साथ-साथ विश्वविद्यालय समुदाय की बौद्धिक जांच, अनुसंधान और आजीवन सीखने की जरूरतों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है । इसका दृष्टिकोण बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और परिसर अनुसंधान में अंतर्विषयी शोध को बढ़ावा देने के लिए नवीन सेवाओं के माध्यम से सूचना की निर्बाध पहुंच प्रदान करना है।

यह छात्रों और शिक्षकों के समग्र विकास के लिए विभिन्न प्रकार के आसानी से सुलभ प्रारूपों में गुणवत्तापूर्ण संसाधनों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक बौद्धिक केंद्र बनाने के लिए भी प्रतिबद्ध है। कोविड -19 महामारी की स्थिति के कारण इसका मुख्य फोकस प्रयोक्ता समुदाय तक सेवा प्रदान करने के लिए ई-संसाधन संग्रह को बढ़ाना है।

संग्रह

पुस्तकालय में निम्नलिखित संग्रह /समर्थन उपलब्ध है।

मुद्रित पुस्तकें

पुस्तकालय में प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा उपहार में दी गई पुस्तकों के निजी संग्रह समेत मुद्रित पुस्तकों के 13622 से अधिक खंड उपलब्ध हैं।

ई-संसाधन

वित्तीय वर्ष 2021-22 के अंत में एनयू पुस्तकालय में ई-जर्नल संग्रह जैसे- ब्रिल रिलीजियस कलेक्शन, जेस्टोर , नेचर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस और अन्य ई-जर्नल का एक्सेस उपलब्ध था ।

ई बुक्स

पुस्तकालय विभिन्न प्रकाशकों जैसे- ऑक्सफोर्ड, ब्रिल, कैम्ब्रिज, एल्सेवियर, टेलर और फ्रांसिस आदि से 1898 से अधिक ई-पुस्तकों का एक्सेस प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तकालय "प्रोक्वेस्ट ई-बुक सेंट्रल" के द्वारा 1.2 लाख से अधिक ई-पुस्तकों का एक्सेस प्रदान करता है।

ई-जर्नल

पुस्तकालय विभिन्न प्रकाशकों/एग्रीगेटर डेटाबेस जैसे ब्रिल, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, जे-स्टोर, सेज आदि से 4350 से अधिक ई-जर्नल्स का एक्सेस प्रदान करता है, इसके अतिरिक्त यह विभिन्न प्रकाशनों से 12 पत्रिकाओं और इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली पत्रिकाओं का एक्सेस प्रदान करता है।

ऑनलाइन डेटाबेस

एनयू पुस्तकालय ने ऑनलाइन डाटाबेस जैसे हार्वर्ड बिजनेस स्कूल पब्लिशिंग केसेज, इन्टरनेशनल एनर्जी एजेंसी (आईईए), प्रोक्वेस्ट डिजरटेशन एंड थीसिस ग्लोबल, प्रोक्वेस्ट हिस्टोरीकल न्यूजपेपर, साउथ एशियन आर्काइव, रिमोटएक्स और इंडियास्टैट की सदस्यता ग्रहण की है।

साउथ एशियन आर्काइव

यह ऑनलाइन डेटाबेस सामाजिक विज्ञान और मानविकी से दुर्लभ प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों के लाखों पृष्ठों का एक्सेस प्रदान करता है - इसमें अंग्रेजी और स्थानीय दोनों भाषाओं में अंतर्विषयी सामग्रियों का भंडार जैसे पुस्तकें, पत्रिकाएं, फिल्म इफेमरा, जनगणना रिपोर्ट और अन्य पाठ्य-सामाग्री शामिल है। इसके अतिरिक्त एक ऑनलाइन डेटाबेस जैसे-बिबलियोग्राफी ऑफ एशियन स्टडीज भी शामिल है।

इन्टरनेशनल एनर्जी एजेंसी (आईईए)

आईईए परिवार 30 सदस्य देशों और 8 एसोसिएशन देशों के साथ वैश्विक ऊर्जा खपत का लगभग 75% और वैश्विक ऊर्जा के आधे से अधिक उत्पादन के प्रति उत्तरदायी है। यह ऊर्जा नीतियों पर काम करता है तथा दुनिया भर में प्रशिक्षण आयोजित करता है, यह सरकार, उद्योग और अनुसंधान संगठनों के 6000 से अधिक विशेषज्ञों के साथ सहयोग स्थापित करता है तथा प्रमुख वक्ताओं द्वारा ऊर्जा के भविष्य और अनेक संबंधित विषयों पर चर्चा करता है।

इंडिया स्टैट डॉट कॉम (**IndiaStat.com**)

यह 56 सहयोगी साइटों का एक समूह तथा एक सबसे व्यापक ई-संसाधन है । यह विभिन्न सामाजिक-आर्थिक मापदंडों पर भारत (इसके 6 भौगोलिक क्षेत्रों, 31 राज्यों और 19 क्षेत्रों) के सामाजिक-आर्थिक सांख्यिकीय सूचनाओं के बारे में द्वितीयक स्तर का एक्सेस प्रदान करता है।

मीडिया - सीडी/डीवीडी

पुस्तकालय में 573 सीडी/डीवीडी का संग्रह है जिसमें आमंत्रित अतिथि के व्याख्यान, फोटोग्राफ, शैक्षिक सीडी आदि शामिल हैं।

उपहार - पुस्तकें और पत्रिकाएं

1746 प्रिंट जर्नल (संस्करण) प्रोफेसर वांग गुंगवु द्वारा उपहार में दिए गए। प्रो. वांग गुंगवु , प्रो. केन गार्डिनर, प्रो. मार्गरेट चटर्जी, प्रो. अरविंद शर्मा, श्री जे.सी. कपूर, श्री युबराज कृष्ण, श्री अशोक के. भट्टाचार्य और डॉ. पारस्पति नाथ सिन्हा द्वारा 2450 से अधिक मुद्रित पुस्तकें उपहार में दी गई हैं। ।

शोध समर्थित उपकरण:

साहित्यिक चोरी प्रतिरोधी उपकरण (टर्निटिन)

पुस्तकालय के पास साहित्यिक चोरी प्रतिरोधी उपकरण- टर्निटिन भी उपलब्ध है । यह शैक्षिक अखंडता को बढ़ावा देने, ग्रेडिंग और फीडबैक को सुव्यवस्थित करने, साहित्यिक चोरी को रोकने और छात्र परिणामों में सुधार लाने में सहयोग प्रदान करता है। साहित्यिक चोरी की रोकथाम प्रणाली एक सर्च इंजन का उपयोग करके कुछ संदिग्धों के कागजात को स्कैन करने के लिए आवश्यक समय के एक अंश में सभी शोध कार्यों की त्वरित और प्रभावी जांच की अनुमति देती है। यह एक प्रोप्राइटरी एल्गोरिथ्म का उपयोग करते हुए कई डेटाबेस में प्रस्तुत कागजात की तुलना करके संभावित गैर-मूल सामग्री की जांच करता है। यह अपने स्वयं के डेटाबेस को स्कैन करता है, और बड़े अकादमिक स्वामित्व वाले डेटाबेस के साथ लाइसेंसिंग समझौते भी करता है।

ग्रामर्ली

पुस्तकालय के पास "ग्रामर्ली" का लाइसेंस संस्करण है, यह एक ऑनलाइन प्रूफ-रीडिंग टूल है जो व्याकरण, विराम चिह्न और शैली के दृष्टिकोण से विषय की जांच करता है, और एक प्रासंगिक वर्तनी जांच की सुविधा देता है।

रेफवर्क

पुस्तकालय रेफवर्क (RefWork) उपकरण, एक संदर्भ प्रबंधन सेवा प्रदान करता है। यह शोध पत्र तैयार करने के लिए एक अधिक कुशल और विश्वसनीय प्रक्रिया को सक्षम बनाते हुए छात्रों, संकाय की जरूरतों का समर्थन करता है।

सदस्यता:

डवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (डेलनेट) - रिसोर्स शेयरिंग सर्विस

नालंदा विश्वविद्यालय ने स्वयं को डवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (DELNET) के सदस्य के रूप में पंजीकृत किया जो पुस्तकालयों के नेटवर्क के बीच संसाधन साझा करने को बढ़ावा देता है। यह उपयोगकर्ताओं को कम्प्यूटरीकृत

सेवाएं प्रदान करने के अलावा, उपयुक्त संग्रह विकास के प्रयासों के समन्वयन के लिए और जहां भी संभव हो अनावश्यक दोहराव को कम करने के लिए जानकारी एकत्रित करता है, उसे संरक्षित और प्रसारित करता है।

डेलनेट सक्रिय रूप से सदस्य पुस्तकालयों में उपलब्ध संसाधनों के विभिन्न यूनियन कैटलॉग के संकलन में लगा हुआ है। इसने पहले ही यूनियन कैटलॉग ऑफ़ बुक्स, यूनियन लिस्ट ऑफ़ करंट पीरियोडिकल्स, यूनियन कैटलॉग ऑफ पीरियोडिकल्स, सीडी-रोम, डेटाबेस, डेटाबेस ऑफ इंडियन स्पेशलिस्ट्स, डेटाबेस ऑफ थीसिस एंड डिजरटेशन आदि का निर्माण कर लिया है।

इनफॉर्मेशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क (इन्फ्लिबनेट) सेंटर

गांधीनगर में स्थित, इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET) भारत के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) का एक स्वायत्त अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र (IUC) है। यूजीसी- इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम अपने सदस्य संस्थानों के लिए बड़ी संख्या में संसाधनों की सदस्यता लेता है। सब्स्क्राइब किए गए सभी इलेक्ट्रॉनिक संसाधन प्रकाशक की वेबसाइटों पर उपलब्ध हैं। इसके एक्सेस में पूर्ण पाठ्य-सामग्री ई-संसाधन, बिबलियोग्राफिक डेटाबेस और अन्य ओपन एक्सेस संसाधन शामिल हैं। एनयू पुस्तकालय ने इनफ्लिबनेट केंद्र के साथ पंजीकरण किया है। पुस्तकालय उच्च शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स संसाधनों के लिए शोध सिंधु, ईएसएस, इनफ्लिबनेट कंसोर्टियम का एक प्रमुख सदस्य है

लाइब्रेरी ऑटोमेशन

कोहा

पुस्तकालय के उप-प्रणालियों के संचालन (पुस्तकों के परिग्रहण, सूचीकरण और संचलन का प्रबंधन) हेतु एनयू पुस्तकालय को कोहा पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर के साथ स्वचालित किया गया है। कोहा एक ओपन सोर्स इंटीग्रेटेड लाइब्रेरी सिस्टम (ILS) है।

ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (ओपैक)

प्रयोक्ताओं द्वारा पुस्तकालय डेटा खोज के लिए ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग की शुरुआत की गई है। ओपैक कोहा बिबलियोग्राफी डेटाबेस से किसी भी सूचीबद्ध जानकारी को ऑनलाइन समाप्त करने के लिए एक शक्तिशाली खोज इंजन है। यह वेब-आधारित ओपेक सिस्टम पर भी उप्रयोक्ताओं को सेवा प्रदान करता है।

वेब ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (वेब ओपेक)

यह पुस्तकालय संग्रह के लिए एक सर्च इंजन है। प्रयोक्ता डिस्कवरी (सिंगल सर्च) टूल के साथ सभी पुस्तकालय संग्रह, ई-पत्रिकाओं और डेटाबेस से सर्च कर सकते हैं। पुस्तकालय ने समन डिस्कवरी सर्विस की सदस्यता ली है,

जो एक ऑनलाइन सर्च टूल है जो सिंगल सर्च बॉक्स का उपयोग करके पुस्तकालय ई-संसाधनों का एकीकृत सूचकांक प्रदान करता है।

डिजिटल इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी (डीस्पेस)

नालंदा विश्वविद्यालय में सृजित बौद्धिक अध्येततापूर्ण परिणामों को संग्रहित करने के लिए, पुस्तकालय ने ओपन-सोर्स डिजिटल लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर, डीस्पेस संचालित किया है । प्रारंभ में, "संकाय प्रकाशन" और "पाठ्यक्रम सामग्री" का डिजिटलीकरण शुरू किया गया है और प्रयोक्ता उस पूर्ण पाठ्य सामग्री का उपयोग करने में सक्षम हैं। बाद में, निम्नलिखित सामग्री संग्रह का एक हिस्सा होगी और डीस्पेस के माध्यम से सुलभ होगी :

छात्रों/संकाय द्वारा की गई परियोजना रिपोर्ट, थीसिस, लेख और केस स्टडी।

नालंदा विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित आगंतुकों द्वारा दिए गए व्याख्यान

नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित समाचार

अन्य सेवाएं

पुस्तकालय में निम्नलिखित सेवाएं भी उपलब्ध कराई गईं:

सेलेक्टिव डिसैमिनेशन ऑफ इनफॉर्मेशन (एसडीआई): एसडीआई एक महत्वपूर्ण मूल्य वर्धित सेवा का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह वह माध्यम है जिसके द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष प्रयोक्ताओं को विशिष्ट रुचि के विषयों पर नवीनतम साहित्य के बारे में सूचित कर सकते हैं। वास्तव में, यह एक ऐसी सेवा है जिसके द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष स्वयं अद्यतित रह सकते हैं। कम्प्यूटरीकरण द्वारा एक एसडीआई सेवा को बहुत सुगम बनाया गया है। यह आम तौर पर उपयोगकर्ता-प्रोफाइल के एक सेट पर आधारित होता है जिसमें डेटा जैसे रुचि के विषय, संबद्ध कीवर्ड और उपयोगकर्ता द्वारा प्राथमिक रुचि वाले साहित्य के लिए कुछ नमूना उद्धरण शामिल होते हैं।

करेंट अवेयरनेस सर्विस (सीएएस): सीएएस सेवा, पाठक को नवीनतम जानकारी के साथ संपर्क किया जाता है। यह सेवा उस पाठक के लिए महत्वपूर्ण है जो केवल अपने विशिष्ट विषय में नवीनतम विकास को जानना चाहता है। इसमें ऐसी सेवाएं, जर्नल सेवा की सामग्री, वर्तमान जागरूकता सूची शामिल है, इस प्रकार की सेवा को मम्प डॉक्यूमेंटेशन सेंटर द्वारा पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को वर्गीकृत करके और बिबलियोग्राफी सूची प्रकाशित करके विषय-वार वर्गीकृत किया जाता है। इन सूचियों की सहायता से समय पर पहचान सेवा, रिसर्च इन प्रोग्रेस बुलेटिन, न्यूजपेपर क्लिपिंग सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

रेफरेन्स इनफॉर्मेशन सर्विस (आरआईएस): संदर्भ सेवा पाठकों को किसी विशेष प्रश्न, समस्या या असाइनमेंट के जवाब में सूचना के स्रोतों की पहचान करने में मदद करने की प्रक्रिया है। संदर्भ सेवाएँ एक पुस्तकालय में संदर्भ विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ हैं जो पुस्तकालय संरक्षक को उनकी आवश्यक जानकारी तक पहुँच प्राप्त करने में मदद करती हैं। संदर्भ विभाग पुस्तकालय प्रयोगकर्ता को पुस्तकालय सामग्री के लिए दिशा प्रदान करता है, विभिन्न प्रकार की सूचनाओं पर पुस्तकालय संग्रह और सेवाओं के बारे में सलाह देता है।

इनफॉर्मेशन लिटरैसी (आईएल): सूचना साक्षरता अपने सभी विभिन्न स्वरूपों में सूचनाओं को खोजने, मूल्यांकन करने, व्यवस्थित करने, उपयोग करने और संचार करने की क्षमता है, यह विशेष रूप से निर्णय लेने, समस्या समाधान या ज्ञान के अधिग्रहण की आवश्यकता वाली स्थितियों में सहयोग प्रदान करती है । यह अनुसंधान कौशल, महत्वपूर्ण सोच कौशल, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी कौशल और संचार कौशल का एक संयोजन है। शैक्षणिक सफलता, कार्यस्थल में प्रभावी कामकाज और समाज में भागीदारी के लिए सूचना साक्षरता आवश्यक है।

उपयोगकर्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम : एनयू पुस्तकालय विभाग ने ई-संसाधनों और डेटाबेस जैसे ब्रिल, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, जेस्टोर आदि, साउथ एशिएन आर्काइव और अन्य 12 ई-पत्रिकाओं के एक्सेस के लिए सभी उपयोगकर्ता समुदाय के लिए जागरूकता सत्र आयोजित किया।

रिमोट एक्सेस : रिमोट लॉगिन/ सिंगल साइन-ऑन। लाइब्रेरी ने रिमोटएक्स के माध्यम से ई-संसाधनों तक रिमोट एक्सेस क्रियान्वित किया है । प्रयोक्ता परिसर के बाहर पूर्ण पाठ ई-संसाधनों, जैसे, ई-पत्रिकाओं, ई-पुस्तकों और अन्य सभी ई-सामग्री को एक्सेस और डाउनलोड करने में सक्षम हैं।

रिप्रोग्राफिक सेवा: पुस्तकालय प्रयोक्ताओं के पास फोटोकॉपी सुविधाओं तक आसान पहुंच है, जो उन्हें पुस्तकों और पत्रिकाओं से आवश्यक सामग्री को पुन: उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है। फोटोकॉपी पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों या पैम्फलेट आदि से आवश्यक वस्तुओं की प्रतियां बनाने का एक रूप है। पुस्तकालय प्रयोक्ताओं के लिए अभ्यास एक बहुत ही मूल्यवान सहायता है।

लाइब्रेरी पोर्टल: प्रयोक्ता समुदाय को पिन-पॉइंट वेब-आधारित सूचना सेवाएं प्रदान करने के लिए एक गतिशील लाइब्रेरी पोर्टल तैयार और विकसित किया गया है और संसाधनों, सेवाओं, नियमों और विनियमों, समाचारों, घटनाओं आदि की विस्तृत श्रृंखला से हाइपरलिंक किया गया है।

प्रशिक्षण : भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में संकाय/छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की योजनाएँ हैं :

अनुभव के साथ संसाधनों और इसकी सेवाओं के बारे में जागरूकता के लिए पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।

पुस्तकालय संसाधन और संग्रह विकास

ऑनलाइन पब्लिक कैटलॉग (ओपैक)

समन डिस्कवरी सर्विस

डिजिटल इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी (डीस्पेस)

टर्निटिन (साहित्यिक चोरी विरोधी उपकरण)

रिमोटएक्स (ई-संसाधनों की रिमोट एक्सेस)

रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टेक्नोलॉजी (आरएफआईडी) का कार्यान्वयन : पुस्तकालय सेवाओं में रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID) टेक्नोलॉजी को लागू करना हमारी भविष्य की कार्ययोजना है । अधिकांश पुस्तकालयों में, स्टाफिंग बजट तेजी से बढ़ते समुदायों के साथ तालमेल नहीं बिठा रहा है और साथ ही संचलन में वृद्धि हुई है। पुस्तकालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्यक्रम की पेशकशों में वृद्धि करें और कर्मियों को जोड़े बिना ग्राहक सेवा में सुधार करें।

इनमें से कई पुस्तकालय संचलन और शेल्विंग कार्यों की गति और सटीकता में सुधार करने के लिए आरएफआईडी प्रौद्योगिकी की ओर रुख कर रहे हैं, जिससे पुस्तकालय कर्मचारियों को अपने उपयोगकर्ताओं को सीधी सेवा प्रदान करने के लिए मुक्त किया जा सके। यह पुस्तकालय के संग्रह की रक्षा करने में भी मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि समुदाय को पुस्तकालय से सबसे अधिक लाभ मिले। आरएफआईडी प्रणाली को स्थापित करने के लिए एक निवेश की आवश्यकता होती है, लेकिन उस निवेश की आमतौर पर दो साल के भीतर भरपाई की जाती है - और सिस्टम के लाभ एक दशक या उससे अधिक समय तक रह सकते हैं।

तेज़, आसान चेकआउट और चेक-इन। लाइब्रेरियन या उपयोगकर्ता द्वारा आरएफआईडी-टैग की गई वस्तुओं के ढेर को एक साथ पढ़ा और चेक आउट किया जा सकता है। चूंकि प्रौद्योगिकी इतनी तेज और उपयोग में आसान है, पुस्तकालय के आगंतुक अपने स्वयं के लेनदेन को संसाधित करने के लिए अधिक इच्छुक हैं। आरएफआईडी प्रणाली के साथ चेक-इन भी बहुत तेज और आसान है। यदि आरएफआईडी को एक स्वचालित सामग्री हैंडलिंग (AMH) रिटर्न सिस्टम के साथ जोड़ा जाता है, तो उत्पादकता लाभ बहुत अधिक होता है। एएमएच सिस्टम लौटाए गए पुस्तकालय आइटम को स्वीकार कर सकते हैं, उपयोगकर्ता के खाते को क्रेडिट कर सकते हैं, और पुस्तकालय के आगंतुकों के साथ जुड़कर पुस्तकालय के फर्श पर लाइब्रेरियन के बाहर रहने के दौरान आइटम को फिर से रखने के लिए सॉर्ट कर सकते हैं।

सुविधाएँ

परिसर की सुविधाएं समग्र सीखने की प्रक्रिया में सुधार के साथ-साथ छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सीखने, पढ़ाने और शोध जैसी शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने की दिशा में एक पर्याप्त और सही लॉजिस्टिक सपोर्ट एक महत्वपूर्ण योगदान है। इसे ध्यान में रखते हुए, नालंदा विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष 2021-2022 के दौरान कुछ महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान की हैं और उनका रखरखाव किया है।

1. आवास हॉल

लगभग एक सहस्राब्दी (1000 वर्ष) के बाद, पुनः निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर में बने आवास में छात्र रहने लगे हैं। इसी के साथ नालंदा ने अपने नए अवतार में माननीय कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के नेतृत्व में अगस्त 2022 में 'अमृत काल' के उद्भव काल में एक और एक विशेष उपलब्धि हासिल की।

आवास हॉल, नालंदा के विहारों की तरह, एक बहुत ही कॉम्पैक्ट इकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। केंद्रीय नम भूमि के साथ शीर्ष स्तम्भ सभी समूहों और सुविधाओं को एक साथ जोड़ता है। प्रत्येक क्लस्टर 80-100 छात्रों के प्रबंधन को पूरा करता है और वर्तमान में 450 क्षमता वाले कुल 24 भवनों में आवासीय हॉल हैं।

1. महिलाओं के लिए तथागत आवास हॉल
2. अजातशत्रु आवास हॉल

सभी निवास हॉल छात्रों को उनकी संबंधित वरीयता के आधार पर आवंटित किए जाते हैं, लेकिन यह सुविधा पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रदान की जाती है। आवासीय भवन की सीमाओं के भीतर सभी सुविधाएं जैसे इनडोर और आउटडोर गेम्स, कॉमन हॉल, कंप्यूटर लैब, वाई-फाई, छात्रों की पेंट्री आदि प्रदान की जाती हैं।

आवास हॉल

2. डाइनिंग हॉल और कैफेटेरिया

आवास हॉल में डाइनिंग एरिया अपने छात्रों के लिए संतुलित भोजन सुनिश्चित करता है, यह छात्रों की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और भोजन की आदतों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है । छात्रों और कर्मचारियों को स्वच्छ रूप से तैयार भोजन परोसने के लिए विश्वविद्यालय वातानुकूलित भोजन सुविधा से सुसज्जित है। विश्वविद्यालय मामूली कीमत पर चायध्कॉफी, शीतल पेय और स्वस्थ खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के लिए परिसर में एक कैफेटेरिया का संचालन भी कर रहा है।

विश्वविद्यालय में डाइनिंग हॉल और कैफेटेरिया

3. परिवहन

छात्रों को आवास हॉल से अकादमिक ब्लॉक और पुस्तकालय तक लाने और सप्ताह के सभी दिनों में उनकी वापसी के लिए लगातार शटल सेवाएं प्रदान की जाती हैं। आस-पास के शहरों के लिए परिवहन सुविधाएं साप्ताहिक औरध्अथवा मासिक आधार पर उपलब्ध हैं। उपरोक्त व्यवस्थाओं के अलावा, अनुरोध पर आस-पास के हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों के लिए विशेष आदेशित परिवहन सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं।

छात्रों के लिए शटल सेवा

4. चिकित्सा सुविधा और स्वास्थ्य देखभाल

माननीय कुलपति, प्रो सुनैना सिंह ने नालंदा समुदाय की जरूरतों की देखभाल के लिए परिसर में पांच बिस्तरों वाले प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रध्मिनी अस्पताल की पहल और स्थापना की। स्वास्थ्य देखभाल केंद्र की सेवाओं को विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा चैबीसों घंटे एक्सेस किया जा सकता है। स्वास्थ्य देखभाल केंद्र नियमित आधार पर विशेषज्ञ के दौरे के अलावा, रेजिडेंट डॉक्टरों और नर्सों की सुविधा प्रदान करता है। एक्स-रे, पैथोलॉजी प्रयोगशाला, फार्मेसी और एम्बुलेंस जैसी महत्वपूर्ण चिकित्सा सुविधाएं चैबीसों घंटे उपलब्ध कराई जाती हैं। सुविधा का उपयोग विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर समीक्षित और निर्धारित नीतियों द्वारा निर्देशित किया जाएगा।

नालंदा विश्वविद्यालय का स्वास्थ्य देखभाल केंद्र

5. सभागार

माननीय कुलपति की पहल के साथ विश्वविद्यालय ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा सहित आधुनिक ऑडियो-विजुअल सुविधाओं के साथ 300 सीटों वाला सुषमा स्वराज ऑडिटोरियम और 100 सीटों वाला मिनी

ऑडिटोरियम स्थापित किया है। ये ऑडिटोरियम सेमिनार, सम्मेलनों, विशिष्ट वक्ताओं के व्याख्यान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हैं।

300सीटों वाला सुषमा स्वराज सभागार

100सीटों वाला मिनी सभागार

6. संचार केंद्र

विश्वविद्यालय में एक अंग्रेजी संचार केंद्र है, जो किसी भी स्तर पर विश्वविद्यालय समुदाय को उनकी संचार आवश्यकताओं के साथ सहायता करने के लिए डिजाइन की गई एक निर्देशात्मक सुविधा है। यह लेखन प्रक्रिया में मदद करता है, यह विचार निर्माण और संयोजन से लेकर शैली, व्याकरण, निबंधों की रूपरेखा और संपादन रणनीतियों में सहयोग प्रदान करता है। यह केंद्र आवश्यकतानुसार छात्रों को एकल संचार में सहयोग प्रदान करता है। छात्र विशिष्ट समस्याओं के लिए व्यक्तिगत सहायता के लिए संचार केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय का संचार केंद्र कक्षाओं के साथ-साथ संवादात्मक अंग्रेजी ट्यूटोरियल के मॉड्यूल भी चलाता है ताकि छात्रों को उनके संचार और लेखन कौशल में सुधार करने के लिए उपचारात्मक विशेष सहायता प्रदान की जा सके।

7. कंप्यूटर लैब

परिसर में कंप्यूटर लैब उपयोगकर्ताओं को मल्टीमीडिया सेवाएं, कंप्यूटिंग-संबंधित सेवाएं और निर्देशात्मक उपयोग के साथ-साथ अनुसंधान के लिए वर्कस्टेशन प्रदान करके उच्च शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी को एकीकृत

करने का काम करते हैं। विश्वविद्यालय के पास एक कंप्यूटर लैब है जो नवीनतम तकनीक और सॉफ्टवेयर से लैस है, जिसमें सभी आवश्यक शोध उपकरण, जैसे जीआईएस, मैटलैब और मिनीटैब शामिल हैं। सभी विद्यालयों में शोधकर्ता और छात्र संबंधित प्रयोगशाला का उपयोग कक्षा में अथवा अपनी परियोजनाओं पर काम करने के लिए अभ्यास कर सकते हैं, खासकर अगर उन्हें विशेष तकनीकी सहायता की आवश्यकता होतीहै।

8. भाषा प्रयोगशाला

भाषा प्रयोगशाला सुविधा की स्थापना अभी प्रक्रियाधीन है। इसे विदेशी भाषा सीखने के लिए एक समर्पित स्थान बनाने की योजना है, जहां छात्र ऑडियो या ऑडियो-विजुअल सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। यह एक शिक्षक को छात्र ऑडियो सुनने और उसे प्रबंधित करने की अनुमति देता है, जो अलग-अलग छात्रों को हेडसेट या अलग-अलग 'ध्वनि बूथ' में वितरित किया जाता है। भाषा प्रयोगशालाएं एकल कोचिंग, समूह अभ्यास और संवाद कौशल के माध्यम से भाषा ग्रहण और दक्षता को बढ़ावा देने में अद्वितीय हैं।

9. खेल

नालंदा विश्वविद्यालय इस विचार का समर्थन करता है कि खेल किसी के व्यक्तित्व को आकार देने और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय ने हमारे लिए उपलब्ध अल्प बुनियादी ढांचे के भीतर आवासीय हॉल में छात्रों के उपयोग के लिए एक खेल वातावरण विकसित किया है। टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेलों की सुविधाएं प्रदान की गई हैं, जबकि बाहरी मनोरंजन क्षेत्रों में वॉलीबॉल और बैडमिंटन कोर्ट हैं। शीर्ष अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ तुलनीय अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ सभी खेलों के लिए एक प्रमुख खेल परिसर निर्माणाधीन है। इसके तैयार होने पर विश्वविद्यालय अपने छात्रों को इनडोर और आउटडोर दोनों खेलों में वास्तव में वैश्विक अनुभव का आश्वासन देता है।

अजातशत्रु आवासीय हॉल में क्रिकेट मैच

10. सोसायटी

विश्वविद्यालय मुख्य रूप से एक मजबूत चरित्र और एक एकीकृत व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा में रचनात्मक दिशाओं में छात्रों की रचनात्मक ऊर्जा और गतिशीलता को निर्देशित करने के उद्देश्य से विभिन्न छात्र समाजों का समर्थन करता है। संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, प्रकृति और खेल गतिविधियों के विविध तत्वों को आत्मसात करके, छात्र सामुदायिक सेवा के माध्यम से अपने साथ-साथ दूसरों के जीवन को समृद्ध कर सकते हैं, खोजकर्ता के रूप में अपने बाहरी कौशल को विकसित कर सकते हैं और फोटोग्राफिक कौशल विकसित कर सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स क्लब, अवेयरनेस सोसाइटी, लिटरेरी सोसाइटी, एनवायरनमेंट क्लब, सोसाइटी फॉर कल्चर एंड आर्ट्स के साथ-साथ करियर रिसोर्स सेल के माध्यम से व्यापक रूप से छात्रों की रुचि के अनुरूप व्यापक पाठ्येतर गतिविधियों का समर्थन करता है।

छात्रों के विभिन्न क्लब और सोसायटी

11. अनुभवपरक अधिगम और आउटरीच

माननीय कुलपति की पहल के साथ, बिहार सरकार और स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ने के लिए कई आउटरीच कार्यक्रम तैयार किए गए थे। कार्यक्रमों का उद्देश्य संरचित जमीनी जुड़ाव की संस्कृति का निर्माण करना है, जो विश्वविद्यालय की एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट विशेषता है। सीखने की सबसे अच्छी सेवा तब होती है जब छात्र सीखने की प्रक्रिया में मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रियता भाग लेते हैं। नालंदा में क्षेत्र भ्रमण को सीखने के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में लिया जाता है। इसलिए, प्रत्येक विद्यालय निर्धारित अंतराल पर पर्यवेक्षित और सुरक्षित मनोरंजक क्षेत्र यात्राओं का आयोजन करता है, जब छात्र इसे सीधे एक्सेस करके अधिक समग्र और एकीकृत तस्वीर का अनुभव करते हैं। फील्ड ट्रिप, इस प्रकार नियमित आधार पर व्यावहारिक और इंटरैक्टिव अनुभव के साथ पाठ्य सामग्री के पूरक में सहयोग प्रदान करते हैं।

क्षेत्र भ्रमण पर छात्र

नेट-जीरो परिसर निर्माण और अद्यतन

40 Hectares of Waterbodies

वर्ष 2011 में बिहार सरकार द्वारा 455.19 एकड़ भूमि आवंटित की गई थी। ईएफसी ने 2014 में निर्माण के लिए वित्त पोषण को मंजूरी दी थी। यह निर्माण 2014 से ही शुरू होना था। हालांकि, परिसर सुविधाओं, उपयोगिता संरचनाओं और साइट विकास कार्यों के साथ विश्वविद्यालय भवनों का निर्माण मई 2017 के बाद वास्तविकत रूप में शुरू किया गया था, जो मार्च 2022 में 95% से अधिक है। नालंदा के लिए सकारात्मक/

संरचनात्मक छवि बनाने के उद्देश्य से, पांच भवनों का निर्माण पूरा हो चुका है और विश्वविद्यालय वर्तमान में अपने नए परिसर से कार्य कर रहा है।

मई 2017 में निर्माण के ग्राफ को महज 0.28% से बढ़ाकर प्रमुख कार्य पैकेजों (17 गैर-आवासीय भवनों) के तहत इसे लगभग 95% कर दिया गया है।

1. वर्तमान कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के अथक प्रयासों से, संबद्ध सेवाओं और साइट विकास कार्यों सहित शैक्षणिक, प्रशासनिक, सुविधाओं और उपयोगिता भवनों सहित विश्वविद्यालय भवनों के निर्माण के लिए प्रगति ग्राफ 2017 के अंत में ग्राउंड जीरो से बढ़कर वर्ष 2022 तक यह 95% से अधिक हो चुका है। यह प्रगति पिछले दो वर्षों के दौरान कोविड -19 महामारी की बाधाओं के बावजूद हासिल की गई है। संकायध्कर्मचारियों के लिए आवास तथा छात्रों के छात्रावासों के निर्माण में 85% से अधिक प्रगति हासिल की गई है।

2. पैकेज 1अ में 12.5 किलोमीटर आंतरिक सड़क नेटवर्क का निर्माण और 100 एकड़ जल निकायों के निर्माण के लिए मिट्टी का काम अप्रैल 2018 में 100% पूरा कर लिया गया।

3. पैकेज 1ब में 84 भवनोंध्संरचनाओं का निर्माण शामिल है जिसमें आंतरिक सेवाओं और संबद्ध साइट विकास कार्यों आदि सहित शैक्षणिक, प्रशासनिक, सुविधाएं और उपयोगिता भवन शामिल हैं, जो 95% से अधिक पूर्ण हैं। जबकि कुछ भवन पहले से ही क्रियान्वित हैं, अन्य भवनों में आंतरिक और साज-सज्जा का काम प्रगति पर है और इसे अगले छह महीनों तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

4. पैकेज 1स के तहत 528 क्षमता वाले छात्र आवासीय हॉल (24 भवन) के लिए काम 100% पूरा हो गया है और लगभग 1000 वर्षों के बाद, फिर से नव-निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय में, छात्रों ने परिसर के छात्रावासों में रहना शुरु किया है जो छात्रों और शोधकर्ता समुदाय के लिए एक विशिष्ट उपलब्धि है क्योंकि यह इसमें प्राचीन नालंदा की विरासत समाहित है। इस पैकेज में फैकल्टी और गैर-शिक्षण के लिए आवास भी शामिल हैं, जिसमें उनकी उपयोगिता संरचनाएं (95 भवन) का कार्य (85% से अधिक) पूरा होने वाला है और इसे दिसंबर 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

5. पैकेज 4अ के तहत परिसर के पूर्वी हिस्से और प्रशासनिक भवनों में बिजली फीडिंग का काम पूरा हो चुका है और अब यह विश्वविद्यालय के लिए लाभकारी है।

6. परिसर में 100 एकड़ से अधिक (40 हेक्टेयर के बराबर) जल निकायों को विकसित और पूरा किया गया है। निर्माण के लिए आवश्यक पानी भी जलाशयों में जमा वर्षा जल से लिया जा रहा है।

7. पुरस्कार विजेता 'एकीकृत जल प्रबंधन योजना' परिसर के भीतर वर्षा जल और सतही अपवाह के संग्रह, अतिरिक्त पानी की बर्बादी पर नियंत्रण और मांग प्रबंधन सिद्धांतों के अनुरूप संचालित है।

8. परिसर में बारिश का पानी इकट्ठा किया जा रहा है और साइट पर ही इसका संचयन किया जा रहा है।

9. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम को कार्य सौंपने के पश्चात, परिसर में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लिए **ILR1.3** ऑन-ग्रिड के साथ 6.5 MWdc कनेक्टेड सोलर फार्म को दैनिक आधार पर बिजली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विकसित किया जा रहा है। परिसर में सौर पार्क का विकास पूरा होने के कगार पर है और इसने अब तक 90% से अधिक प्रगति हासिल की है।

10. परिसर के भीतर और आसपास के क्षेत्र में एकत्रित कचरे से बायोगैस और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न करने के उद्देश्य से ऑन-कैंपस बायोगैस संयंत्र विकास कार्य प्रगति पर है। एकीकृत कचरा प्रबंधन दृष्टिकोण के साथ, प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से प्राप्त ज्ञान और संसाधन साझा करने के विचार के साथ इलाके के बीच स्थायी बंधन के साथ कचरे से हरित बायोगैस उत्पन्न करने के लिए स्थानीय समाज में एक आदर्श बदलाव होगा।

11. विभिन्न 16 अन्य कार्य पैकेजों में नेट-जीरो संधारणीय हरित परिसर विकास के लिए आंतरिक और बाहरी सेवाएं शामिल हैं, जिसमें विद्युत प्रतिष्ठान, बिजली आपूर्ति, एचवीएसी, जल आपूर्ति, जल उपचार प्रणाली, अग्निशमन प्रणाली, सीवेज निपटान प्रणाली, भवन प्रबंधन प्रणाली, बागवानी और भवनों के समग्र पूर्णता को सुनिश्चित करने के लिए लैंडस्केप कार्य, आंतरिक और फर्निशिंग कार्य, दृश्य-श्रव्य कार्य, चारदीवारी निर्माण आदि को समानांतर रूप से पूरा किया जा रहा है। 6.5 मेगावाट क्षमता के सोलर फार्म को अगले तीन महीनों में पूरा करने का लक्ष्य है। निर्माण के अगले चरण में कुछ और भवनों का निर्माण हाल ही में शुरू हुआ है जिसे पूरा होने में एक और वर्ष लगेगा।

12. पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के साथ-साथ परियोजना और निर्माण की निगरानी और मूल्यांकन के लिए एक सुनिश्चित और स्थापित परियोजना निगरानी समिति प्रक्रियारत है। कार्य की प्रगति और गुणवत्ता की समीक्षा के लिए समिति की द्विमासिक बैठक होती है। यह समिति विश्वविद्यालय को आगे की योजना बनाने और बाधाओं, यदि कोई हो, को संबोधित करने का सुझाव देती है।

13. तकनीकी मुद्दों और निर्माण प्रगति में विश्वविद्यालय की निगरानी और सलाह देने के लिए एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति की गई है। नोडल अधिकारी परिसर का दौरा करते हैं और नियमित आधार पर कार्यों की समीक्षा करते हैं और परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

14. भारत सरकार के विभिन्न नियामक निकायों से युक्त एक नेट-जीरो कैंपस संचालन समिति का गठन किया गया है। समिति के विशिष्ट मार्गदर्शन से विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया हैः

1. विशेषज्ञों द्वारा नेट-जीरो रणनीति के लिए स्मार्ट दृष्टिकोण का कार्यान्वयन।

2. हाइब्रिड नवीकरणीय प्रणाली के लिए उपयुक्त नियामक प्रावधान किया गया है, जिससे देश में हरित और स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के लिए एक आदर्श बदलाव आया है।

3. यूएसएआईडी, बीईई, सीईआरसी, एनआईएसई, ब्रेडा और एसबीपीडीसीएल जैसी विशेषज्ञ एजेंसियों द्वारा सुझाए गए नेट-जीरो रणनीति के लिए स्मार्ट दृष्टिकोण का कार्यान्वयन।

4. केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (सीईआरसी), ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) और यूएस-इंडियन पार्टनरशिप एजेंसी (यूएसएआईडी) की मदद से ऊर्जा कुशल प्रणाली की स्थापना प्रक्रिया शुरू की गई।

5. परिसर में पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) लाइन का वितरण नेटवर्क पूरा हो गया है, और प्रधानमंत्री ऊर्जा गंगा गैस पाइपलाइन परियोजना के अधीन विश्वविद्यालय परिसर को पीएनजी आपूर्ति प्रदान करने के लिए डी-टूरिंग शुरू किया गया और इसे संयुक्त उद्यम आईओसीएल-अडानी सिटी गैस वितरण एजेंसी द्वारा पूरा किए जाने के कगार पर रिपोर्ट किया गया था जिसे पीएनजी नियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) द्वारा नियुक्त नियुक्त किया गया है। माननीय कुलपति, प्रो. सुनैना सिंह की पहल और पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के समर्थन से, डी-टूरिंग न केवल विश्वविद्यालय की सुविधा प्रदान करेगी, बल्कि 100 से अधिक गांवों में स्थानीय आबादी के लिए भी फायदेमंद होगी।

6. माननीय कुलपति प्रो. सुनैना सिंह की पहल के बाद, विश्वविद्यालय दिनांक 28.09.2019 को जारी किए गए एसईसीआई पुरस्कार पत्र के माध्यम से एमएनआरई से 5 मेगावाट समर्थन के लिए रु 3,49,77,775 ध् - की कुल वित्तीय सहायता प्राप्त करने में सक्षम हुआ । सीपीएसयू वायबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) योजना के तहत 69,95,555 रुपये प्रति मेगावाट की दर से वित्तीय सहायता सभी प्रतिभागियों के बीच अधिकतम है, और यह एक अद्वितीय दृष्टिकोण है क्योंकि यह आमतौर पर शैक्षणिक संस्थान के मामले में नहीं होता है, इस तथ्य को नेट-जीरो स्टीयरिंग कमेटी के सदस्यों द्वारा अपनी 5वीं बैठक के दौरान व्यक्त किया गया। यह सहायता विश्वविद्यालय के लिए नेट-जीरो कैंपस के विकास और कैंपस निर्माण के अनूठे दृष्टिकोण के लिए फंड के उपयोग हेतु सहायक होगी।

7. नेट-जीरो कैंपस के बेहतर और कुशल निष्पादन हेतु बीएमएस, स्काडा, डाली और रेडियो फ्रीक्वेंसी सिस्टम जैसे विभिन्न एकीकृत ऑटोमेशन प्रणालियाँ क्रियान्वित की गई हैं।

कैंपस सोलर फार्म

नेट जीरो कैंपस निर्माण

नेट जीरो कैंपस विकसित करने के लिए प्रमुख संधारणीय सुविधाओं में शुद्ध शून्य ऊर्जा, शुद्ध शून्य पानी, शुद्ध शून्य अपशिष्ट और शुद्ध शून्य उत्सर्जन शामिल हैं। स्वदेशी दृष्टिकोण के साथ अक्षय ऊर्जा स्रोतों की विशेषता वाली यह हाइब्रिड अवधारणा और विभिन्न नवीन तकनीकों के साथ इसका एकीकरण भविष्य में अन्य आगामी परियोजनाओंधपरिसरों और सामुदायिक निर्माण मॉडल के निर्माण के लिए तर्कसंगत दृष्टिकोण का उदाहरण हो सकता है। विभिन्न पैमानों पर काम कर रहे अप्रतिरोधी प्रविधियों में सबसे महत्वपूर्ण और स्वदेशी पहलुओं और अवधारणाओं के पैलेट में से कुछ निम्नांकित सुविधाएं इस प्रकार हैं -

1. इमारतों को ठंडा/गर्म बनाए रखने के लिए डेसीकेंट इवेपोरेटिव (DEVAP) तकनीक का उपयोग,

2. एचवीएसी प्रणाली के लिए सौर एकीकृत तापीय भंडारण प्रौद्योगिकी,

3. स्मार्ट एलईडी लाइटिंग, DALI ऑक्यूपेंसी सेंसर के साथ एकीकृत

4. सामान्य जली हुई मिट्टी की ईंटों के बजाय कंप्रेस्ड स्टैबिलाइज्ड अर्थ ब्लॉक्स (सीएसईबी) ब्लॉकों का उपयोग,

5. भूकंपीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए चिनाई के एकीकृत बक्से का उपयोग,

6. थर्मल प्रतिरोध बढ़ाने के लिए मोटी गुहा की दीवारों का उपयोग,

7. पीने योग्य पानी की मांग को कम करने के लिए जलवायु उपयुक्त परिदृश्य डिजाइन,

8. विकेन्द्रीकृत जल उपचार (DeWAT) प्रणाली,

9. कुशल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के लिए रणनीतियाँ,

10. बायोगैस संचालित कम्बाइन्ड हीट एंड पावर (सीएचपी) इंजन,

11. सोलर पीवी कैप्टिव पावर प्लांट,

12. चुने हुए देशी पौधों आदि के प्रयोग से हवा को ठंडा करने के साथ-साथ उसकी सफाई।

13. स्वचालित दृष्टिकोण (स्काडाध्स्मार्ट ग्रिड, आईबीएमएस, पीएलसी आदि)।

नेट जीरोः यथार्थ में परिवर्तित एक स्वप्न

यह परिसर एक कार्बन न्यूट्रल और शून्य अपशिष्ट परिसर बनाने के लिए प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की योजना सिद्धांतों के साथ अत्याधुनिक तकनीकों को जोड़ता है। संपूर्ण मास्टर प्लान अपने आप में अवस्था-परिवर्तन-कालिक है, क्योंकि यह परिसर के एक बड़े पारिस्थितिकी तंत्र में परिसर के एकीकरण को प्रदर्शित करता है।

नालंदा विश्वविद्यालय परियोजना एकीकृत आवास मूल्यांकन के लिए ग्रीन रेटिंग - बड़े विकास (गृह एलडी) के तहत गृह परिषद के साथ पंजीकृत है। मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा मास्टर प्लान के रेटिंग मूल्यांकन की समीक्षा की जा रही है।

इष्टतमीकरण दृष्टिकोण

वार्षिक ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए समग्र इष्टतम और मिश्रित दृष्टिकोणः-

मांग पक्ष प्रबंधन सिद्धांतों के तहत कुशल और संकर तरीके से मांग को कम करना

तकनीकी-व्यावसायिक रूप से व्यावहारिक दृष्टिकोण।

परिसर जीवन

हरित एवं संधारणीय परिसर

नालंदा विश्वविद्यालय के संधारणीय परिसर की विशिष्टताओं के लिए पुरस्कार/पहचान की सूचीः

पुरस्कार-

1. प्रो सुनैना सिंह, माननीय कुलपति, न्यूयॉर्क, 2022 में "लीडरशिप अवार्ड फॉर ग्रीन एंड सस्टेनेबल कैंपस अवार्ड" प्राप्त करते हुए।

2. एमजीएनसीआरई डीओई, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2021 में ग्रीन चैंपियन अवार्ड।

3. बड़े विकास की श्रेणी में गृह फाइव स्टार मास्टरप्लान रेटिंग में गृह काउंसिल द्वारा अद्वितीय, हरे, शुद्ध-शून्य उत्सर्जन और टिकाऊ दृष्टिकोण के लिए 2020 में पुरस्कार।

4. गृह परिषद द्वारा 2019 में अक्षय ऊर्जा उपयोग की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

5. ग्रीन मेंटर्स एजेंसी, अहमदाबाद द्वारा 2019 में ग्रीन यूनिवर्सिटी अवार्ड।

6. गृह परिषद द्वारा 2018 में अक्षय ऊर्जा उपयोग दृष्टिकोण की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

7. गृह परिषद द्वारा 2017 में इस परिसर के एकीकृत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

8. गृह परिषद द्वारा 2017 में अप्रतिरोधी वास्तुकला दृष्टिकोण की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

पहचान -

9. 28 जनवरी 2022 को ऊर्जा दक्षता बाजार परिवर्तन पर अपने मैत्री कॉन्क्लेव के दौरान यूएसएआईडी ने भविष्य और उत्कृष्टता के संदर्भ मॉडल के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के नेट-जीरो परिसर में विचारों के पैलेट को मान्यता दी और औपचारिक रूप से लॉन्च किया।

10. ऊर्जा दक्षता और स्वच्छ ऊर्जा पर ब्रिक्स कार्यशाला, 29-30 अप्रैल 2021 प्रोफेसर सुनैना सिंह, माननीय कुलपति, एनयू द्वारा प्रस्तुत।

11. प्रोफेसर सुनैना सिंह, माननीय कुलपति, एनयू ने 2021 में एमजीएनसीआरई, डीओई, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नेट जीरो एंड सस्टेनेबल कैंपस फीचर्स ग्रीन चैंपियन अवार्ड का प्रतिनिधित्व किया।

12. ऑनसाइट कैप्टिव सोलर फार्म 2019 के लिए एसईसीआई के माध्यम से एमएनआरई द्वारा वीजीएफ समर्थन, अधिकतम और पहले शैक्षणिक संस्थान के रूप में मान्यता।

13. आईजीबीसी के 28-19 सितंबर 2019 के सम्मेलन के दौरान, माननीय कुलपति प्रोफेसर सुनैना सिंह ने नालंदा विश्वविद्यालय के संधारणीय और एकीकृत दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया, जिसे अनुकरणीय शुद्ध शून्य परिसर के रूप में मान्यता दी गई थी, और विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

झलकः नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का नया अवतार

प्रशासनिक भवन

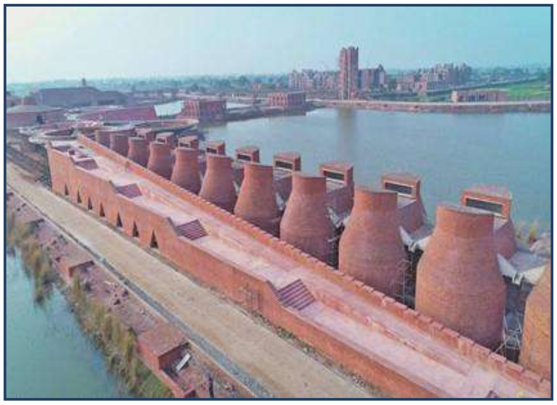

जल निकाय

सुषमा स्वराज सभागार का एक दृश्य

सुषमा स्वराज सभागार के भीतर का एक दृश्य

कैंपस में 6.5MWdc सोलर फार्म सेल्फ-सस्टेनेबल कैंपस को पूरा करने के लिए

वार्षिक मांग को पूरा करने के लिए परिसर में आर्केड और एम्फीथिएटर 100 एकड़ से अधिक जल निकायों से घिरा हुआ है।

नालंदा विश्वविद्यालय परिवार ने ली शपथ पर्यावरण को स्वच्छ रखने की।

"एक सतत हरित मॉडल विश्वविद्यालय बनाने पर विचार" पर "कैंपस में ओपन एयर लर्निंग स्पेस" में चर्चा सत्र।

"एक सतत हरित मॉडल विश्वविद्यालय बनाने पर विचार" पर चर्चा के लिए प्रतिभागी "ओपन एयर लर्निंग स्पेस" में एकत्रित हुए।

पुरस्कार, सम्मान और पहचान

1. 10-13 सितंबर 2022 को शांतिवन, माउंट आबू, राजस्थान में "भारत - विश्व शांति का अग्रदूत" पर वैश्विक शिखर सम्मेलन 2022 के लिए सम्मानित मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

2. आसियान इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज, जकार्ता, इंडोनेशिया, 29-30 अगस्त 2022 के शुभारंभ पर अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित।

3. सियोल, कोरिया में 11-15 अगस्त 2022 को विश्व शिखर सम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व सम्मेलन में भाग लेने के लिए सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

4. 23 जुलाई 2022 को इंटरनेशनल स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, पटना के 12वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित।

5. ऑक्सफोर्ड, यूनाइटेड किंगडम में यूरोप बिजनेस असेंबली कॉरपोरेशन ऑफ सोशल पार्टनरशिप द्वारा यूरोपीय गुणवत्ता पुरस्कार। यूरोपीय गुणवत्ता पुरस्कार शैक्षिक पहल के उच्च मानकों जैसे कि प्रासंगिक, नवीन कार्यक्रमों की शुरूआत, शिक्षा की प्रायोगिक प्रकृति, और वैश्विक सामाजिक, शैक्षिक पहल के लिए समर्थन इत्यादि के लिए प्रतिष्ठित संस्थानों को सम्मानित करने के लिए स्थापित किए जाते हैं। एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और संस्था निर्माता के रूप में, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सुनैना सिंह को उनके प्रशंसित शैक्षणिक और प्रशासनिक गुणों के लिए प्रतिष्ठित यूरोपीय गुणवत्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया, 21 जुलाई 2022।

6. कौटिल्य आर्थिक सम्मेलन 2022-23, नई दिल्ली, 8-10 जुलाई 2022 में आमंत्रित।

7. लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह 2022, के दीक्षांत भाषण देने के लिए विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया (24-26 जून 2022)।

8. बेंगलुरु में इंडिग्लोबल मीडिया नेटवर्क द्वारा इनोवेशन लीडरशिप अवार्ड 2022। आईजीईएसएस एक अद्वितीय ज्ञान विनिमय, सहयोग और व्यापार मंच के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा, शिक्षा और कौशल में प्रगति को उजागर करते हुए, यह नीति निर्माण, नवाचार और सर्वोत्तम प्रथाओं में हस्तक्षेप की दिशा में एक रोडमैप भी तैयार करेगा, 12 जून 2022।

9. नई दिल्ली में यूनिवर्सल पीस फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा शांति के राजदूत। यूनिवर्सल पीस फेडरेशन (यूपीएफ) ने नालंदा विश्वविद्यालय, कुलपति, प्रो सुनैना सिंह को आध्यात्मिक लोकाचार और सामंजस्यपूर्ण

सह-अस्तित्व के माध्यम से शांति के निर्माण के लिए विश्वविद्यालय में उनके कार्य की मान्यता के लिए 'शांति के लिए राजदूत' के रूप में सम्मानित किया। यह सम्मान समारोह 24 मई 2022 को कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, दिल्ली में आयोजित किया गया था।

10. यूनिवर्सल पीस फेडरेशन, एशिया पैसिफिक, 220 व्हाइट प्लेन्स रोड, 5वीं मंजिल सुइट, टैरीटाउन, न्यूयॉर्क 10591, द्वारा आयोजित यूएसए इंटरनेशनल लीडरशिप कॉन्फ्रेंस (आईएलसी) में शांति और वैश्विक व्यवस्था के लिए समकालीन चुनौतियां: समाधान की खोज", पर व्याख्यान हेतु अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया। (30 अप्रैल 2022)

11. डॉ. डीवाई पाटिल बी-स्कूल, क्रमांक 87-88, मुंबई-बैंगलोर एक्सप्रेसवे बाईपास, तथावड़े, पुणे, द्वारा "एक लचीला व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र और आर्थिक विकास को बढ़ावा" विषय पर आयोजिय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए सम्मानित अतिथि और मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। 29 अप्रैल 2022।

12. एशिया वन एट लंदन द्वारा वर्ष 2021-2022 के वैश्विक नेता का खिताब । प्रो. सुनैना सिंह, कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय को भारतीय उच्च शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देने में उनके दूरदर्शी उल्लेखनीय योगदान के लिए एशिया वन एट लंदन द्वारा वर्ष 2021-2022 के प्रतिष्ठित ग्लोबल लीडर से सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करने के उनके प्रयासों को दर्शाता है। प्रशस्ति पत्र में यह कहा गया है कि "आपका समर्पण, प्रतिबद्धता और नालंदा विश्वविद्यालय के निर्माण और विकास की इच्छा अद्वितीय और उल्लेखनीय है। यह बहुत प्रभावशाली है और यह आपके महान नेतृत्व में निर्मित भारत का एक ऐतिहासिक संस्थान बनने जा रहा है।", (12 अप्रैल 2022)

13. न्यूयॉर्क में इंडो-अमेरिकन ग्रीन यूनिवर्सिटी नेटवर्क द्वारा लीडरशिप फॉर नेट जीरो एंडेवर अवार्ड 2022। अमेरिका में इंडो-अमेरिकन ग्रीन यूनिवर्सिटी नेटवर्क ने ब्रोंक्स कम्युनिटी कॉलेज, सिटी यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क, यूएस में आयोजित एक समारोह में प्रो सुनैना सिंह को "लीडरशिप फॉर नेट जीरो एंडेवर अवार्ड-2022" से सम्मानित किया। यह पुरस्कार एक अनुकरणीय नेट जीरो और कार्बन-फुटप्रिंट-मुक्त हरित परिसर के निर्माण के लिए दिया गया था जिसमें आदर्श ऊर्जा और जल संसाधन प्रबंधन समायोजित है। (04 अप्रैल 2022)

14. 31 मार्च 2022 को कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित बिम्सटेक गोलमेज सम्मेलन 2022 के लिए आमंत्रित किया गया। (31 मार्च 2022)

15. 27 फरवरी 2022 को पटना में विजयश्री मेमोरियल लेक्चर बोरिंग रोड, पटना द्वारा आयोजित ‘‘भारत का अतीत वर्तमान और भविष्य” विषय पर व्याख्यान देने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

16. प्रो. सुनैना सिंह के नेतृत्व में, नालंदा विश्वविद्यालय को दुबई में यूरोपियन सोसाइटी फॉर क्वालिटी रिसर्च द्वारा यूरोपियन सोसाइटी फॉर क्वालिटी रिसर्च (ESQR) क्वालिटी अचीवमेंट अवार्ड्स 2021 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार नालंदा विश्वविद्यालय को उसकी अकादमिक उत्कृष्टता, अनुसंधान-उन्मुख कार्यक्रमों और एक अंतर्विषयी कैफेटेरिया मॉडल के साथ एक मजबूत शैक्षणिक संरचना प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। यूरोपियन सोसाइटी फॉर क्वालिटी रिसर्च (ESQR) उन संगठनों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो अग्रणी नव-प्रवर्तनकर्ता हैं और जिन्होंने दुनिया भर में गुणवत्ता प्रबंधन में उत्कृष्ट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। (11 दिसंबर 2021)

17. नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर में इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से छठे अंतर्राष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन का आयोजन, 07-09 नवंबर 2021

18. एसआर भट्ट, अध्यक्ष, भारतीय दर्शन कांग्रेस, अध्यक्ष, एशियाई-अफ्रीकी दर्शनशास्त्र कांग्रेस, नेशनल फेलो, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, भारत सरकार द्वारा ‘‘श्री अरबिंदो ऑन द आइडियल्स ऑफ ह्यूमैनिटी‘‘ पर आयोजित वेबिनार में अतिथि के रूप में आमंत्रित, सोशल मीडिया और न्यूज टेन पर लाइव, 23 अक्टूबर 2021।

19. अपूर्व कुमार मिश्रा, सीनियर रिसर्च फेलो, इंडिया फाउंडेशन द्वारा अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित । प्यू रिसर्च सेंटर की 2021 की रिपोर्ट जिसका शीर्षक है “भारत में धर्म और सहिष्णुता और अलगाव” NEWS X पर लाइव। (16 अक्टूबर 2021)

20. आसियान-भारत केंद्र, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली, नई दिल्ली, आसियान सम्मेलन, हनोई वियतनाम द्वारा अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित (हाइब्रिड मोड) विषयः ‘‘शिक्षा और युवा”, 08 अक्टूबर 2021।

21. महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित। महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, मोतिहारी के 5वें स्थापना दिवस में स्थापना दिवस व्याख्यान। बिहार, 03 अक्टूबर 2021।

22. नव नालंदा महाविहार द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित, 'बिहार में बौद्ध धर्म का इतिहास और संस्कृति' विषय पर नव नालंदा महाविहार में आईएसबीएस का 21वां वार्षिक सत्र, 01 अक्टूबर 2021।

23. एशिया वन द्वारा दुबई में एशिया वन विमेन एम्पावरमेंट अवाड्र्स 2020-21 । प्रो. सुनैना सिंह को प्रतिष्ठित एशिया वन ब्लैक स्वान वुमेन एम्पावरमेंट एंटरप्रेन्योर्स अवार्ड 2020-21 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन अग्रणी नवप्रवर्तनकर्ताओं और उद्यमियों को सम्मानित करता है जो वैश्विक मंच पर अपने क्षेत्रों में सबसे आगे हैं। प्रो. सिंह इस वर्ष 27 अगस्त 2021 को शिक्षा के क्षेत्र में यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले भारत के एकमात्र शिक्षाविद हैं।

24. नालंदा विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति के नाम पर एक छात्रवृत्ति की स्थापना "प्रो. सुनैना सिंह मेरिट स्कॉलरशिप" उनके अद्वितीय और उल्लेखनीय समर्पण, प्रतिबद्धता और नालंदा विश्वविद्यालय के निर्माण और विकास की इच्छा के लिए संयुक्त गणराज्य तंजानिया के मानद वाणिज्य दूतावास द्वारा स्थापित की गई है। तंजानिया संयुक्त गणराज्य के मानद वाणिज्य राजदूत, महामहिम कृष्णा एन पिंपल ने माननीय कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय, "प्रो. सुनैना सिंह मेरिट छात्रवृत्ति" के नाम पर इस छात्रवृत्ति की स्थापना की। यह छात्रवृत्ति माननीय कुलपति के नेतृत्व और नालंदा के पुनर्निर्माण में प्रतिबद्धता की मान्यता में स्थापित की गई । यह छात्रवृत्ति विश्वविद्यालय में किसी भी अंतर्विषयी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम से एक मेधावी छात्र को प्रदान की जायेगी। (20 अगस्त 2021)।

25. इंडियन फाउंडेशन, नई दिल्ली, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, सियोल और भारतीय अध्ययन विभाग, बुशान बौद्ध धर्म विश्वविद्यालय, डोंगगुक विश्वविद्यालय सियोल द्वारा अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया। "भारत और कोरिया गणराज्य के बीच ऐतिहासिक संबंध और सांस्कृतिक कूटनीति" पर "इंडिया-रिपब्लिक ऑफ कोरियाः एस्पेक्ट्स ऑफ पब्लिक डिप्लोमेसी" पर वेबिनार । 11 अगस्त 2021

26. दिशा भारत, बैंगलोर द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार "विकासना एनईपी 2020 विजन टू एक्शन" पर अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया। (25 जून 2021)

27. ऑक्सफोर्ड, यू.के. में अकैडमिक यूनियन ऑफ ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रशंसा प्रमाण पत्र। अकैडमिक यूनियन, ऑक्सफोर्ड ने 'भविष्य के विश्वविद्यालयों' पर अपनी ऑक्सफोर्ड चर्चा में विज्ञान, अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में विशेषज्ञता की पहचान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुनैना सिंह को मानद प्रोफेसरशिप प्रदान की। यह पुरस्कार 25 जून 2021 को ऐतिहासिक नालंदा विश्वविद्यालय और इसकी शैक्षिक वास्तुकला का पुनः आविष्कार करने के लिए प्रो. सिंह की उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए प्रदान किया गया।

28. श्री संगमेश्वर आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, चडचन द्वारा मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित, अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार ‘‘वर्ल्ड्स इन वर्ल्डः द टोल्ड, अनटोल्ड, रीटोल्ड एंड टू बी टॉल्ड स्टोरीज ऑफ अवर टाइम‘‘, 17 जून 2021।

29. श्री संगमेश्वर आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, चडचन में अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार ‘‘वर्ल्ड्स इन वर्ल्डः द टोल्ड, अनटोल्ड, रीटोल्ड एंड टू बी टॉल्ड स्टोरीज ऑफ अवर टाइम‘‘ के लिए मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित । 17 जून 2021।

30. आसियान, जकार्ता में भारतीय मिशन द्वारा अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित, प्रारंभिक बैठक (आसियान), 08 अप्रैल, 2021।

वार्षिक लेखा

नालंदा विश्वविद्यालय
31 मार्च 2022 को तुलन-पत्र

			राशि रुपए में
निधियों का स्रोत	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	पूर्व वर्ष
संग्रह/पूंजीगत निधि	1	11,341,909.00	8,557,789,498.00
निर्दिष्ट/चिन्हित/अक्षयनिधि	2	212,111,789.00	200,313,019 .00
वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान	3	639,484,044.00	542,438,878.00
कुल		12,192,923,742.00	9,300,541,395.00

निधि का अनुप्रयोग	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	पूर्व वर्ष
नियत परिसंपत्तियाँ	4		
मूर्त आस्तियां		3,013,459,282.00	1,031,602,052.00
अमूर्त आस्तियां		4,375,257.00	6,373,402.00
पूंजीगत कार्य प्रगति पर		8,136,51,525.00	7,528,569,467.00
चिन्हित अक्षयनिधि से निवेश	5		
दीर्घ अवधि		210,340,177.00	199,093, 770.00
लघु अवधि			
अन्य निवेश	6	-	-
वर्तमान परिसंपत्तियाँ	6	558,702, 999.00	215,217,427.00
ऋण, अग्रिम, एवं जमा	7	269,528,502.00	319 ,685 ,277.00
कुल		12,192,923,742.00	9,300,551,395.00
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	21		
आकस्मिक देयताएं और लेखा टिप्पणी	22		

नालंदा विश्वविद्यालय
31.03.2022 के अंत में आय तथा व्यय लेखा

राशि रुपए में

विवरण	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	पूर्ववर्ष
(अ) आय			
शैक्षिक प्राप्ति	8	23,857,050.00	11,307,388.00
अनुदान एवं सब्सिडी	9	361,981,876.00	281,591,038.00
निवेश से आय	10	1,741,208.00	-
अर्जित ब्याज	11	5,742,084.00	4,690,263.00
अन्य आय	12	2,612,132.00	1,730.971.00
पूर्व अवधि आय	13	1,59,023.00	210,967.00
कुल(अ)		299,530,627.00	318,777,585.00

(ब) व्यय			
कार्मिक भुगतान एवं लाभ (संस्थापन व्यय)	14	139,471,622.00	116,586,653.00
शैक्षिक व्यय	15	34,941,496.00	15,588,258.00
प्रशासनिक एवं सामान्य व्यय	16	166,957,732.00	134,153,862.00
परिवहन व्यय	17	8,787,836.00	6,408,918.00
मरम्मत एवं अनुरक्षण	18	4,118,143 .00	3,137.078.00
अवमूल्यन	4	133,572,824.00	51,156,113.00
अन्य व्यय	19	440,538.00	238,339.00
पूर्व अवधि व्यय	20	7,264,509.00	305,881.00
कुल (ब)		495,544,700.00	332 ,747,151.00

पूंजीगत निधि को शेष बढ़ोत्तरी/घाटा		-99,461,327.00	33,216,524.00
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	21		
आकस्मिक देयताएं और लेखा टिप्पणी	22		

नालंदा विश्वविद्यालय
31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान का लेखा

राशि रुपए (INR) में

प्राप्ति	वर्तमान वर्ष	पूर्व वर्ष	भुगतान	वर्तमान वर्ष	पूर्व वर्ष
1)प्रारम्भिक जमा			**1)भुगतान**		
नकद	-	-	**संस्थापना व्यय**		
बैंक में नकदी			सैलरी एवं भत्ता	135,034,510.00	114,409,059.00
चालू खाता		315,694.00	शैक्षिक व्यय	30,054,766.00	14,353,258.00
बचत खाता	187,656,622.00	255,254,512.00	**प्रशासनिक व्यय**		
जमा खाता	214,007,783.00	186,956,904.00	अवसंरचना	113,099,863.00	61,130,248.00
2)प्राप्त अनुदान		-	संचार	4,941,999.00	1,116,077.00
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त	3,500,000,000.00	2000,000,000.00	अन्य	35,861,887.00	8,366,170.00
3) शैक्षिक प्राप्ति	28,068,862.00	8,055,928.00	वित्त लागत	675,753.00	73,851.00
4)चिन्हित/अक्षयनिधि प्राप्त	500,000.00	716,598.00	परिवहन व्यय	8,122,171.00	6.064,757.00
			मरम्मत एवं अनुरक्षण	3,71,286.00	2,993,424.00
5)प्रायोजित परियोजनाओं के सापेक्ष प्राप्ति	2,070,821.00	-	पूर्व अवधि व्यय	1,570,114.00	512,800.00
6)छात्रवृत्ति बैच 2020-22 एवं 2021-23 के लिए आसियान से (कुल) प्राप्ति		28,581,632.00	अन्य व्यय	440,538.00	38,127.00
7)निवेश से प्राप्त आय			**2)चिन्हित/अक्षयनिधि निवेश**	-	-
चिन्हित/अक्षयनिधि - (ब्याज)	11,297,381.00	11,670,829.00	**3) प्रायोजित परियोजनाओं के सापेक्ष भुगतान**	1,191,391.00	4,309,149.00
अन्यनिवेश		-	नियत परिसम्पत्तियों पर व्यय तथा पूंजीगत कार्य प्रगति पर		
8)आस्ट्रेलियाई निधि की एफ डी का नकदीकरण		63,962,849.00	नियत परिसम्पत्तियों का क्रय	103,758,180.00	8,783,770.00
9) प्राप्त ब्याज			**4)पूंजीगत कार्य प्रगति पर**	2,495,186,094.00	2,154,216,431.00
सावधि जमा/बचत खाता (अनुदान) पर ब्याज	23,881,711.00	13,788,512.00	**5) एमईए को ब्याज का भुगतान**	47,506,718.00	
अग्रिम पर ब्याज		25,493,207.00	**6) अन्य भुगतान (संवैधानिक भुगतान समेत)**		-
10) अन्य आय	2,312,668.00	80,270.00	**7) जमा एवं अग्रिम**		
11) अन्य प्राप्ति			सुरक्षा राशि जमा	600,000.00	
सुरक्षा राशि जमा	76,190,550.00	26,577,160.00	ईएमडी		6,893,500.00
ईएमडी	3,852,500.00	6,563,500.00	अन्य अग्रिम	4,033,718.00	142,329.00

पूर्व अवधि आय	441,121.00	-	संविदाकार को अग्रिम	-	-
जमानती रूपए (सकल)	543,195.00	155,041.00	वर्तमान देयता में कमी	-	-
कार्मिकों को अग्रिम (कार्मिक द्वारा उपयोग में लाए गए, नेट)		39,148.00	कार्मिक को अग्रिम	1,005,114.00	-
संविदाकार से अग्रिम की (रिकवरी)	50,596,088.00	269,127,306.00	अन्य देयताएं		12,005,345.00
नकद अथवा उपहार से प्राप्त रिकवरी का मूल्य		289,645.00	संड्री डेबटर्स स्कॉलरशिप में बढ़त	13,377,680.00	2,260,793.00
स्टेल चैक	-	9,415.00	प्रशिक्षु/छात्रवृति के लिए प्रदान की जाने वाली वृत्ति		670,503.00
संकाय विनिमय कार्यक्रम की आसियान निधि	13,236,908.00		राउंड ऑफ		27.00
एफिलिएशन फंड	1000,000.00		संवैधानिक करों का भुगतान	19,105,327.00	97,634,127.00
संविदाकार से अन्य कटौती	47,529,646.00		संड्री क्रेडिटर्स में कमी	586,093.00	
संवैधानिक करों की रिकवरी	12,009,370.00		भुगतान योग्य व्यय	404,604,375.00	
			8)अन्य प्राप्ति	1,551,944.00	
			9) समापन शेष		
			नकद		
			बैंक में नकद		
			अक्षय निधि से निवेश	210,340,177.00	
			बचत खाता	339,966,114.00	187,656,622.00
			जमा लेखा	198,839,414.00	214,007,783.00
कुल	**4,175,195,226.00**	**2,897,638,150.00**	**कुल**	**4,175,195,226.00**	**2,897,638,150.00**

प्रगती के पथ पर अग्रसर नालंदा :
मिडिया कवरेज

Nalanda University Welcomes MoS Rajkumar Ranjan Singh

पटना, शुक्रवार
29.10.2021 | प्रभात खबर

केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री नालंदा विवि का आज करेंगे निरीक्षण

केंद्रीय राज्य मंत्री का स्वागत करतीं नालंदा विवि की कुलपति प्रो सुनैना सिंह.

राजगीर. विदेश व केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ राजकुमार रंजन सिंह दो दिवसीय दौरे पर गुरुवार को राजगीर पहुंचे. उनके साथ विदेश मंत्रालय के अधिकारियों का दल भी है.

नालंदा विश्वविद्यालय में पहुंचने पर कुलपति प्रो सुनैना सिंह द्वारा पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया गया. राजगीर के इण्डो होके होटल में अधिकारियों के साथ रात्रि विश्राम कर रहे हैं. राजगीर थानाध्यक्ष दीपक कुमार द्वारा बिम्बिसार द्वार से मंत्री को एस्कॉर्ट कर नालंदा विश्वविद्यालय पहुंचाया गया. जहां उनका और विदेश मंत्रालय के अधिकारियों का भव्य स्वागत किया गया. मंत्री द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ बैठक कर विश्वविद्यालय के प्रगति का फीडबैक लेने के बाद रात्रि विश्राम के लिए होटल पहुंच गये हैं. राजगीर और नालंदा विश्वविद्यालय में केंद्रीय मंत्री डॉ सिंह का यह पहला दौरा है. उनके द्वारा आज शुक्रवार को नालंदा विश्वविद्यालय के प्रगति का जायजा लिया जाएगा. उनके द्वारा विश्वविद्यालय के हर गतिविधियों के प्रगति की समीक्षा और निरीक्षण की जायेगी.

सहारा | पटना। रविवार • 31 अक्टूबर • 2021

विश्व शांति की स्थापना में योगदान करेगा नालंदा विवि : डॉ. राजकुमार

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
बिहारशरीफ।

केंद्रीय विदेश व शिक्षा राज्य मंत्री ने नालन्दा विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ की बैठक

पटना, रविवार
31.10.2021 | प्रभात खबर | 02

नालंदा विवि एशिया के विद्वानों को कर रहा आकर्षितः मंत्री

- केंद्रीय मंत्री ने एनयू के टीचिंग ब्लॉक का किया उद्घाटन
- विवि परिसर में किया गया पौधारोपण

टीचिंग ब्लॉक का उद्घाटन करते केंद्रीय मंत्री, साथ में एनयू की वीसी.

राजगीर. केंद्रीय विदेश व शिक्षा राज्यमंत्री डॉ राजकुमार रंजन सिंह द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित टीचिंग ब्लॉक का फीता काट कर उद्घाटन शुक्रवार को किया गया. विश्वविद्यालय परिसर में उनके द्वारा नीम और लीची का पौधारोपण भी किया गया. इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आठ सौ साल बाद नालंदा फिर से पुनर्जीवित हो रहा है.

दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के ज्ञान पिपासुओं को पहले की तरह आकर्षित करने के लिए नालंदा विवि को तैयार किया जा रहा है. इसके पूर्व केंद्रीय मंत्री द्वारा विश्वविद्यालय के तमाम गतिविधियों की समीक्षा बैठक कर की गयी. उस बैठक में विदेश मंत्रालय और नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए. नालंदा जैसी ज्ञान की संस्थाएं वर्तमान समय में दुनिया में अंतर-संबंधों और समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. नालंदा विश्वविद्यालय समावेश, सद्भाव, शांति, ज्ञान, प्रेरणा, रचनात्मकता और नवाचार के प्रतीक के रूप में अपनी पहचान बना रहा है.

उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के छात्रों की भागीदारी नालंदा के समावेशी अनुभव को समृद्ध करती है. इसका उपयोग मानवता की समृद्धि एवं नॉलेज इको सिस्टम को विकसित करने के लिए किया जा सकता है. केंद्रीय मंत्री ने कहा सदियों तक नालंदा शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र था. नालंदा एशिया के विद्वानों को आकर्षित करता रहा है. फिर से अंतर-एशिया ज्ञान और वार्ता का यह केंद्र बिंदु बन गया है.

उन्होंने कहा कि पुनर्जीवित नालंदा विश्वविद्यालय भी वैश्वीकृत दुनिया के लिए आशा, ज्ञान और सुरक्षा के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में उभर रहा है. मंत्री द्वारा विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल के साथ विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों और नवनिर्मित सुविधा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया. कुलपति प्रो सुनैना सिंह ने नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों और निर्माण कार्यों की प्रगति पर एक प्रेजेंटेशन के माध्यम से केन्द्रीय मंत्री को अवगत कराया. कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण में प्राचीन नालंदा की वास्तु शैली, हरित परिसर, जल संसाधन मितव्ययिता, वर्षा जल-संचय और नेट-जीरो पर काम किया जा रहा है.

नालंदा फिर से विश्व शांति, सद्भाव की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हो रहा है. शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए कुलपति ने कहा कि नालंदा की शिक्षण पद्धति में भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा और आधुनिक बौद्धिक अन्वेषणों का समन्वय किया गया है, जिससे भविष्य के वैचारिक नेतृत्व करने वाली पीढ़ी का सृजन हो सके. केंद्रीय मंत्री के सम्मान में विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया. इस अवसर पर विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव डॉ. अनुपम रे, उपसचिव, निदेशक एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी के अलावे फैकल्टी मेंबर्स तथा अन्य कर्मी उपस्थित थे.

दैनिक भास्कर | पटना, रविवार, 31 अक्टूबर, 2021 | 16

नालंदा विवि का दौरा • केंद्रीय विदेश एवं शिक्षा राज्यमंत्री को कुलपति ने शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी दी

नए टीचिंग ब्लॉक का केंद्रीय मंत्री ने किया उद्घाटन

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

केंद्रीय विदेश एवं शिक्षा राज्यमंत्री डा. राजकुमार रंजन सिंह नालंदा विश्वविद्यालय के दो दिवसीय दौरे के दूसरे दिन शनिवार को उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित टीचिंग ब्लॉक का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने उन्हें विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और चल रहे विकास कार्यों की जानकारी दी। इस मौके उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण में प्राचीन नालंदा की वास्तु शैली के समन्वय की सराहना करते हुए हरित परिसर, जल संसाधन मितव्ययिता, वर्षा जल-संचय और नेट-जीरो जैसे प्रयोगों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विश्व शांति सद्भाव की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देगा। मंत्री ने कहा कि नालंदा जैसी ज्ञान की संस्थाएं वर्तमान समय में हमारे अंतर-संबंधों और समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नालंदा विश्वविद्यालय "समावेश, सद्भाव, शांति, ज्ञान, प्रेरणा, रचनात्मकता और नवाचार" के प्रतीक के रूप में अपना स्थान बना रहा है। उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के छात्रों की भागीदारी नालंदा के समावेशी अनुभव को समृद्ध करती है। जिसका उपयोग मानवता की समृद्धि लिए एक 'नॉलेज ईको सिस्टम' को विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

उद्घाटन के मौके पर मंत्री व अन्य

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

मंत्री ने प्रतिनिधिमंडल के साथ विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों और नवनिर्मित सुविधा केन्द्रों का दौरा किया। इस दौरान विश्वविद्यालय में हाल ही में बनाए गए स्कूलों और केंद्रों के बारे में बताने के लिए स्वयं कुलपति प्रो. सुनैना सिंह और फैकल्टी मेंबर्स के साथ-साथ अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। मंत्री के सम्मान में विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों ने विश्वविद्यालय के बहु संस्कृति विविधता का प्रदर्शन किया। ज्ञातव्य है कि विश्वविद्यालय में 30 से अधिक देशों के छात्र अध्ययनरत हैं। कुलपति ने कहा कि सदियों तक नालंदा शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र था। जिसने पूरे एशिया के विद्वानों को आकर्षित किया और अंतर-एशिया ज्ञान और वार्ता का केंद्र बिंदु बन गया।

प्रजेंटेशन से दी गई शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी

नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों और निर्माण कार्यों की प्रगति पर एक प्रेजेंटेशन के माध्यम से मंत्री को जानकारी दी गई। कुलपति ने कहा कि नालंदा की शिक्षण पद्धति में भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा और आधुनिक बौद्धिक अन्वेषणों का समन्वय किया गया है। जिससे भविष्य के वैचारिक नेतृत्व करने वाली पीढ़ी का सृजन हो सके। सदियों तक नालंदा शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र था। जिसने पूरे एशिया के विद्वानों को आकर्षित किया और अंतर-एशिया ज्ञान और वार्ता का केंद्र बिंदु बन गया। आज का नालंदा विश्वविद्यालय भी वैश्वीकृत दुनिया के लिए आशा, ज्ञान और सुरक्षा के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में उभर रहा है।

6th International Dharma-Dhamma Conference

THE TIMES OF INDIA, PATNA
MONDAY, NOVEMBER 8, 2021 3

Naidu Opens 3-Day 6th Int'l Dharma Dhamma Conference

Farrukh Nadim

Biharsharif: Vice-President M Venkaiah Naidu on Sunday inaugurated the three-day sixth International Dharma Dhamma Conference (IDDC) on Nalanda University (NU) campus and hoped that the event would provide new lessons and insights to make the post-Covid world a better place for humanity — "a world where competition gives way to compassion, wealth makes way for health, consumerism gives way to spirituality and supremacy and dominance yield to peaceful co-existence".

The sixth IDDC has been jointly organised by the NU and India Foundation.

Naidu also called for critical reassessment of lifestyle and thinking in the wake of Covid pandemic to establish peace and harmony in the world.

He added peace and brotherhood preached by Gautam Buddha was the central idea for ensuring development in the country. "We should strive to follow these principles. The universal principles of peaceful co-existence, cooperation, mutual care and share, non-violence, friendliness, compassion, peace, truth, honesty, selflessness and sacrifice have been an integral part of dharmic ethical exhortations," he said, adding the resurrected NU should not only impart knowledge to the students but also make them wise.

Addressing the event, governor Phagu Chauhan discussed at length the past glory of NU and expressed his happiness over its revival.

Chief minister Nitish Kumar said Rajgir had a glorious history and it was associated with all major religions. He used the occasion to highlight the success of Covid vaccination in Bihar and elsewhere in the country.

In her welcome address, NU vice-chancellor Sunaina Singh said the middle path shown by Gautam Buddha and the Veda would guide in overcoming the economic and mental distresses caused by Covid pandemic.

Around 150 scholars from the country and abroad will present their research papers at the IDDC.

State rural development minister Shrawan Kumar, Nalanda MP Kaushlendra Kumar, Patna divisional commissioner Sanjay Kumar Agarwal, Nalanda district magistrate (DM) Yogendra Kumar Singh and Nalanda SP Hari Prasath S were among those present on the occasion.

Vice-President M Venkaiah Naidu, governor Phagu Chauhan, CM Nitish Kumar and Nalanda University vice-chancellor Sunaina Singh at Dharma Dhamma conference organised by Nalanda varsity on Sunday

पटना, मंगलवार
09.11.2021 प्रभात खबर 04

आयोजन. धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन विद्वानों ने की चर्चा

हम प्रकृति की देखभाल करें प्रकृति हमारी देखभाल करेगी

संवाददाता, राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन विचारकों और विद्यार्थियों ने गहन विचार-विमर्श किया. देश-विदेश से इस आयोजन में हिस्सा लेने आए प्रतिनिधियों ने 'कोरोना काल के बाद की दुनिया में धर्म-धम्म परंपरा की भूमिका' पर चर्चा की. सुषमा स्वराज ऑडिटोरियम में संपन्न सुबह के सत्र में हिस्सा लेते हुए जेएनयू में स्कूल ऑफ संस्कृत स्टडीज के प्रो रामनाथ झा ने कहा कि धर्म एक प्रकार का ब्रह्मांडीय नियम है.

धर्म अंतिम सत्य की दैवीय अभिव्यक्ति है. गीता में सभी वैदिक ग्रंथों के सार निहित हैं. कोरोना संकट के संदर्भ में उन्होंने कहा कि गीता में कहा गया है कि अगर हम प्रकृति की देखभाल करते हैं, तो प्रकृति हमारी देखभाल करती है. दक्षिण कोरिया से आए कोरियन सोसायटी फॉर इंडियन स्टडीज के अध्यक्ष जियो ल्योंग ली ने कहा कि भारत की प्रसिद्धि एक आध्यात्मिक देश के रूप में रही है. कोरोना वायरस की भयावहता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे विचार भी एक तरह के वायरस हैं. अगर हमारे विचार अच्छे होंगे, तो बेहतर परिणाम देंगे और अगर विचार नकारात्मक हुए, तो उसके परिणाम भी गलत होंगे. पुणे के फ्लेम विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र और धार्मिक अध्ययन के प्रो पंकज जैन ने कहा कि कोरोना महामारी के समय और उसके बाद भी हमें धर्म और अधर्म पर गौर करने की जरूरत है. कोरोना के वैश्विक संकट के दौर में जब दुनिया के बड़े और संपन्न देश अपने संसाधनों को दूसरे देशों के साथ साझा करने के लिए तैयार नहीं थे तब भारत ने धर्म का अनुपालन करते हुए अपने संसाधनों को दूसरे देशों तक भी पहुंचाया. दिल्ली विश्वविद्यालय में मैनेजमेंट स्टडी की प्रो सुनीता सिंह सेनगुप्ता ने कहा कि व्यापार समाज के कल्याण के लिए होना चाहिए न कि सिर्फ आर्थिक लाभ के लिए. टीचिंग ब्लॉक में संपन्न हुए सायं सत्र में भारत समेत दुनिया के विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया. सुबह के दो सत्रों की अध्यक्षता एशियन-अफ्रिकन फिलॉसफी कांग्रेस के अध्यक्ष एस. आर. भट और राजस्थान विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र की प्रो कुसुम जैन ने की. चर्चा के दौरान विभिन्न विचारकों ने प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से प्रेरित होकर नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना को महत्वपूर्ण बताया. विद्वानों ने विश्वविद्यालय में तेज गति से हो रही निर्माण और शैक्षणिक गतिविधियों के लिए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो सुनैना सिंह की सराहना की.

सम्मेलन में शामिल प्रतिनिधि .

6th International Dharma-Dhamma Conference

हिन्दुस्तान 08
पटना • बुधवार • 10 नवंबर 2021

'रिलिजन' मानव केंद्रित तो 'धर्म' समस्त सृष्टि के हित की चिंता का करता है प्रदर्शन : केटीएस सराव

ज्ञान के प्रति असीम जिज्ञासा का भाव ही है 'नालंदा'

राजगीर | निज संवाददाता

सम्मेलन

- धर्म सिर्फ लाभ नहीं, शुभ-लाभ की करता है बात
- देश-विदेश से पधारे चिंतकों ने की चर्चा

नालंदा विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन के तीसरे और अंतिम दिन मंगलवार को 'कोरोना काल के बाद विश्व व्यवस्था में धर्म-धम्म परंपरा की भूमिका' विषय पर चर्चा हुई। देश-विदेश के कई विद्वानों और चिंतकों ने चर्चा में हिस्सा लिया। सुबह के सत्र में हिस्सा लेते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर केटीएस सराव ने 'धर्म' तथा 'रिलिजन' के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि रिलिजन शब्द की अवधारणा मानव केंद्रित है, जबकि धर्म समस्त सृष्टि के हित की चिंता करता है।

जेएनयू में संस्कृत और पाली के प्रोफेसर सी. उपेन्द्र राव ने 'नालंदा' का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ज्ञान के प्रति असीम प्यास और जिज्ञासा का भाव ही 'नालंदा' है। उन्होंने कहा कि नालंदा भगवान बुद्ध के प्रखर शिष्य सारिपुत्र का जन्मस्थान है। गुजरात के विचारक भाग्येश झा ने कहा कि कोरोना संकट ने हमें अपने 'माइक्रोस्कोप' को ठीक करने का संदेश दिया है। धर्म सिर्फ लाभ की नहीं, बल्कि शुभ-लाभ की बात करता है। पहले सत्र की अध्यक्षता कर रहे इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसोफिकल रिसर्च के अध्यक्ष रमेशचंद्र सिन्हा ने कहा कि भारत के प्राचीन जीवन मूल्य नई वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कोरोना ने हमें अपने जीवन में ठहरकर सोचने का संदेश दिया : बालागणपति देवराकोंडा : सुबह के दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर और प्रमुख रहे बालागणपति देवराकोंडा ने कहा कि कोरोना संकट ने हमारी गतिविधियों पर रोक लगा दी।

दरअसल, कोरोना ने हमें अपने जीवन में ठहरकर सोचने और पुनर्विचार करने का संदेश दिया है, ताकि हम फिर से ऊर्जान्वित महसूस कर सकें। कार्यक्रम में जेएनयू के प्रोफेसर प्रियदर्शी मुखर्जी और सांथीगिरि रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक के. गोपीनाथ पिल्लई ने भी अपने विचार रखे।

धर्म-धम्म सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

धर्म-धम्म सम्मेलन के तीसरे दिन मंचासीन विद्वान। • हिन्दुस्तान

लोकगीतों की झनक से गूंजीं राजगीर की पंच वादियां

राजगीर | निज संवाददाता

दिशा-दिशा में लोक रंग का तार-तार है। महकी-महकी सोंधी माटी का बिहार है.... पद्मश्री डॉ. शांति जैन रचित बिहार गौरव गान की इन पंक्तियों पर जब कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं, तो नवनिर्मित ओपन एयर थिएटर में मौजूद लोग झूम उठे। नालंदा विश्वविद्यालय में धर्म-धम्म सम्मेलन के शाम में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस दौरान लोकगीत की महक, और लोकनृत्य की झनक ने दर्शकों का मन मोह लिया। महापर्व छठ की झलकी के साथ बिहार की सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत की गई।

'सुरांगन' के कलाकारों ने बिहार के मशहूर लोकगीत और लोकनृत्य शैलियों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बिहार बाल भवन, किलकारी के युवा कलाकारों ने मिथिला का प्रसिद्ध लोकनृत्य सामा चकेवा प्रस्तुत किया। सामा खेले चलली, भौजी संग सहेली... गीत के जरिए कलाकारों ने मिथिला की संस्कृति को जीवंत कर दिया। लोकगायक धर्मेन्द्र कुमार ने जब नदिया किनारे गोरी ठार रे, बिंदिया ले गइल मछरिया....झूमर गाया तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। आयोजन में स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के सात शहीद और बाबू कुंवर सिंह जैसे सेनानियों के योगदान का भी प्रतीकात्मक मंचन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में 'सुरांगन' की प्रमुख सुदीपा घोष ने सरस्वती वंदना पर अपनी नाट्य प्रस्तुति दी। खुले आकाश के नीचे हुए इस कार्यक्रम में पूरा थियेटर सतरंगी रोशनी से जगमगा उठा। विश्वविद्यालय के ओपन एयर थियेटर में आयोजित होने वाला यह पहला कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम के दौरान दर्शक दीर्घा में नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के साथ ही अन्य गणमान्य अतिथि मौजूद रहे।

05 हिन्दुस्तान
पटना • सोमवार • 08 नवंबर 2021

राजगीर में तीन दिवसीय छठे धर्म-धम्म सम्मेलन की हुई शुरुआत, सीएम ने कहा-नये विवि में भी विभिन्न देशों के छात्र ज्ञान करें अर्जन

विवि को वैश्विक बनाएं, करेंगे हरसंभव मदद

बोले नीतीश कुमार

राजगीर | निज संवाददाता

जीवन सुरक्षा सबसे अहम : वनियारच्ची

धर्म-धम्म सम्मेलन में शामिल होने आये कई दिग्गज

पौधरोपण करते उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, साथ में मुख्यमंत्री व राज्यपाल। • जागरण

उपराष्ट्रपति, राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने लगाए पौधे

सुषमा स्वराज कन्वेंशन हाल में आने के पहले उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने नालंदा विवि परिसर में अशोक का पौधा लगाया, फिर उसकी सिंचाई भी की। इस दौरान राज्यपाल फागू चौहान और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी साथ थे। इस मौके पर उपराष्ट्रपति ने कहा कि विवि परिसर को हरा-भरा और पर्यवरण अनुकूल रहना ही चाहिए। यहां का नेट जीरो कैम्पस और इको फ्रेंडली सिस्टम अनुकरणीय है।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। • जागरण

सम्मेलन को संबोधित करती श्रीलंकाई परिवहन मंत्री पवित्रा वनियारच्ची • जागरण

Minister of State at NU Campus

पटना, बुधवार 10.11.2021 प्रभात खबर 06

धर्म-धम्म सम्मेलन. शाश्वत ज्ञान और अंतर्दृष्टि का प्रतीक है नालंदा विवि

जला दिये जाने के बाद भी जीवंत रहा नालंदा विश्वविद्यालय : मीनाक्षी लेखी

संवाददाता, राजगीर

समारोह को संबोधित करतीं विदेश राज्य मंत्री.

लोकगीतों की झनक से गूंजा विश्वविद्यालय

धर्म सिर्फ लाभ नहीं, शुभ-लाभ की भी करता है बात

धर्म-धम्म सम्मेलन के आखिरी दिन चिंतकों ने की चर्चा

संवाददाता, राजगीर

सम्मेलन में शामिल प्रतिनिधि.

दैनिक भास्कर
पटना | मंगलवार 09 नवंबर, 2021

नालंदा विश्वविद्यालय • धर्म और धम्म का एक ही अर्थ, हिंदुओं के लिए जो धर्म है बुद्धिस्टों के लिए वही धम्म है : रमेश चंद्र सिन्हा

धर्म धम्म सम्मेलन का दूसरा दिन; सभ्यताओं के इतिहास में उत्थान पतन से भारत भी अछूता नहीं, कॉन्फ्रेंस उसके संरक्षण में भूमिका निभाएगा

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

पारंपरिक भारतीय पद्धति से शुरू हुआ है कोरोना के खिलाफ टीकाकरण

अनदेखी के कारण खो रहे हैं धरोहर, इसका संरक्षण जरूरी

दैनिक भास्कर पटना | बुधवार 10 नवंबर, 2021 | 19

विद्वानों ने रखे विचार • विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय धर्म-धम्म कॉन्फ्रेंस सम्पन्न

मानव में संवेदना नहीं हो तो वो जनहित के कार्यों से विमुख हो जाता है : भट्ट

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

कॉन्फ्रेंस के अंतिम दिन देश-विदेश के कई विद्वानों ने रखी अपनी बात

विश्वविद्यालय में आयोजित धर्म-धम्म सम्मेलन के अंतिम दिन मंचासीन अतिथि।

अशोक ने किए नैतिक उन्नति के लिए प्रयत्न

धर्म मनुष्य में जीवन का महत्व बताता है

हिन्दुस्तान 02
पटना • मंगलवार • 09 नवंबर 2021

धर्म-धम्म सम्मेलन : हम प्रकृति की देखभाल करेंगे तभी प्रकृति हमें भी देखेगी

धर्म एक प्रकार का ब्रह्मांडीय नियम : प्रो. रामनाथ झा

राजगीर | निज संवाददाता

दूसरा दिन

राजगीर में आयोजित धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन के सत्र में शामिल देश-विदेश विद्वान। • हिन्दुस्तान

Nalanda University Conferred with International Award for Quality Achievement

THE TIMES OF INDIA TNN / Dec 13, 2021, 04:00 IST

NU gets international award for quality achievement

PATNA: Nalanda University (NU) has been honoured with the prestigious Quality Achievement Award-2021 by the European Society for Quality Research (ESQR), a European organisation based in Switzerland.

Consul of the Indian embassy in Dubai Ramkumar Thangraj received the award on behalf of NU at the felicitation ceremony on Saturday. The award has been given for NU's academic excellence and research-oriented programs.

NU's vice-chancellor Prof Sunaina Singh said, this award has commended our commitment towards academic excellence at Nalanda. "We have introduced a robust academic structure with interdisciplinary cafeteria model and have innovative courses that blend the traditional wisdom, integrative experiential learning with modern knowledge," she said, adding, as Nalanda is playing a crucial role in the multi-polar world by bridging various nationalities through knowledge, such awards recognise the importance of its resurgence.

ESQR honours organisations and institutions that are leading innovators and have demonstrated outstanding commitment in quality management across the globe.

A press communiqué issued by the NU stated that as the varsity's campus is emerging as one of largest 'net zero' campuses in the world, this award also applauds NU's commitment for the principle of sustainability and recognises the leadership role of its VC in developing the university as world class institution.

हिंदी न्यूज़ / बिहार / नालंदा

जागरण

नालंदा विश्वविद्यालय को मिला अंतरराष्ट्रीय सम्मान

Author: Jagran

Publish Date: Sun, 12 Dec 2021 11:22 PM (IST) Updated Date: Sun, 12 Dec 2021 11:22 PM (IST)

बिहारशरीफ। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित स्विट्•ारलैंड की संस्था यूरोपियन सोसायटी फार क्वालिटी रिसर्च ने नालंदा विश्वविद्यालय को क्वालिटी अचीवमेंट अवार्ड-2021 से सम्मानित किया है। यह जानकारी नालंदा विश्वविद्यालय की ओर से रविवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी गई।

बिहारशरीफ। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित स्विट्•ारलैंड की संस्था यूरोपियन सोसायटी फार क्वालिटी रिसर्च ने नालंदा विश्वविद्यालय को क्वालिटी अचीवमेंट अवार्ड-2021 से सम्मानित किया है। यह जानकारी नालंदा विश्वविद्यालय की ओर से रविवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी गई।

बताया गया है कि विदेश मंत्रालय से संबद्ध भारत के इस अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की ओर से दुबई स्थित भारतीय दूतावास के कौंसल, रामकुमार थंगराज ने बीते शनिवार की शाम (11 दिसंबर) को दुबई में आयोजित सम्मान समारोह में यह पुरस्कार ग्रहण किया। नालंदा विश्वविद्यालय को यह सम्मान इसके बहुआयामी व अनुसंधान उन्मुख शिक्षण पद्धति के लिए दिया गया है। इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह में यूरोप, एशिया, अमेरिका, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया समेत अनेक देशों के प्रतिष्ठानों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों को विभिन्न श्रेणियों के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के पुरस्कृत होने पर कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ हम लोगों ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना के अंतर्गत एक सुव्यवस्थित मॉडल विकसित किया है। जिसके पाठ्यक्रम में पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का एकीकृत मिश्रण है। इस सम्मान ने नालंदा विश्वविद्यालय की अकादमिक गुणवत्ता एवं शिक्षा व्यवस्था के महत्व को एक बार फिर स्थापित किया है। इस पुरस्कार से नालंदा विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप और ज्ञान-मार्ग के माध्यम से दुनिया के साथ विश्वविद्यालय के अकादमिक संबंध की संभावनाओं को विकसित करने में सहायता मिलेगी। यूरोपियन सोसायटी फॉर क्वालिटी रिसर्च पिछले कई वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के संस्थानों को उनकी गुणवत्ता, उपयोगिता और नवाचारों के आधार पर सम्मानित करने का कार्य कर रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई श्रेणियों और मानकों के आधार पर अवार्ड के विजेताओं का चयन किया जाता है।

Nalanda University Hosted the Delegation from Bhutan

THE TIMES OF INDIA, PATNA
MONDAY, DECEMBER 6, 2021 3

Bhutan team visits NU, hails India's democracy

Faryal Rumi

A delegation from Bhutan with NU students

Patna: The Gen-Next Democracy Network Programme delegation from Bhutan visited the Nalanda University on Sunday to participate in an event organised to provide an overview of India's democratic traditions, cultural heritage and development initiatives to young emerging leaders of 75 democracies which is part of ICCR (Indian Council for Cultural Relations) initiative to mark 'Azadi ka Amrit Mahotsav'.

The four-member delegation comprised Ngwang Gyltshen, Pashupati Diyali, Sonam Yangden and Tshering Denkar, influential youth figures of Bhutan in the fields of art, music and literature. The delegation listened to the virtual address by NU vice-chancellor Sunaina Singh on the university campus. Singh talked about the importance of the resurgence of Nalanda, its international character and developing its interconnectedness with the world through the knowledge route. She emphasized on the strong cultural interconnection between India and Bhutan. The delegation also had a detailed interaction with faculty members. A presentation on the university's architectural design and the concept of 'Net-Zero' was made by the engineering team.

The Bhutan delegation was taken to the auditorium of the university where they had an interaction with Bhutanese students. The delegation was also given a guided campus tour where they were briefed about the specifics of architecture and planning of the new Nalanda University and its connectedness with the ancient one.

4 दैनिक जागरण पटना, 6 दिसंबर, 2021

नालंदा पहुंचा भूटान का प्रतिनिधिमंडल

नालन्दा विश्वविद्यालय के अवलोकन के बाद भूटानी प्रतिनिधि मंडल • जागरण

संवाद सहयोगी, राजगीर : भूटान के जेन-नेक्स्ट डेमोक्रेसी नेटवर्क प्रोग्राम के प्रतिनिधिमंडल ने नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भूटान के युवा नेताओं को भारत की लोकतांत्रिक परंपराओं, सांस्कृतिक विरासत और वर्तमान में हो रहे विकास का अवलोकन करने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय में कल उनकी यात्रा का आयोजन किया गया था। चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में श्री नवांग ग्यालछन, श्री पशुपति दियाली, सुश्री सोनम यांगडेन और सुश्री शेरिंग डेनकर शामिल थे, जो भूटान के व्यापार, कला, संस्कृति, संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र के अग्रणी युवा नेतृत्व हैं। यह दल 25 नवंबर से भारत की यात्रा पर है।

नालंदा विश्वविद्यालय में इस प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया गया और उन्हें विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक पहलुओं एवं क्रिया-कलापों से अवगत कराया गया नालंदा विश्वविद्यालय वर्चुअल माध्यम से प्रतिनिधिमंडल को संबोधित किया, जहां उन्होंने नालंदा के पुनरुत्थान के महत्व, इसके अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप और ज्ञान-मार्ग के माध्यम से दुनिया के साथ विश्वविद्यालय के परस्पर संबंध को विकसित करने की बात की। कुलपति के संबोधन में भारत और भूटान के बीच मजबूत सांस्कृतिक अंतर्संबंध पर जोर दिया गया। प्रतिनिधिमंडल ने अकादमिक संकाय सदस्यों के साथ भी विस्तृत बातचीत की। विश्वविद्यालय की इंजीनियरिंग टीम ने विश्वविद्यालय के वास्तुशिल्प डिजाइन और नेट-जीरो की अवधारणा से प्रतिनिधि मण्डल को अवगत कराया। संबंधित विश्वविद्यालय के पहल और विश्वविद्यालय के निर्माण में कुलपति के योगदान की सराहना की।

मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत भूटान के छात्र-छात्राओं से मुलाकात की और उनके अनुभव के बारे में जाना। इस के बाद उन्होंने ने 455 एकड़ में फैले नालंदा विश्वविद्यालय के नेट-जीरो कैंपस का भ्रमण किया। इस दौरान उनके साथ मौजूद विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और अधिकारियों ने उन्हे कैंपस में मौजूद इमारतों, संसाधनों और सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया।

पटना, सोमवार
06.12.2021 प्रभात खबर 04

भारत और भूटान के बीच सांस्कृतिक संबंधों पर चर्चा

स्वदेशी छात्रों से मिला भूटान प्रतिनिधिमंडल

संवाददाता, राजगीर

भूटान के जेन-नेक्स्ट डेमोक्रेसी नेटवर्क प्रोग्राम के प्रतिनिधिमंडल ने नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया. आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भूटान के युवा नेताओं को भारत की लोकतांत्रिक परंपराओं, सांस्कृतिक विरासत और वर्तमान में हो रहे विकास का अवलोकन करने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय में कल उनकी यात्रा का आयोजन किया गया था. चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में नवांग ग्यालछन, पशुपति दियाली, सोनम यांगडेन और शेरिंग डेनकर शामिल थे. वे सभी भूटान के व्यापार, कला, संस्कृति, संगीत एवं साहित्य के क्षेत्र के अग्रणी युवा नेतृत्व हैं. यह दल 25 नवंबर से भारत की यात्रा पर है. नालंदा विश्वविद्यालय में इस प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया गया. उन्हें विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक पहलुओं एवं क्रिया-कलापों से अवगत कराया गया. नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने वर्चुअल माध्यम से प्रतिनिधिमंडल को संबोधित किया. उन्होंने भारत और भूटान के बीच मजबूत सांस्कृतिक अंतर्संबंध पर जोर दिया. विश्वविद्यालय की इंजीनियरिंग टीम ने विश्वविद्यालय के वास्तुशिल्प डिजाइन और नेट-जीरो की अवधारणा से प्रतिनिधि मंडल को अवगत कराया. मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत भूटान के छात्र-छात्राओं से मुलाकात की. इस के बाद उन्होंने ने 455 एकड़ में फैले नालंदा विश्वविद्यालय के नेट-जीरो कैंपस का भ्रमण किया. इस दौरान उनके साथ मौजूद विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और अधिकारियों ने उन्हे कैंपस में मौजूद इमारतों, संसाधनों और सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया. उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय की वास्तुकला और स्थापत्य की बारीकियों और प्राचीन नालंदा श्रीमहाविहार के साथ इसकी समानता के बारे में जानकारी दी गई.

प्रतिनिधिमंडल ने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे विभिन्न पर्यावरण संरक्षण संबंधित पहलों और जानने में रुचि व्यक्त की. भविष्य में भूटान के साथ अकादमिक संबंध की संभावनाओं के बारे में बातचीत की. उन्होंने विश्वविद्यालय में निर्मित हो रहे निर्माण, अकादमिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था की सराहना की. प्रतिनिधि मंडल ने शिक्षा जगत के लिए इसे अनुकरणीय बताया.

भूटान प्रतिनिधिमंडल के साथ एनयू के स्टूडेंट.

Meeting with 17 Member State Representative of Nalanda University

बिहारशरीफ भास्कर

पटना, रविवार 26 दिसंबर, 2021 | हरनौत • अस्थावां • शेखपुरा | राजगीर • हिलसा • नालंदा | dainikbhaskar.com

नालंदा विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने में सदस्य देश करते रहेंगे सहयोग

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने नालंदा विश्वविद्यालय के 17 सदस्य देशों के मिशन प्रमुखों की बैठक की मेजबानी की। सदस्य देशों के राजनयिकों के साथ यह उच्चस्तरीय बैठक नई दिल्ली विदेश मंत्रालय के पॉलिसी प्लानिंग एंड रिसर्च प्रभाग द्वारा आयोजित की गई थी। बैठक में कंबोडिया, लाओस- पीडीआर, म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई दारूसलम, मॉरिशस, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, थाईलैंड, पुर्तगाल, इंडोनेशिया, चीन और सिंगापुर के प्रतिनिधि मौजूद थे। नालंदा विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के नेतृत्व में प्राध्यापकों और अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल ने बैठक में शिरकत की। बैठक की शुरुआत विदेश मंत्रालय पॉलिसी प्लानिंग एंड रिसर्च प्रभाग के संयुक्त सचिव डा. अनुपम रे के संबोधन से हुई। उन्होंने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय जो अब तक सिर्फ हमारे विचारों में था, अब एक वास्तविकता है। उन्होंने वैश्विक उपलब्धि के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय को भविष्य में भी पूर्ण सहयोग देने की विदेश मंत्रालय की प्रतिबद्धता को दोहराया। डा. अनुपम रे ने सदस्य देशों के राजनयिकों के सामने नालंदा विश्वविद्यालय को आपका और हमारा अपना विश्वविद्यालय' बताया और उनसे सहयोग की अपेक्षा की बात कही। उन्होंने इस विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण को एक अप्रत्याशित उपलब्धि बताया, जहां पिछले 5 वर्ष में परिसर के निर्माण में 0.28 प्रतिशत से बढ़कर 85 प्रतिशत की प्रगति हुई है।

राजगीर में बैठक में शामिल सदस्य देशों के मिशन प्रमुख

31 देशों के छात्र कर रहे हैं पढाई : उन्होंने बताया कि कि वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय में 31 देशों के छात्र नामांकित हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वियतनामी छात्र ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए लिखा है कि नालंदा विश्वविद्यालय में अपने अध्ययन के दौरान मुझे कई अविस्मरणीय अनुभव हुए। राजगीर जैसे पवित्र बौद्ध-स्थान की दिव्य अनुभूति के साथ नालंदा विश्वविद्यालय में यहां की उच्चस्तरीय अध्ययन का समग्र अनंद लिया।

कुलपति ने रखी प्रगति रिपोर्ट

बैठक के दौरान सदस्य देशों के प्रतिनिधियों के समक्ष कुलपति ने विकास कार्यों की विस्तृत प्रस्तुति दी और नालंदा विश्वविद्यालय के अकादमिक स्थापत्य से उन्हें अवगत कराया। कुलपति ने बताया कि भविष्य के ज्ञान-परंपरा का नेतृत्व तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय में किस तरह से अंतर्विषयक अध्यापन, वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम और कैफेटेरिया मॉडल के साथ नवीन अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है। बैठक का संचालन विदेश मंत्रालय के विदेश नीति योजना प्रभाग के निदेशक डा. सुमित सेठ ने किया। कुलपति के संबोधन के बाद बैठक में मौजूद सदस्य देशों के मिशन प्रमुखों ने नालंदा विश्वविद्यालय में हुए विकास कार्यों की सराहना की और नालंदा के साथ अकादमिक सहयोग में रुचि दिखाते हुए भविष्य में सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। सदस्य देशों के मिशन प्रमुखों ने राजगीर स्थित नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण की इच्छा जाहिर की। कुलपति ने मिशन-प्रमुखों को नालंदा यात्रा के लिए निमंत्रण दिया।

पटना, रविवार 26.12.2021 | प्रभात खबर | 06

नालंदा विश्वविद्यालय के विकास की सदस्य देशों ने की सराहना

- नालंदा के 17 सदस्य देशों की बैठक की विदेश मंत्रालय ने दिल्ली में की मेजबानी
- वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय में 31 देशों के

संवाददाता, राजगीर

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने बीते दिनों (16 दिसंबर 2021) नालंदा विश्वविद्यालय के 17 सदस्य देशों के मिशन प्रमुखों की बैठक की मेजबानी की. सदस्य देशों के राजनयिकों के साथ यह उच्च-स्तरिय बैठक नयी दिल्ली में विदेश मंत्रालय के पॉलिसी प्लानिंग एंड रिसर्च के प्रभाग द्वारा आयोजित की गई थी. इस बैठक में कंबोडिया, लाओस-पीडीआर, म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया, ब्रूनेई दारूसलम, मॉरिशस, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, थाईलैंड, पुर्तगाल, इंडोनेशिया, चीन और सिंगापुर के प्रतिनिधि मौजूद थे. नालंदा विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो सुनैना सिंह के नेतृत्व में प्राध्यापकों और अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल ने इस बैठक में शिरकत की. बैठक की शुरुआत विदेश मंत्रालय पॉलिसी प्लानिंग एंड रिसर्च प्रभाग के संयुक्त सचिव डॉ अनुपम रे के उद्बोधन से हुई. इस मौके पर उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की प्रगति में कुलपति प्रो सुनैना सिंह के योगदान की सराहना की. उन्होंने कहा कि 'नालंदा विश्वविद्यालय जो अबतक सिर्फ हमारे विचारों में था, अब एक वास्तविकता है'. उन्होंने वैश्विक उपलब्धि के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय को भविष्य में भी पूर्ण सहयोग देने की विदेश मंत्रालय की प्रतिबद्धता को दोहराया. डॉ अनुपम रे ने सदस्य देशों के राजनयिकों के सामने नालंदा विश्वविद्यालय को 'आपका और हमारा अपना विश्वविद्यालय' बताया और उनसे सहयोग की अपेक्षा की बात कही. उन्होंने इस विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण को एक अप्रत्याशित उपलब्धि बताया, जहां पिछले 5 वर्ष में परिसर के निर्माण में 0.28 प्रतिशत से बढ़कर 85 प्रतिशत की प्रगति हुई है. बैठक के दौरान देशों के प्रतिनिधियों के समक्ष माननीय कुलपति ने विकास कार्यों की विस्तृत प्रस्तुति दी और नालंदा विश्वविद्यालय के अकादमिक स्थापत्य से उन्हें अवगत कराया. कुलपति ने बताया कि भविष्य के ज्ञान-परंपरा का नेतृत्व तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय में किस तरह से अंतर्विषयक आध्यापन, वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम और कैफेटेरिया मॉडल के साथ नवीन अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है. इस बैठक का संचालन विदेश मंत्रालय के विदेश नीति योजना प्रभाग के निदेशक डॉ सुमित सेठ ने किया. गौरतलब है कि वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय में 31 देशों के छात्र नामांकित हैं. नालंदा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वियतनामी छात्र ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए लिखा है कि 'नालंदा विश्वविद्यालय में अपने अध्ययन के दौरान मुझे कई अविस्मरणीय अनुभव हुए. एक स्नेही महिला के रूप में माननीय कुलपति द्वारा और अन्य नालंदा के प्रोफेसर और स्टाफ सदस्यों से मुझे पूरा सहयोग मिला.'

बैठक में शामिल सदस्य देशों के प्रतिनिधि.

मिशन प्रमुखों ने सभी प्रकार के सहयोग का दिया भरोसा

कुलपति के संबोधन के पश्चात बैठक में मौजूद सदस्य देशों के मिशन-प्रमुखों ने नालंदा विश्वविद्यालय में हुए विकास कार्यों की सराहना की और नालंदा के साथ अकादमिक सहयोग में रुचि दिखाते हुए भविष्य में सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया. सदस्य देशों के मिशन-प्रमुखों ने राजगीर स्थित नालंदा विश्वविद्यालय परिसर भ्रमण की इच्छा जाहिर की. माननीय कुलपति ने मिशन-प्रमुखों को नालंदा-यात्रा के लिए निमंत्रण दिया.

High Commissioner of Bangladesh Visited Nalanda University

पटना, 12 फरवरी, 2022 दैनिक जागरण 7

बांग्लादेश के उच्चायुक्त ने कहा, अद्वितीय अनुभव रहा नालंदा विवि का भ्रमण

घंटों नालंदा विवि के अवशेषों को देखते रहे हाई कमिश्नर

संवाद सहयोगी, राजगीर : बांग्लादेश के उच्चायुक्त एच.ई. मुहम्मद इमरान ने शुक्रवार को नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इस क्रम में विवि की कुलपति प्रो सुनैना सिंह ने उनका स्वागत किया और विश्वविद्यालय की प्रगति और उपलब्धियों से उन्हें अवगत कराया। मुहम्मद इमरान ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बांग्लादेश, नालंदा विश्वविद्यालय के सहभागी सदस्य देशों में से एक है। उन्होंने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय के हो रहे पुनरुत्थान को देखा और इसकी प्रशंसा की। अपनी यात्रा के दौरान, उच्चायुक्त के लिए एक कैम्पस टूर का भी आयोजन किया गया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय संबंध टीम ने उन्हें एक स्थायी परिसर बनाने के प्रयास के बारे में बताया गया। उन्होंने विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे बांग्लादेश के छात्रों और शोधार्थियों के साथ बातचीत करते हुए नालंदा की बहुआयामी समावेशी संस्कृति से प्रभावित हुए।

विवि कुलपति प्रो. सुनैना सिंह से वार्ता करते बांग्लादेश के उच्चायुक्त एचई मुहम्मद इमरान।

उच्चायुक्त ने विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य और शैक्षणिक गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय में उनका भ्रमण एक अद्वितीय अनुभव है।

कुलपति प्रो सुनैना सिंह ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा और संस्कृति के सशक्त प्रतीक-स्तम्भ के रूप में उभर रहा है। माननीय उच्चायुक्त की यह यात्रा नालंदा विश्वविद्यालय के विद्वत परंपरा के माध्यम से भारत और बांग्लादेश के बीच सांस्कृतिक साझेदारी और पारस्परिक संबंध को सुदृढ़ करेगी। नालंदा हमारे प्राचीन भारतीय, एशियाई ज्ञान और दर्शन का एक नवीन समन्वय है। कैंपस लगभग बनकर तैयार हो गया है।

नालंदा खंडहर देख हाई कमिश्नर हुए अभिभूत, कहा वाकई यह ज्ञान की धरती है

संसू, नालंदा: बांग्लादेश के भारत में तैनात हाई कमिश्नर एच ई मो. इमरान शुक्रवार को राजगीर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने प्राचीन नालंदा विवि के भग्नावशेषों को देखा। मालूम हो हाई कमिश्नर की यह दूसरी यात्रा है। इसके पहले निर्माणाधीन नालंदा अंतरराष्ट्रीय विवि की बैठक में वे भाग लेने को आए थे। उस समय पत्नी के साथ उन्होंने प्राचीन नालंदा विवि के भग्नावशेषों का दीदार किया था। शुक्रवार को उनके आने की सूचना पर नालंदा म्यूजियम के उपाधीक्षक पुरातत्वविद शंकर शर्मा मुस्तैद दिखे। उन्होंने प्राचीन विवि की स्थापना से लेकर उसके अंत तक की कहानी उन्हें बताई। हाई कमिश्नर ने कहा यह वाकई ज्ञान की धरती है। इस दौरान राजगीर के डीसीएलआर संजय कुमार, सिलाव सीओ शम्भु मंडल भी मौजूद रहे। शंकर शर्मा ने हर जानकारी से अवगत कराया।

TUESDAY, 15 FEBRUARY, 2022

The Telegraph

High Commissioner of Bangladesh Visited Nalanda University

Professor Sunaina Singh, Vice-Chancellor, Nalanda University with H.E. Muhammad Imran, High Commissioner of Bangladesh

High Commissioner for the People's Republic of Bangladesh, H.E. Muhammad Imran, visited Nalanda University on 11th February. Professor Sunaina Singh, Vice-Chancellor, Nalanda University, welcomed and discussed the progress of the University. Bangladesh is one of the participating member countries of Nalanda University. He commended the progress of Nalanda University that is remerging, under the compelling and dynamic leadership of Professor Sunaina Singh. The Vice chancellor arranged a meeting with the Bangladeshi students; the International Relations team of the University, a campus tour was also arranged, wherein the effort in creating a sustainable campus was explained to him.

Bangladesh being one of the valued stakeholders of the University. The visit of High Commissioner will strengthen Nalanda University's aim of "building bridges through the knowledge routes. Nalanda is strengthening the strong edifice of the civilizational ethos of learning and culture." says VC Prof Sunaina Singh. "This visit will also deepen the trusted and valuable partnership between India and Bangladesh in the domain of education." added Prof. Singh.

H.E. Muhammad Imran, High Commissioner with Students of Nalanda University from Bangladesh

The High Commissioner in his interaction with the students and researchers from Bangladesh at the University was much impressed by their experiences of being in Nalanda's cosmopolitan multicultural environment where students from 31 nationalities and languages study. Nalanda shows the way with an innovative approach, guided by our ancient Indian/Asian knowledge and wisdom. The campus is almost ready. Applauding Nalanda, The High Commissioner said that it is a unique experience to be at the University.

Nalanda University on the way to return the glory of Vishwaguru

पटना, बुधवार
2 मार्च, 2022

दैनिक जागरण

4 दैनिक जागरण पटना, 2 मार्च, 2022

विश्वगुरु का गौरव लौटाने की राह पर नालंदा विवि

20 कोर्स में 31 देशों के एक हजार विद्यार्थी नामांकित, दो से ढाई सौ फिजिकल क्लास कर रहे

विशाल आनंद ● बिहारशरीफ

नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय देश को फिर विश्व गुरु का गौरव लौटाने की राह पर है। राजगीर के 485 एकड़ लंबे-चौड़े परिसर में विवि की नई इमारतें 90 प्रतिशत बन गई हैं। यहां 31 देशों के करीब एक हजार छात्र नामांकित हैं। दो से ढाई सौ छात्र नियमित कक्षाएं कर रहे हैं।

विवि की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने बताया कि 2014 में तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने दो मास्टर प्रोग्राम के साथ क्लास शुरू कराई थी। 2016 में मास्टर लेवेल का एक और पाठ्यक्रम जोड़ा गया। 2017 के बाद मास्टर के तीन और कोर्स शुरू किए गए। आज कुल 20 कोर्स चल रहे हैं।

प्राचीन नालंदा महाविहार में 10 हजार छात्र थे अध्ययनरत

प्राचीन नालंदा महाविहार में देश-विदेश के 10 हजार विद्यार्थी अध्ययनरत थे। एक से बढ़कर एक विद्वान शिक्षक थे। पुस्तकालय समृद्ध था। आसपास के 100 गांवों के राजस्व के बूते महाविहार स्वावलंबी था। महाविहार परिसर में कड़ा अनुशासन था। आसपास तालाबों और पेड़-पौधों की श्रृंखला थी। वातावरण अध्ययन व शोध के अनुकूल शांत व सुरम्य था। निर्धारित समय पर अध्ययन व शोध कार्य पूरे किए जाते थे।

महाविहार में नामांकन के लिए सिर्फ विद्वता अनिवार्य थी। जाति, वर्ण व पहचान के मायने नहीं थे। नालंदा अंतरराष्ट्रीय विवि ठीक उसी नक्शेकदम पर आगे बढ़ रहा है।

नालंदा विश्वविद्यालय का नया भवन। ● जागरण

दो सौ से अधिक स्ट्रक्चर बनाए जा रहे विवि के नये परिसर में, नेट जीरो पर बन रहीं विश्वविद्यालय परिसर की सारी इमारतें

विवि के कुलपति प्रो सुनैना सिंह

कोरोना काल में भी विश्वविद्यालय ने दी समय पर डिग्रियां

कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने बताया कि कोरोना काल में भी शैक्षणिक कैलेंडर नियमित रहा। छात्रों को समय पर डिग्रियां मिलीं। पुस्तकालय को पुराने विवि से और ज्यादा समृद्ध बनाया जा रहा। भवन नेट जीरो कांसेप्ट पर बन रही है। परिसर इको फ्रेंडली है। 100 एकड़ में जलाशय बनाए गए हैं। अनुशासन सख्त है।

अगले साल तक बन जाएगा हास्टल, लैब व लाइब्रेरी

कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने कहा कि यहां मिशन मोड पर काम चल रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय में चार साल में बहुत कुछ हुआ। अभी कई चीजें बाकी है। अभी सारे छात्र विवि द्वारा किराये पर लिए गए होटलों में रह रहे हैं। अगले वर्ष तक हास्टल बन जाएगा, सारे विद्यार्थी कैंपस में रहने लगेंगे। लैब व लाइब्रेरी भी तैयार हो जाएगी। 2023 में कई नए पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। परिसर में एक अलग शहर ही बस जाएगा। किसी को परिसर से बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने में 17 देशों का मिला साथ

कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने कहा कि नालंदा शब्द ही विशिष्ट है। इसकी अलग महत्ता है। अब तक विवि निर्माण में 17 देशों का साथ मिला है। हमारे 80 प्रतिशत छात्र विदेश के हैं। जैसे प्राचीन नालंदा महाविहार में दूर देश के छात्र ज्ञान की खोज में आते थे। वैसे ही हम पुराने गौरव को हासिल करने को अग्रसर हैं। इसमें केंद्र व राज्य सरकार का भरपूर सहयोग है।

सितंबर 2014 में शुरू हुई थी पढ़ाई, 13 छात्र थे अध्ययनरत

विवि में पढ़ाई सितंबर 2014 में शुरू हुई थी। पहले सत्र में स्कूल आफ हिस्टोरिकल स्टडीज और स्कूल आफ इनवायरमेंट स्टडीज के लिए कुल 13 छात्रों का नामांकन हुआ था। इनमें एक भूटान व एक जापान का छात्र था। दूसरे साल में कुल 62 नामांकन हुए। इन छात्रों को पढ़ाने के लिए दस प्रोफेसरों की नियुक्ति की गई। 2016 में एक और विषय बुद्धिस्ट स्टडीज कंपेरेटिव रीलिजन एंड फिलासफी की पढ़ाई शुरू की गई। उस वक्त नालंदा विवि की कुलपति गोपा सभरवाल थीं।

दैनिक जागरण

4 दैनिक जागरण पटना, 28 मार्च, 2022

दुनिया का अद्वितीय विश्वविद्यालय है नालंदा यूनिवर्सिटी : डा. विनय

कुलपति ने आइसीसीआर अध्यक्ष डा. विनय सहस्रबुद्धे को मोमेंटो देकर किया स्वागत

संवाद सहयोगी, राजगीर (नालंदा) : नालंदा विश्वविद्यालय में रविवार को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आइसीसीआर) के अध्यक्ष डा. विनय सहस्रबुद्धे पहुंचे। उनका स्वागत कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने मोमेंटो देकर किया। कुलपति के निमंत्रण पर डॉ. विनय सहस्रबुद्धे विश्वविद्यालय आए थे। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित भी किया। विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण किया। कहा कि यह दुनिया का अद्वितीय विश्वविद्यालय है। डा. विनय को नेट जीरो परिसर बनाने के प्रयासों के बारे में बताया गया।

आइसीसीआर की पूर्व उपाध्यक्ष सह विवि की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने डा. सहस्रबुद्धे का स्वागत करते हुए उन्हें एक "सांस्कृतिक स्तंभ" और "नीति निर्धारक" बताया। कुलपति ने कहा कि डा. विनय ने आइसीसीआर के माध्यम से राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने संबोधन में कुलपति ने इतिहास के विस्तृत कालखंड में भारत को "विश्व गुरु" के रूप में भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने "भारतीय संस्कृति" को शांति, सद्भावना व बंधुत्व की संस्कृति के रूप में परिभाषित किया।

नालंदा विश्वविद्यालय में आइसीसीआर अध्यक्ष का स्वागत करती कुलपति प्रो. सुनैना सिंह।

बीते चार वर्षों में कुलपति ने विवि को पहुंचाया नये मुकाम पर

वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय में 31 देशों के विद्यार्थी नामांकित हैं। प्राचीन भारतीय/एशियाई ज्ञान-परंपरा से प्रेरणा लेकर नालंदा एक अभिनव दृष्टिकोण के साथ वर्तमान युवा पीढ़ी का समेकित विकास कर उन्हें भविष्य की ज्ञान परंपरा के नेतृत्व की ओर प्रेरित करने में प्रयासरत है। विगत चार वर्षों में कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के नेतृत्व में कई नवोन्मेषी शैक्षणिक संकल्पना साकार हो रही है। उन्होंने विवि को नये मुकाम पर पहुंचाया है। ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के नए अवतार की आधारशिला को कुलपति सुदृढ़ कर रही हैं।

नालंदा का उल्लेख करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय "भविष्य का परिसर" है। इसका अनुकरण न केवल भारत में अपितु दुनिया भर शैक्षणिक संस्थानों में होगा।

भारत की अपनी विशिष्ट पहचान: आइसीसीआर अध्यक्ष : अपने संबोधन में डा. विनय सहस्रबुद्धे ने नालंदा विश्वविद्यालय को "अद्वितीय विश्वविद्यालय" के रूप में विकसित करने के लिए कुलपति के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने आइसीसीआर की भूमिका का उल्लेख करते हुए वैश्विक-सांस्कृतिक संबंधों और 'भारतीयता के विचार' पर जोर दिया। कहा कि दुनिया में भारत की विशिष्ट पहचान है। दुनिया भर में अपने सांस्कृतिक सौहार्द के लिए इसे आदर प्राप्त है।

उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक विविधता, वैश्विक सद्भावना व अंत्योदय के विचार को भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों के रूप में उल्लेखित किया।

अल्पकालिक पाठ्यक्रमों को शुरू करने का दिया सुझाव

आइसीसीआर के सहयोग से डा. विनय ने विदेशों के छात्रों को लाभान्वित करने के लिए विवि में कुछ अल्पकालिक पाठ्यक्रमों को शुरू करने का सुझाव दिया। नालंदा में अध्ययनरत कई अंतरराष्ट्रीय छात्र जो आइसीसीआर के सहयोग से इस विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं, उन्होंने इस सहयोग के लिए डा. सहस्रबुद्धे को धन्यवाद दिया। डा. सहस्रबुद्धे ने भी घोषणा की कि आइसीसीआर स्थापना दिवस नौ अप्रैल के अवसर पर एक 'आइसीसीआर अल्युमिनाई' का उद्घाटन किया जाएगा। यह भारत में अध्ययन करने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को जोड़ने का काम करेगा।

THE HINDU e-Paper WEDNESDAY,

ICCR President visits Nalanda University

The President of Indian Council for Cultural Relations (ICCR), Dr. Vinay Sahasrabuddhe visited Nalanda University and interacted with Indian and international students. A campus tour was also arranged, wherein the effort in creating a Net-Zero sustainable campus was explained to him. Vice Chancellor, Prof. Sunaina Singh, who also happens to be the former Vice President of ICCR, welcomed the distinguished guest. In his address, Dr Vinay Sahasrabuddhe commended the Vice Chancellor's efforts to develop Nalanda University as a "unique university". He mentioned the role of ICCR and stressed upon the global cultural relations and 'idea of India'. He suggested for some short-term courses at the University in collaboration with ICCR to benefit the students from abroad. Dr. Sahasrabuddhe also announced that on ICCR Foundation Day (9th April) an 'ICCR Alumni Platform' shall be inaugurated to connect all the international students who have studied in India.

Nalanda University Completes its Seven Year of Teaching

दैनिक भास्कर पटना, बुधवार, 08 सितंबर, 2021

विरासत • गृद्धकूट पहाड़ पर पहुंची टीम ने पुरातात्विक और पर्यावरणीय महत्व को बारीकी से देखा

पहाड़ों के संरक्षण व विश्वशांति के लिए नालंदा विवि की पहल, छात्र कर रहे शोध

अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और छात्रों की 40 सदस्यीय टीम गठित की

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय ने राजगीर में विश्व शांति और पहाड़ों के संरक्षण की दिशा में एक बड़ी पहल की है। राजगीर की पहाड़ियों की सांस्कृतिक, पौराणिक, पुरातात्विक, पारिस्थितिक और पर्यावरणीय विरासत को सहेजने की दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए एक 40 सदस्यीय राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और छात्रों की टीम गठित की गई है। कुलपति प्रो.सुनैना सिंह की देखरेख में यह टीम गठित हुई है। प्रथम चरण के तहत इस टीम ने वैभारगिरी पहाड़ पहुंचकर उसके संरक्षण से जुड़े कई पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया था। इसकी स्टडी टीम बनेगी। इसी कड़ी को और आगे बढ़ाते हुए मंगलवार को विश्वविद्यालय की टीम गृद्धकूट पहाड़ पर भी पहुंची। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एन्वायरन्मेंट स्टडीज के डीन की अगुवाई में गृद्धकूट पहाड़ पर पहुंची इस टीम ने वहां पर पुरातात्विक और पर्यावरणीय महत्व से जुड़े तमाम पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया। फिलहाल टीम के सदस्य गृद्धकूट और उसके आस-पास के इलाकों से जुटाए गए आंकड़ों का विश्लेषण करने में जुटे हैं। इसके बाद ही विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

राजगीर में अध्ययन करते टीम के सदस्य।

लापरवाही आ रही सामने

शोधकर्ताओं के प्रारंभिक अध्ययन में मानवीय लापरवाही और उचित निगरानी का अभाव को पहाड़ों के संरक्षण की दिशा में सबसे बड़ी रुकावट माना गया है।टीम के सदस्यों ने बताया कि गृद्धकूट पहाड़ को पाली और संस्कृत बौद्ध साहित्य में सबसे शुभ स्थानों में से एक के रूप में वर्णित किया गया है। यहीं पर गौतम बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण महायान सूत्रों की शिक्षा दी थी। इन सूत्रों में से कुछ खास लोटस सूत्र (सद्धर्म-पुंडरिका सूत्र), सुरंगमा समाधि सूत्र, और हृदय सूत्र है। इन सभी सूत्रों का उद्देश्य विश्व शांति और मनुष्य के मंगल कामना से जुड़ा है। आज इसकी बेहतर देखरेख और संरक्षण की जरूरत है।ताकि विरासत अगली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहे।

कोविड पीड़ितों के लिए मंगलकामना

नालंदा विश्वविद्यालय की टीम ने विश्व भर में कोविड से पीड़ित लोगों की मंगल कामना और विश्व शांति के लिए इन्ही में से एक सूत्र हृद्य सूत्र का मंत्रोच्चारण उसी जगह पर किया, जहां पर कभी गौतम बुद्ध ने इस सूत्र की शिक्षा दी थी। इसके साथ ही विशेषज्ञों ने इस हृद्य सूत्र के महत्व के बारे में विस्तार से भी बताया। नालंदा विश्वविद्यालय की टीम के विशेषज्ञों ने इस अभियान के दौरान पहाड़ों के संरक्षण में हो रही लापरवाही पर चिंता जताई और उसके समाधान पर काफी चर्चा की।

दूसरी पहाड़ियों से भी जुटाए जाएंगे आंकड़े

टीम के सदस्यों ने बताया कि नालंदा विश्वविद्यालय पहाड़ियों के संरक्षण की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है और आने वाले दिनों में इसी तरह से विशेषज्ञों की टीम दूसरी पहाड़ियों पर भी पहुंच कर उसके संरक्षण से जुड़े तमाम आंकड़े जुटाएगी और उसका विश्लेषण करेगी। यह टीम न सिर्फ पहाड़ियों के संरक्षण बल्कि पहाड़ियों पर मौजूद पौराणिक विरासत और पुरातात्विक महत्व के बारे में भी लोगों को जागरूक करेगी और कुलपति के नेतृत्व में उनको संरक्षित करने की दिशा में गंभीर प्रयास करेगी। सदस्यों ने बताया कि राजगीर के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पौराणिक और पर्यावरणीय विरासत को संरक्षण की जरूरत है। इसको जिम्मेवारी सरकार के साथ साथ आमलोगों की भी है।

Nalanda University Conducts Heritage Walk for Conservation of Ancient Monuments

पटना, शनिवार
11.09.2021
प्रभात खबर
04

मुहिम. लोगों को प्राचीन विरासत के प्रति जागरूक किया जा रहा

विरासतों के संरक्षण के लिए नालंदा विवि का हैरिटेज वॉक

संवाददाता, राजगीर

मूर्त और अमूर्त विरासतों का संरक्षण आज वैश्विक मंच पर एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है. भगवान महावीर और गौतम बुद्ध की धरती बिहार अपनी विरासतों के लिए दुनिया भर में विख्यात है.

नालंदा विश्वविद्यालय अपने प्राचीन नालंदा की परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए 2014 से ही इन विरासतों को सहेजने में जुड़ा हुआ है. लोगों को प्राचीन विरासत के प्रति जागरुक करने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय ने एक बार फिर बिहार हैरिटेज श्रृंखला की शुरुआत की है. कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व में, नालंदा विश्वविद्यालय विरासत और ऐतिहासिक महत्व की पहाड़ियों के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है. इसके साथ ही संग्रहालय के दौरे और विरासत के संरक्षण के लिए लोगों को जागरुक की जा रही है. विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ हिस्टॉरिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज और स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एन्वायरन्मेंट स्टडीज इन कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है. 10 सितंबर 2021 को नालंदा विश्वविद्यालय ने विरासत के संरक्षण और लोगों को जागरुक करने के लिए हैरिटेज वॉक के तीसरे कार्यक्रम 'द राजगीर वॉक' का आयोजन किया. इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों और विश्वविद्यालय के कर्मचारियों समेत लगभग 45 सदस्यों ने भाग लिया. करीब छह किमी. लंबी यह हेरिटेज वॉक ब्रह्मकुंड से शुरू हुई. इस दौरान टीम ने जरादेवी मंदिर, मनियार मठ, सोन भंडार गुफा और जरासंध का अखाड़ा जैसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थलों का दौरा किया. इस वॉक का समापन मखदूमकुंड पहुंच कर हुआ. राजीगर वॉक के दौरान टीम के सदस्यों को इन स्थलों के ऐतिहासिक, पुरातात्विक, दार्शनिक और पारिस्थितिक महत्व के बारे में जानकारी दी गई. इसके साथ ही उन स्थलों की पवित्रता और पर्यावरण के बीच के सामंजस्य को लेकर भी चर्चा हुई. टीम ने स्थानीय लोगों के साथ भी सार्थक चर्चा करके विरासतों को संरक्षित करने के लिए जागरुक करने की पहल की.

राजगीर वॉक में शामिल लोग

नालंदा विश्वविद्यालय की टीम ने इससे पहले 28 अगस्त और चार सितंबर को राजगीर में वैभारगिरी और गृद्धकूट पहाड़ियों पर पहुंच कर उसके संरक्षण के लिए अभियान की शुरुआत की थी. नालंदा विश्वविद्यालय पहाड़ियों और प्राचीन विरासतों को संरक्षित करने के लिए आगे भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करेगा. इन कार्यक्रमों में शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और स्थानीय लोगों को जोड़ा जायेगा.

Nalanda University Starts Masters Program in Hindu Studies

दैनिक भास्कर पटना, शुक्रवार, 24 दिसंबर, 2021

नालन्दा विश्वविद्यालय में नए वर्ष से होगी हिन्दू स्टडीज (सनातन) स्नातकोत्तर प्रोग्राम की शुरुआत, 17 जनवरी से शुरू होंगी कक्षाएं

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय में नए साल से हिन्दू स्टडीज (सनातन) प्रोग्राम की शुरुआत होगी। इसके लिए एमए हिन्दू स्टडीज (सनातन) के प्रथम बैच के लिए एडमिशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। विश्वविद्यालय परिसर में 17 जनवरी 2022से इस कोर्स की पढ़ाई शुरू हो जाएगी। यह दो साल का फुल-टाइम प्रोग्राम है और इसकी पढ़ाई ऑफ लाइन तथा ऑन लाइन दोनों माध्यमों से की जा सकेगी। पढ़ाई शुरू करने से सम्बंधित सारी तैयारी पूरी कर ली गई है। नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने कहा कि हम भारतीय बौद्धिक परंपराओं के लिए एक संसाधन केंद्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं। नालंदा अपनी विद्वतापूर्ण परंपरा के लिए जाना जाता था। वर्तमान नालंदा भी उत्कृष्टता के लिए एक केंद्र बनाने की ओर तेजी अग्रसर है। हिंदू अध्ययन में एमए प्रोग्राम का उद्देश्य छात्रों को प्राच्य सभ्यता और संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतो से अवगत कराना है। इस कोर्स के माध्यम से छात्र भारत की समग्र विचार-परंपरा का विश्लेषणात्मक विधियों द्वारा एक तार्किक समझ विकसित करेंगे। उन्होंने कहा की 'हिंदू स्टडीज (सनातन)'

स्नातकोत्तर प्रोग्राम के माध्यम से छात्रों को भारतीय संस्कृति के शाश्वत सिद्धांत और जीवन मूल्य के साथ विभिन्न प्रकार की ज्ञान परंपराओं और प्रथाओं के समग्र अध्ययन और अनुसंधान का अवसर प्राप्त होगा। दो साल के इस प्रोग्राम का उद्देश्य नई पीढ़ी को प्राचीन परंपरा के प्राचीन ज्ञान स्रोतों के साथ-साथ वर्तमान संदर्भ में उनके महत्वों से भी अवगत कराना है। इस प्रोग्राम के पाठ्यक्रम को खास तौर से भारत की समृद्ध अध्यात्मिक और बौद्धिक विरासत को समझने के लिए तैयार किया गया है।

बौद्धिक विरासत

कोर्स में शामिल हैं ये विषय

उन्होंने बताया कि इस कोर्स के पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, इतिहास-पुराण रामायण और महाभारत के साथ-साथ नाट्यशास्त्र और अर्थशास्त्र को भी जगह दी गई है। इसके पाठ्यक्रम के माध्यम से नई पीढ़ी, सनातन परंपराओं को विस्तार पूर्वक जान पाएगी। उन्होंने बताया कि पढाई शुरू करने से सम्बंधित सारी तैयारी पूरी है। नामांकन की प्रक्रिया पूरी होते ही पढ़ाई शुरू कर दी जाएगी।

4 | दैनिक जागरण पटना, 24 दिसंबर, 2021

विवि के पाठ्यक्रम में शामिल होंगी वेद पुराण, रामायण व महाभारत की गाथाएं

नालंदा विवि में हिंदू स्टडीज (सनातन) स्नातकोत्तर प्रोग्राम की होगी शुरुआत

संवाद सहयोगी, राजगीर : अब नालन्दा विश्वविद्यालय में वेद, उपनिषद, इतिहास-पुराण, रामायण और महाभारत को विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में करेंगे बखान। नालंदा विवि द्वारा पाठ्यक्रम में एक नई पहल करते हुए नव वर्ष में हिन्दू स्टडीज (सनातन) स्नातकोत्तर प्रोग्राम की शुरुआत करने जा रही है। जिसमें विदेशी विद्यार्थी भी अब भारतीय सभ्यता संस्कृति के वेद, उपनिषद, इतिहास पुराण इत्यादि पौराणिक ग्रंथों से रूबरू तो होंगे हीं। इसके अलावे रामायण और महाभारत की गाथाओं का अध्ययन भी करेंगे। हिन्दू स्टडीज सनातन की पढ़ाई को लेकर पहले से तैयारियां चल रही थी। इसके लिए एम.ए. हिन्दु स्टडीज (सनातन) के प्रथम बैच के एडमिशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। विश्वविद्यालय परिसर में 17 जनवरी 2020 से इस कोर्स की विधिवत पढ़ाई शुरू हो जाएगी। नालन्दा विश्वविद्यालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से यह कोर्स दो साल का होगा। इसकी पढ़ाई आफ लाइन तथा आन् लाइन दोनों माध्यमों से की जा सकेगी। इस कोर्स में एडमिशन के लिए इच्छुक छात्र नामांकन प्रक्रिया की पूरी जानकारी नालंदा यूनिवर्सिटी की वेबसाइट के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के अनुसार हम भारतीय बौद्धिक परंपराओं के लिए एक संसाधन केंद्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं। नालंदा अपनी विद्वतापूर्ण परंपरा के लिए जाना जाता था।वर्तमान नालंदा भी उत्कृष्टता के लिए एक केंद्र बनाने की ओर अग्रसर है। हिंदू अध्ययन में एम.ए. प्रोग्राम का उद्देश्य छात्रों को प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराना है। इस कोर्स के माध्यम से छात्र भारत की समग्र विचार-परंपरा का विश्लेषणात्मक विधियों द्वारा एक तार्किक समझ विकसित करेंगे।

नालंदा विवि का प्रशासनिक भवन • जागरण

हिंदू स्टडीज (सनातन) स्नातकोत्तर प्रोग्राम के माध्यम से छात्रों को भारतीय संस्कृति के शाश्वत सिद्धांत, जीवन मूल्य के साथ विभिन्न प्रकार की ज्ञान परंपराओं, प्रथाओं के समग्र अध्ययन और अनुसंधान का अवसर प्राप्त होगा। दो साल के इस प्रोग्राम का उद्देश्य नई पीढ़ी को प्राचीन परंपरा के प्राचीन ज्ञान स्रोतों के साथ-साथ वर्तमान संदर्भ में उनके महत्वों से भी अवगत कराना है । इस प्रोग्राम के पाठ्यक्रम को खास तौर से भारत की समृद्ध अध्यात्मिक और बौद्धिक विरासत को समझने के लिए तैयार किया गया है । इस कोर्स के पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, इतिहास-पुराण रामायण और महाभारत के साथ-साथ नाट्यशास्त्र और अर्थशास्त्र को भी जगह दी गई है । इसके पाठ्यक्रम के माध्यम से नई पीढ़ी, सनातन परंपराओं को विस्तार पूर्वक जान पाएगी।

नामांकन की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन के माध्यम से ही होगी। मेधा सूची में वरियता के आधार पर योग्य अभ्यार्थियों का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये इंटरव्यू लिया जाएगा । इसी इंटरव्यू के आधार पर सफल अभ्यार्थियों का चयन किया जाएगा। कोर्स शुरू होने की तिथि 17 जनवरी 2022 निर्धारित की गई है।

अभ्यार्थियों के लिए स्नातक स्तर पर कम से कम 55 फीसदी अंक या 4 जीपीए में से कम से कम 2.2 जीपीए को न्यूनतम योग्यता निर्धारित किया गया है। इस कोर्स की पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में होगी। इसलिए छात्रों की अंग्रेजी में दक्षता अनिवार्य है। नॉन-इंग्लिश स्पीकिंग देशों के छात्रों को अंग्रेजी में दक्षता का प्रमाण देना होगा। इसके लिए टीओईएफएल, आईईएलटीएस, टीओईआईसी, पीटीई एवं एसटीईपी स्कोर भी स्वीकार किये जाएंगे।

73rd Republic Day Celebrations at Nalanda University

प्रभात खबर 28 जनवरी 2022

झंडा ऊंचा रहे हमारा से गूंजा क्षेत्र

कार्यक्रम में नालंदा विवि की वीसी प्रो सुनैना सिंह.

राजगीर (नालंदा). स्थानीय स्तर पर सरकारी, गैर सरकारी कार्यालयों, विश्वविद्यालयों, स्कूल - कॉलेजों के अलावे चौक चौराहों पर भी गणतंत्र दिवस के मौके पर राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया गया. अनुमंडल में एसडीओ अनिता सिंहा द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया. नालंदा विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो सुनैना सिंह, नव नालंदा महाविहार में कुलपति प्रो वैद्यनाथ लाभ, आयुध निर्माणी में जी एम मनोज श्रीधर बाघ, बिहार पुलिस अकादमी में निदेशक भृगु श्रीनिवासन, सीआरपीएफ ट्रेनिंग सेंटर में प्राचार्य डीआईजी संजय कुमार, जवाहर नवोदय विद्यालय में प्राचार्य आशुतोष कुमार, निभा फार्मेसी कॉलेज में सेक्रेटरी धर्मेंद्र कुमार, आरडीएच प्लस टू स्कूल में शिशुपाल कुमार, ऑल सेंट्स स्कूल में निदेशक राजेश नंदन, नालंदा पब्लिक स्कूल में प्राचार्य सुनील कुमार, मेयार पैक्स में अध्यक्ष अरुण कुमार, चंडी मौ के शुंगकालीन पुष्कर्णी सरोवर पर प्रो शिवेंद्र नारायण सिंह, द्वारा तिरंगा फहराया गया. थाना में थानाध्यक्ष दीपक कुमार सहित नगर परिषद में कार्यप्रालक पदाधिकारी एवं अन्य कार्यालयों में भी ध्वजारोहण किया गया. आयुध निर्माणी नालंदा में जीएम मनोज श्रीधर वाघ ने झंडोतोलन किया. इस अवसर पर निर्माणी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों को जीएम द्वारा पुरस्कृत किया गया. उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव को रेखांकित करते हुए राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने का आह्वान किया. अंकुर विद्या मंदिर में महिला कल्याण समिति की अध्यक्षा मनीषा वाघ द्वारा ध्वजारोहन किया गया.

THE HINDU
2nd Feb 2022

73rd Republic Day celebrated at Nalanda University

India's 73rd Republic Day was celebrated at Nalanda University. At the newly built Nalanda University campus in Rajgir, Republic Day was celebrated with patriotic songs along with showcasing diverse cultural performances from various countries. Vice Chancellor Prof. Sunaina Singh hoisted the tricolour and recalled the journey of making of the Indian constitution. In her message, Prof. Singh emphasised the importance of holistic education. Recalling the ancient Nalanda that stands as a symbol of integrative knowledge systems, she added that the re-emerging Nalanda is a confluence of cultures from various countries and represents India's ethos and wisdom.

NU Students from 32 Countries Celebrated "Azadi Ka Amrit Mahotsav"

THE HINDU

Mar 02, 2022

Azadi Ka Amrit Mahotsav celebrated at Nalanda University

Students from 32 countries studying at Nalanda University performed at the first cultural event under the "Azadi Ka Amrit Mahotsav" series celebrations. The cultural performances by students reflected glimpses of the vibrant culture of India and the progress that country has made in the last 75 years since its independence. Bharatanatyam artist, Ms. Sudipa Ghosh and her team presented enchanting dance recitals. This event was attended by distinguished guests from different institutions, organisations and government. Addressing the gathering, Hon'ble Vice-Chancellor Prof. Sunaina Singh said, "The commemoration of India's freedom is a celebration of over five thousand years of unbroken knowledge tradition that gives India an identity of its own. Today, the world looks upon us, where the core spiritual ethos of India can guide humanity for universal welfare, peace, and harmony".

दैनिक भास्कर

पटना, शुक्रवार, 25 फरवरी, 2022

नालंदा विश्वविद्यालय में होंगे कई कार्यक्रम

सिटी रिपोर्टर। राजगीर

आजादी का अमृत महोत्सव समारोह श्रृंखला के तहत नालंदा विश्वविद्यालय में कई कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। श्रृंखला का पहला कार्यक्रम दिनांक 25 फरवरी को होगा। आयोजित किया जाएगा। इन आयोजनों के माध्यम से छात्र भारत के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों से रूबरू होंगे। समारोह का आयोजन नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित सभागार में होगा। शुक्रवार को कार्यक्रम में भरतनाट्यम की विख्यात नृत्यांगना सुदीपा घोष अपना नृत्य प्रस्तुत करेंगी। छात्रों द्वारा भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाएगी। समारोह में नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले 32 देशों के छात्र भाग लेंगी। कुलपति प्रो सुनैना सिंह ने बताया कि इस उत्सव के माध्यम से हम भारत की उस गौरवशाली ज्ञान-परंपरा को पुनर्स्मरण करते हैं जो कई सहस्राब्दियों से इस देश की विरासत हैं। यह उत्सव इस बात पर भी विचार करने का एक अवसर है कि हम एक बहुध्रुवीय विश्व में कैसे सामंजस्यपूर्वक रह सकते हैं। उन्होंने कहा की नालंदा विश्वविद्यालय का उद्देश्य वर्तमान युवा पीढ़ी का समेकित विकास करना और उन्हें भविष्य के ज्ञान परंपरा के नेतृत्व की ओर प्रेरित करना है। नालंदा विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों और अनुसंधान केंद्रों में मास्टर्स प्रोग्राम, ग्लोबल डॉक्टरेट के साथ साथ विभिन्न अल्पकालिक कार्यक्रमों का समन्वय करते हुए एक नवोन्मेषी शैक्षणिक संकल्पना साकार हो रही है।

आज

पटना

शुक्रवार, २५ फरवरी, २०२२

3

नालंदा विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव समारोह आज

बिहारशरीफ। 'आजादी का अमृत महोत्सव' समारोह श्रृंखला के तहत नालंदा विश्वविद्यालय में कई कार्यक्रमों के आयोजन करने की योजना है। श्रृंखला का पहला कार्यक्रम शुक्रवार को आयोजित किया जाएगा। "आजादी का अमृत महोत्सव" भारत सरकार द्वारा देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक मत्त्वपूर्ण पहल है।

इस उत्सव का उद्देश्य नालंदा के छात्रों में भारत के गौरवशाली अतीत और देश में हुई प्रगति के 75 साल के प्रति जागरूकता लाना है। नालंदा के छात्र इन आयोजनों के माध्यम से को भारत के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों से रूबरू होंगे। समारोह का आयोजन नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित सभागार में होगा। कल के इस कार्यक्रम में भरतनाट्यम की विख्यात नृत्यांगना सुदीपा घोष अपने नृत्य की प्रस्तुती देंगी। इसके बाद छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुती होगी। इस समारोह में नालंदा विश्व. विद्यालय में पढ़ने वाले 32 देशों के छात्र भाग लेंगे।

आयोजन के महत्व को रेखांकित करते हुए माननीय कुलपति प्रो सुनैना सिंह ने कहा, इस उत्सव के माध्यम से हम भारत की उस गौरवशाली ज्ञान-परंपरा को पुनर्स्मरण करते हैं जो कई सहस्राब्दियों से इस देश की विरासत हैं। यह उत्सव इस बात पर भी विचार करने का एक अवसर है कि हम एक बहुध्रुवीय विश्व में कैसे सामंजस्यपूर्वक रह सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय का एक उद्देश्य वर्तमान युवा पीढ़ी का समेकित विकास करना और उन्हें भविष्य के ज्ञान परंपरा के नेतृत्व की ओर प्रेरित करना है। कुल. पति प्रो. सुनैना सिंह के निर्देशन में नालंदा विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों और अनुसंधान केंद्रों में मास्टर्स प्रोग्राम, ग्लोबल डॉक्टरेट के साथ साथ विभिन्न अल्पकालिक कार्यक्रमों का समन्वय करते हुए एक नवोन्मेषी शैक्षणिक संकल्पना साकार हो रही है। विगत वर्षों में हुए उत्तरा. त्तर विकास से ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के इस नए अवतार की आधारशिला सुदृढ़ हुई है।

यह विश्वविद्यालय दुनिया के सबसे बड़े नेट जीरो परिसरों में से एक के रूप में उभर रहा है।

Dr. Vinay Sahasrabuddhe President of ICCR Appreciating the Academic Framework

राष्ट्रीय सहारा
11 सहारा बिहार
www.rashtriyasahara.com

भारत में अध्ययन करने वाले अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी समुदाय को जोड़ेगा नालंदा विश्वविद्यालय : डॉ. सहस्रबुद्धे

सांस्कृतिक सौहार्द के लिए भारत की दुनिया में ख्याति

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
राजगीर (नालंदा)।

नालंदा विश्वविद्यालय ने आज भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे का भव्य स्वागत किया। कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के निमंत्रण पर आज डॉ. विनय सहस्रबुद्धे विश्वविद्यालय आए थे। डॉ. सहस्रबुद्धे ने नालंदा समुदाय एवं भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने नालंदा के परिसर का भ्रमण भी किया। जिसमें उन्हें नेट-जीरो योग्य परिसर बनाने के प्रयास के बारे में बताया गया।

कुलपति प्रो. सुनैना सिंह, जो आईसीसीआर की पूर्व उपाध्यक्ष भी है, ने डॉ. सहस्रबुद्धे का स्वागत करते हुए उन्हें एक सांस्कृतिक स्तम्भ और नीति निर्धारक बताया। जिन्होंने आईसीसीआर के माध्यम से राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने संबोधन में प्रो. सिंह ने इतिहास के विस्तृत कालखंड में भारत की विश्व गुरु के रूप में भूमिका पर प्रकाश डाला।

डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने नालंदा विश्वविद्यालय को अद्वितीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने के लिए कुलपति के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा, भारत की विशिष्ट पहचान है और दुनिया भर में अपने सांस्कृतिक सौहार्द के लिए इसे आदर प्राप्त है। उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक विविधता, वैश्विक सद्भावना और अंत्योदय के विचार को भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों के रूप में उल्लेखित किया। उन्होंने आईसीसीआर के सहयोग से विदेशों से छात्रों को लाभान्वित करने के लिए विश्वविद्यालय में कुछ अल्पकालिक पाठ्यक्रमों को शुरू करने का सुझाव दिया। नालंदा में अध्ययनरत कई अंतरराष्ट्रीय छात्र जो आईसीसीआर के सहयोग से इस विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे है, उन्होंने आईसीसीआर के सहयोग के लिए डॉ. सहस्रबुद्धे को धन्यवाद दिया।

आईसीसीआर के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे को सम्मानित करतीं नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे का नालन्दा विश्वविद्यालय में हुआ भव्य स्वागत

डॉ. सहस्रबुद्धे ने यह भी घोषणा की कि आईसीसीआर स्थापना दिवस 9 अप्रैल, के अवसर पर आईसीसीआर अल्यूमनाई का उद्घाटन किया जाएगा, जो भारत में अध्ययन करने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी-समुदाय को जोड़ने का काम करेगा। वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय में 31 देशों के विद्यार्थी नामांकित है। प्राचीन भारतीय एशियाई ज्ञान-परंपरा से प्रेरणा ले कर नालंदा एक अभिनव दृष्टिकोण के साथ वर्तमान युवा पीढ़ी का समेकित विकास कर उन्हें भविष्य के ज्ञान परंपरा के नेतृत्व की ओर प्रेरित करने में प्रयासरत है। विगत चार वर्षो मे कुलपति प्रो. सुनैना सिंह के नेतृत्व में कई नवोन्मेषी शैक्षणिक संकल्पना साकार हो रही है, जो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के इस नए अवतार की आधारशिला को सुदृढ़ कर रही है।

, 29 मार्च, 2022
बिहारशरीफ आसपास जागरण

डा. सहस्त्रबुद्धे ने नालंदा विवि की पढ़ाई की नई तकनीक जानी

जासं, बिहारशरीफ: नालंदा विश्वविद्यालय में रविवार को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आइसीसीआर) के अध्यक्ष डा. विनय सहस्त्रबुद्धे पहुंचे थे। भ्रमण के दौरान वे विवि के क्लासरूम में बैठ गए। पढ़ाई की नई तकनीक को देखा। वहां बैठकर उन्होंने पढ़ने की इच्छा जताई। क्लास रूम में दस मिनट तक रहे डा. सहस्त्रबुद्धे को वीसी प्रो. सुनैना सिंह व कालेज के प्रोफेसरों ने पाठ्यक्रम की जानकारियां दी। उन्होंने बताया कि आज के समय में माडर्न टेक्नालोजी से यहां किस तरीके से पढ़ाई हो रही है। वीसी ने बताया कि वैदिक व शास्त्रों का भी ज्ञान बच्चों को दिया जा रहा है। इंफ्रास्ट्रक्चर देखकर कहा कि वास्तव में इसे शानदार बनाया गया है।

10 मिनट तक क्लासरूम में बैठे रहे आइसीसीआर के अध्यक्ष पाठ्यक्रमों के बारे में जाना

31 देशों के बच्चे विवि में कर रहे अभी पढ़ाई, एल्युमिनाई से जुड़ने का डा. विनय ने किया आग्रह

बाहर गर्मी व बिल्डिंग में ठंडक महसूस कर हो गए आश्चर्यचकित: राजगीर में रविवार को 37 डिग्री तापमान था। सहस्त्रबुद्धे जैसे ही क्लासरूम में गए उन्हें ठंडक महसूस हुई। वे आश्चर्यचकित हो गए। पूछा कि बाहर इतनी गर्मी होने के बाद भी बिल्डिंग में ठंडक क्यों है। विवि के इंजीनियर मनोज कुमार ने बताया कि बिल्डिंग निर्माण करने में जीरो थर्मल टेक्नोलाजी का उपयोग किया गया है। यह तकनीक बिल्डिंग के तापमान को एक समान बनाए रखने में मदद करता है। उन्होंने ईंटों को छूकर देखा। पूछा कि बिना प्लास्टर के ईंट क्यों दिख रहीं हैं। तब बताया गया कि वह पुरानी थीम पर बन रही बिल्डिंग है। यहां ईंटों को पकाया नहीं गया है। यहां अनब्रंट क्ले ब्रीक्स का इस्तेमाल हुआ है।

प्रो. सुनैना सिंह नालंदा विवि की कुलपति।

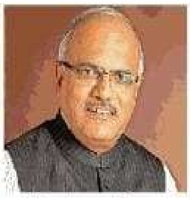

आइसीसीआर के अध्यक्ष डा. विनय सहस्त्रबुद्धे।

खंडहर में तब्दील पुराने भवन को भी देखा : नालंदा विश्वविद्यालय के नये भवन को देखने से पहले पुराने का भी अवलोकन आइसीसीआर के अध्यक्ष ने किया। नये परिसर में पहुंचने के बाद उन्होंने वीसी प्रो. सुनैना से पूछा कि यह आइडिया कैसे आया। उन्होंने बताया कि पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम का सोच था। उनके सोच को आगे बढ़ाने के लिए 2017 से काम कर रहीं हैं। वीसी ने बताया कि उसके पहले यहां एक प्रतिशत भी काम नहीं हुआ था।

दूसरे विवि के बच्चों को भी यहां आकर देखने की जरूरत : डा. विनय ने कहा कि मैं पार्लियामेंट से और लोगों को भी यहां लाऊंगा। दूसरे विवि के बच्चों को भी यहां आने का आग्रह करूंगा। ताकि वे देख सकें कि भविष्य में छात्रों की संख्या के दबाव के अनुसार यहां कैसे काम हुआ है। उन्होंने कहा कि हम कह सकते हैं कि गौरवशाली नालंदा विवि खत्म नहीं हुआ, जीवंत हो उठा है। इसके बाद उन्होंने आडिटोरियम में बच्चों को संबोधित भी किया।

क्या है नेट जीरो थीम : नेट जीरो का मतलब ग्रीन कैंपस है। यहां गैसों का उत्सर्जन शून्य करना नहीं है, बल्कि उन्हें दूसरे कामों से बैलेंस करना होता है। यूं कहें कि एक ऐसी अर्थव्यवस्था तैयार करना, जिसमें कार्बन उत्सर्जन करने वाली चीजों का इस्तेमाल बहुत कम हो।

भारत के नाम को शिक्षा जगत में ले जाएगा शिखर पर

आज के समय में नेट जीरो की थीम पर विश्व का यह इकलौता विवि परिसर है। आइसीसीआर के अध्यक्ष ने कहा कि यह भारत के नाम को शिक्षा जगत में शिखर पर ले जाएगा। उन्होंने कहा, मैं अभिभूत हूं की यह फिर से जीवंत हो उठा है और यहां 31 देशों के बच्चे पढ़ रहे हैं। विदेश से आकर यहां पढ़ रहे बच्चों को फारेन स्टूडेंट के एल्युम्निाई से भी जुड़ने का आग्रह किया। नेट जीरो थीम पर बने स्ट्रक्चर को देखकर बड़े प्रभावित हुए। कुलपति प्रो. सुनैना समेत पूरी टीम को बधाई दी।

Nālandā UNIVERSITY
नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय

"राष्ट्रीय महत्ता" का एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
(विदेश मंत्रालय के साथ सम्बद्ध)

सम्पर्क स्थल

नालंदा वि वविद्यालय, मुख्य परिसर

राजगीर, जिला नालंदा बिहार- 803116, भारत

https://nalandauniv.edu.in